प्राचीन भारतीय इतिहास

भारतीय इतिहास के प्राचीन काल को सामान्यतया तीन कालखण्डों में विभाजित किया जाता है—(1) प्रागैतिहासिक काल, (2) आद्य ऐतिहासिक काल एवं (3) पूर्ण ऐतिहासिक काल। प्रागैतिहासिक काल के अंतर्गत सामान्यतया पाषाण संस्कृतियों को रखा जाता है एवं आद्य ऐतिहासिक काल के अंतर्गत सैंधव सभ्यता (हड़प्पा सभ्यता) और ऋग्वैदिक सभ्यता को रखा जाता है। पूर्ण ऐतिहासिक काल का आरंभ मौर्य काल से माना जाता है।

प्राचीन भारत के इतिहास को अध्ययन की दृष्टि से निम्न भागों में बांटा गया है—✸ पुरातत्व और प्रागैतिहासिक काल ✸ सिन्धु घाटी की सभ्यता ✸ वैदिक संस्कृति ✸ संगम काल ✸ प्राचीन भारतीय धर्म एवं दर्शन ✸ मौर्य साम्राज्य ✸ मौर्योत्तर काल (शुंग वंश, भारत पर विदेशी आक्रमण, पहलव वंश एवं कुषाण वंश) ✸ गुप्तकाल ✸ गुप्तोत्तर काल ✸ राजपूत काल (भारतीय उपमहाद्वीप पर अरबों का आक्रमण और भारत पर तुर्क आक्रमण)।

1. पुरातत्व और प्रागैतिहासिक काल

प्रागैतिहासिक काल (Pre-History Age) को मानव सभ्यता की दृष्टि से सबसे आरंभिक काल माना जाता है। मानव जाति के इस आरंभिक काल के इतिहास का अध्ययन करने हेतु उपलब्ध सामग्री के आधार पर तीन मुख्य भागों—(1) पुरा पाषाण काल (Palaeolithic Age), (2) मध्य पाषाण काल (Mesolithic Age) तथा (3) नव पाषाण काल (Neolithic Age) में विभाजित किया गया है। नव पाषाण काल के अंतिम चरण में धातुओं (मानव द्वारा सर्वप्रथम जिस धातु का प्रयोग किया गया वह तांबा ही था) का प्रयोग प्रारंभ हो गया, जिस समय मानव ने पत्थर के साथ-साथ तांबे के औजारों का उपयोग प्रारंभ किया, इसको ताम्र-प्रस्तर (''कैल्कोलिथिक'' अर्थात् पत्थर व तांबे के उपयोग वाली अवस्था) काल कहते हैं।

पिछले 15 वर्षों के SSC के प्रश्न पत्रों में 'पुरातत्व और प्रागैतिहासिक काल''

- ''कैलिग्राफी'' किसे कहते हैं? —**सुलेखन को (स्टेनोग्राफर (ग्रेड-सी) परीक्षा, 1999)**
- पुरालेख विद्या का क्या अभिप्राय है? —**शिलालेख का अध्ययन (C.P.O. परीक्षा, 2003)**
- प्रस्तर युग के लोगों के पास कौन सा घरेलू पशु थे? —**कुत्ता (स्टेनोग्राफर (ग्रेड-सी) परीक्षा, 1998)**
- मानव अस्तित्व का प्रारम्भिक काल क्या था?—**पुरा पाषाण काल (मल्टी टास्किंग स्टाफ (MTS) परीक्षा, 2013)**

विशिष्ट तथ्य ''प्रागैतिहासिक काल''

- प्रागैतिहासिक काल की सभ्यता का उदभव एवं विकास ''प्रतिनूतन काल'' या ''प्लाइस्टोसीन एज'' में हुआ।
- पुरातत्व अवशेषों के तिथि निर्धारण तथा सभ्यता के विविध पहलुओं का अध्ययन करने विविध विद्वानों द्वारा कई विधियां अपनाई गई हैं, कुछ विशेष एवं वैज्ञानिक विधियों का वर्णन इस प्रकार है—
  1. **फ्लोरीन परीक्षण विधि** के द्वारा तिथि का निर्धारण किया जाता है। इस विधि में जो हड्डी या दांत जितना पुराना होगा उसमें उतना ही अधिक फ्लोरीन की मात्रा होगी। इसका प्रयोग सर्वप्रथम **ओकले** ने किया।
  2. **वृक्ष वलय निर्धारण विधि** की खोज **डगलस** ने किया। इस विधि के अंतर्गत वलयों की संख्या के आधार पर 3000 वर्ष पहले तक के कालक्रम को ज्ञात किया जाता है।
  3. **रेडियो कार्बन विधि** की खोज लिब्बी महोदय ने किया। इसके अंतर्गत C14 के द्वारा पदार्थ की मात्रा के विघटन के आधार पर ज्ञात किया जाता है। अगर पदार्थ 50 प्रतिशत विघटित हुआ है, तो इतने विघटन में 5568 वर्ष का समय लगेगा।
- मुद्राशास्त्र को न्यूमिस्मेटिक्स कहते हैं, इसके अंतर्गत सिक्कों का वर्णन करते हैं।
- पुरालेखशास्त्र को एपिग्राफी कहते हैं, इसके अंतर्गत अभिलेखों (शिलालेख) का अध्ययन करते हैं।
- पुरालिपिशास्त्र को पेलियग्राफी कहते हैं इसके अंतर्गत प्राचीन लिपि का अध्ययन किया जाता है।
- सुलेखन को कैलिग्राफी कहते हैं। सुंदर हस्तलेख (सुलेखन) के लिए मुहम्मद बिन तुगलक इतिहास में प्रसिद्ध है।
- ◆ निम्न पुरापाषाण काल के प्रमुख स्थल—कश्मीर, बेलन घाटी के अन्तर्गत मिर्जापुर (यू.पी.), भीमबेटका (मध्य प्रदेश)।
- ◆ भारत में पाषाण कालीन सभ्यता का अनुसंधान सर्वप्रथम 1863 ई. में प्रारंभ हुआ।
- ◆ दक्षिण भारत से हैण्डएक्स परम्परा के उपकरण सर्वप्रथम मद्रास के पल्लावरम् नामक स्थान से राबर्ट ब्रुस फुट ने 1863 में प्राप्त किया।
- ◆ मध्यपुरा पाषाण काल में पत्थर के गोले से वस्तुओं का निर्माण होने लगा।
- ◆ मध्यपुरा पाषाण काल के मुख्य स्थल—मिर्जापुर (यू.पी.), नेवासा (महाराष्ट्र), ओडिशा आदि।
- ◆ मध्यपुरा पाषाण काल को 'फलक संस्कृति' (Flake Culture) भी कहा जाता है।

- उच्च पुरा पाषाण काल सबसे पुरानी चित्रकारी के प्रमाण (भीमबेटका) इसी काल के हैं। पत्थर के ब्लेडों से उपकरण बनने लगे।
- इस काल के प्रमुख स्थल हैं—बीजापुर, इनाम गाँव (महाराष्ट्र), बेलन घाटी (उत्तर प्रदेश)।
- आधुनिक प्रकार के मानव का विकास इसी काल में हुआ।
- मध्य पाषाण काल प्रमुख स्थल हैं—लंघनाज (गुजरात), आदमगढ़ (म. प्र.), बागोर (राजस्थान) आदि।
- मध्य पाषाण काल आदमगढ़ व बागोर से पशुपालन के प्राचीनतम साक्ष्य प्राप्त हुए हैं।
- नव पाषाणकाल स्थल 'कोल्डी हवा (उ. प्र.) से विश्व में चावल उत्पादन का प्राचीनतम साक्ष्य प्राप्त (6000 ई. पू.) हुआ है।
- कृषि का सर्वप्रथम साक्ष्य मेहरगढ़ से प्राप्त होता है।

महत्त्वपूर्ण प्रश्न-उत्तर और तथ्य

- भारतीय उपमहाद्वीप में कृषि के प्राचीनतम साक्ष्य प्राप्त हुए हैं **—मेहरगढ़ से (5000 ई. पू.)**
- किस मध्य पाषाणिक स्थल से पशुपालन के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं **—सराय नाहर राय**
- भीमबेटका प्रसिद्ध है **—गुफा शैल चित्र के लिए**

2. सिन्धु घाटी की सभ्यता

सैंधव सभ्यता को हड़प्पा सभ्यता, सिन्धु सभ्यता, सिन्धु-सरस्वती सभ्यता, कांस्य युगीन सभ्यता तथा प्रथम नगरीय क्रांति आदि संबोधनों से अभिहित किया जाता है। यह भारतीय सभ्यता व संस्कृति के लंबे वैविध्यपूर्ण कथानक का प्रारंभिक बिन्दु है। बीसवीं सदी के आरंभ तक इतिहासकारों एवं पुरातत्त्ववेत्ताओं (भारतीय पुरातत्व विभाग का जन्मदाता अलेक्जेंडर कनिंघम को माना जाता है, जबकि पुरातत्व विभाग की नींव वायसराय लॉर्ड कर्जन के काल में पड़ी) की यह धारणा थी कि वैदिक सभ्यता भारत की प्राचीनतम सभ्यता है। जब भारतीय पुरातत्व विभाग के महानिदेशक जान मार्शल थे, तब दयाराम साहनी ने 1921 में ''हड़प्पा'' तथा राखाल दास बनर्जी ने 1922 में ''मोहनजोदड़ो'' नामक स्थलों से पुरातात्त्विक वस्तुओं को प्राप्त कर यह सिद्ध किया कि वैदिक सभ्यता से पूर्व भी भारत में एक अन्य सभ्यता (सैंधव सभ्यता) विद्यमान थी। सिन्धु घाटी सभ्यता विश्व की प्राचीनतम् सभ्यताओं (मिस्र, मेसोपोटामिया, सुमेर एवं क्रीट) के समय से ही विकसित थी।

पिछले 15 वर्षों के SSC के प्रश्न पत्रों में ''सिंधु घाटी की सभ्यता''

- हड़प्पा सभ्यता किससे संबंधित है?**—कांस्य युग (सीमा सुरक्षा बल (सब-इंस्पेक्टर्स) विशेष भर्ती, 1997)**
- गुजरात के किस स्थान पर हड़प्पा की सभ्यता के अवशेष मिले थे? **—लोथल**
  (लोअर डिवीजन क्लर्क परीक्षा,, 1998)
- भारत में आर्य सर्वप्रथम कहां आकर बसे? **—सिंधु घाटी**
  (स्टेनोग्राफर (ग्रेड-सी) 1999)
- पैमानों की खोज ने यह सिद्ध कर दिया है कि सिंधु घाटी के लोग माप और तौल से परिचित थे। यह खोज कहां से प्राप्त हुई थी? **—हड़प्पा**
  (मैट्रिक स्तर (PT) परीक्षा, 1999)
- हड़प्पा काल की मुद्राओं के निर्माण में मुख्य रूप से किस द्रव्य का उपयोग किया गया था? **—टेराकोटा**
  (मैट्रिक स्तर (PT) परीक्षा, 2000)
- सिंधु घाटी के घर किसके बनाए जाते थे? **—ईंट**
  (मैट्रिक स्तर (PT) परीक्षा, 2001)
- हड़प्पा के निवासी कैसे थे? **—शहरी**
  (मैट्रिक स्तर (PT) परीक्षा, 2001)
- सिंधु घाटी की सभ्यता के लोगों का मुख्य व्यवसाय क्या था? **—कृषि कार्य**
  (मैट्रिक स्तर (PT) परीक्षा, 2001)
- अपवाह तंत्र का निर्माण सबसे पहले किस सभ्यता के लोगों ने किया था? **—सिंधु घाटी सभ्यता के लोगों ने**
  (मैट्रिक स्तर (PT) परीक्षा, 2002)
- ईंटों की कृत्रिम गोदी (डॉकयार्ड) वाला एक मात्र सिंधु स्थल कौन सा था? **—लोथल**
  (सेक्शन ऑफीसर्स (ऑडिट) परीक्षा, 2005)
- लोथल नामक स्थान पर किस सभ्यता का जहाजी मालघाट था? **—सिंधु घाटी**
  (सेक्शन ऑफीसर्स (ऑडिट) परीक्षा, 2006)
- सिंधु घाटी सभ्यता की प्रमुख विशेषता क्या है? **—व्यवस्थित शहरी जीवन**
  (सेक्शन ऑफीसर्स (ऑडिट) परीक्षा, 2007)
- सिंधु सभ्यता के लोग प्रायः अपने मकान बनाते थे? **—पक्की ईंटों से**
  (सेक्शन ऑफीसर्स (ऑडिट) परीक्षा, 2008)
- सिंधु सभ्यता के शहरों की गलियां कैसी थीं?**—चौड़ी और सीधी**
  (C.P.O. परीक्षा, 2011)
- सिंधु घाटी सभ्यता की प्रमुख विशेषता क्या थी? **—नगर सभ्यता**
  (F.C.I. असिस्टेंट परीक्षा, 2012)
- धातु से बने सिक्के सबसे पहले प्रगट हुए?**—हड़प्पा सभ्यता से**
  (स्टेनोग्राफर (ग्रेड-सी व डी) परीक्षा, 2011)
- सिंधु सभ्यता का बंदरगाह वाला नगर था **—लोथल**
  (स्टेनोग्राफर (ग्रेड-सी व डी) परीक्षा, 2011)
- सिन्धु घाटी सभ्यता के लोग किस देवता की पूजा करते थे? **—पशुपति**
  (मल्टी टास्किंग स्टाफ (MTS) परीक्षा, 2013)

- सिन्धु घाटी सभ्यता की लिपि कौन सी है?
  —अज्ञात (चित्राक्षर लिपि)
  (संयुक्त हायर सेकण्डरी (10+2) स्तर परीक्षा, 2013)
- विशाल स्नानागार स्थित था **—मोहनजोदड़ो**
  (जूनियर इंजीनियरिंग परीक्षा, 2013)
- सिन्धु घाटी की खुदाई से प्राप्त वस्तुएं हैं
  —नृत्य करती लड़की की आकृति
  (प्रसार भारती इंजीनियरिंग परीक्षा, 2013)

विशिष्ट तथ्य ''सिंधु घाटी की सभ्यता''

- सिंधु सभ्यता का काल—(a) पूर्व हड़प्पा काल (3500-2600 ई. पू.), (b) परिपक्व हड़प्पा (2600-1900 ई. पू.), (c) उत्तर हड़प्पा (1900-1300 ई.पू.)।
- सैन्धव सभ्यता का आकार-त्रिभुजाकार था।
- सैन्धव सभ्यता का कुल क्षेत्र 12,99,600 वर्ग किमी. था।
- हड़प्पा सभ्यता की अफगानिस्तान में दो बस्तियाँ मुण्डीगाक तथा सोर्तुगई प्राप्त होती हैं।
- रेडियोकार्बन C^{14} के अनुसार इस सभ्यता का काल 2350-1750 ई. पू. (सर्वमान्य तिथि) मानी गई है।

हड़प्पा : यह स्थल पाकिस्तान के पंजाब क्षेत्र के माण्टगोमरी जिले में रावी नदी के तट पर स्थित था।

- भारतीय पुरातत्व विभाग के महानिदेशक सर जान मार्शल के निर्देश पर 1921 ई. में दयाराम साहनी ने इस पुरास्थल की खोज की।
- यह सैन्धव सभ्यता का दूसरा सबसे बड़ा स्थल है।
- यहां से श्रमिक आवास मिला है।
- यहां से स्वास्तिक चिह्न की प्राप्ति हुई है।
- मिट्टी का मूसा तथा अन्नागार भी प्राप्त हुआ है।
- **मोहनजोदड़ो :** मोहनजोदड़ो का सिन्धी भाषा में तात्पर्य है—मृतकों का टीला।
- मोहनजोदड़ो की खुदाई 1922 ई. में राखालदास बनर्जी ने कराई थी।
- पाकिस्तान के सिन्ध प्रान्त के लरकाना जिले में सिन्धु नदी के तट पर स्थित है।
- यहां से एक मुहर मिली है, जिसमें एक त्रिमुखी पुरुष को योग के पद्मासन मुद्रा में बैठा हुआ दिखाया गया है। इसे शिव का प्राचीन रूप माना गया है।
- यहां से विशाल स्नानागार का प्रमाण मिला है। इस स्नानागार के निर्माण में "T" प्रकार के ईंटों का उपयोग हुआ है।
- मोहनजोदड़ो से विशाल अन्नागार के प्रमाण प्राप्त हुए हैं (जो मोहनजोदड़ो के सभी भवनों में बड़ा है)।
- यहीं से सीप का पैमाना मिला है।
- सूती वस्त्र के साक्ष्य भी प्राप्त हुए हैं।
- **कालीबंगा** : कालीबंगा का तात्पर्य है—काले रंग की चूड़ियाँ।
- अवस्थिति—राजस्थान के हनुमानगढ़ जिले में।
- यहां घर कच्ची ईंटों के बने थे।
- चन्हूदड़ो में सैन्धव संस्कृति के बाद झूकर संस्कृति तथा झाँगर संस्कृति विकसित हुई।
- यहां से वक्राकार ईंटें मिली हैं।
- यहां से प्राप्त कांस्य की बैलगाड़ी व इक्कागाड़ी महत्त्वपूर्ण हैं।
- यहां मिली एक ईंट पर बिल्ली का पीछा करते कुत्ते के पैरों के निशान का साक्ष्य मिला है।
- **रंगपुर** : गुजरात के मादर नदी के तट पर स्थित था।
- रंगपुर व लोथल से धान की भूसी का साक्ष्य मिला है।
- यहां से कच्ची ईंटों का दुर्ग मिला है।
- मोहनजोदड़ो से प्राप्त पशुपति शिव की मुहर विशेष रूप से प्रसिद्ध है।
- सैन्धव सभ्यता में नारी मृणमूर्तियाँ ज्यादा पाई गई हैं।
- सैन्धववासियों के बर्तन मुख्यतः लाल या गुलाबी रंग के हैं।
- सिन्धु सभ्यता में संभवतः दास प्रथा का भी प्रचलन था।
- सैन्धववासी कपास के प्रथम प्रयोक्ता थे।
- सैन्धववासी पांसे का खेल व नृत्य द्वारा अपना मनोरंजन करते थे।
- सैन्धव सभ्यता के लोगों को लोहे का ज्ञान नहीं था।
- सैन्धव सभ्यता वैदिक आर्यों से पहले की तथा संभवतः आर्यों से भिन्न सभ्यता थी।
- यद्यपि सैन्धववासी घोड़े से अपरिचित थे (अनुमान) तथापि सुरकोटड़ा से घोड़े की हड्डियों के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं।
- सैन्धववासी लिंग व मूर्तिपूजक थे, जबकि आर्य प्रकृति पूजक।
- मोहनजोदड़ो के अधिकांश निवासी भूमध्यसागरीय प्रजाति के माने जाते हैं।
- सैंधव सभ्यता के पतन का कारण अभी तक पर्याप्त साक्ष्य के अभाव में निश्चित नहीं किया जा सका है।
- विविध विद्वानों ने सैंधव सभ्यता के पतन के कारण निम्न बताए हैं—1. व्हीलर ने आर्यों का आक्रमण, 2. चाइल्ड व पीगट ने ब्रह्म आक्रमण, 3. आरेल स्टाइन व घोष ने जलवायु परिवर्तन तथा 4. लैम्बिक ने अस्थितर नदी तंत्र बताया है।

महत्त्वपूर्ण प्रश्न-उत्तर और तथ्य

- सैंधव सभ्यता के महान स्नानागार कहां से प्राप्त हुए हैं— **—मोहनजोदड़ो**
- हड़प्पा संस्कृति पर प्रकाश डालता है—**पुरातात्विक खुदाई**
- मानव द्वारा सर्वप्रथम प्रयुक्त अनाज था **—जौ**
- सिंधु घाटी सभ्यता का पत्तन नगर था **—लोथल**
- सिंधु सभ्यता किस काल में पड़ता है **—आदि ऐतिहासिक काल**
- सिंधु घाटी के लोग विश्वास करते थे **—मातृशक्ति में**
- सिंधु घाटी के निवासियों की सभ्यता को जानने का मूल स्रोत है **—नगरों के अवशेष**
- मोहनजोदड़ो एवं हड़प्पा की पुरातात्विक खुदाई के प्रभारी थे **—सर जॉन मार्शल**

- किस प्रमुख पशु का अंकन हड़प्पा संस्कृति की मुहरों पर नहीं मिलता? **—घोड़ा**
- 'जुते हुए खेत' की खोज की गई थी **—कालीबंगा में**
- **सुमेल**—लोथल - गोदीबाड़ा
  कालीबंगा - जुता हुआ खेत
  धौलावीरा - पकी मिट्टी की बनी हल की प्रतिकृति
  बनवाली - हड़प्पन लिपि के बड़े आकार के 10 चिह्नों वाला शिलालेख
- किस एक पशु का हड़प्पा संस्कृति की मुहरों और टेराकोटा कलाकृतियों में निरूपण नहीं है? **—गाय**
- हड़प्पा की उन्नत जल प्रबंधन प्रणाली का पता चलता है **—मोहनजोदड़ो में**
- हड़प्पा सभ्यता की खोज हुई थी **—1922 ई. में**
- सिंधु सभ्यता का बिना दुर्ग का एकमात्र नगर कौन सा था? **—चन्हूदड़ो**
- हड़प्पा में मिट्टी के बर्तनों पर सामान्यतः किस रंग का उपयोग हुआ है? **—लाल**

3. वैदिक सभ्यता

सिन्धु सभ्यता के बाद ''वैदिक सभ्यता'' को भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति का आधार स्तंभ माना जाता है। भारतीय इतिहास में 1500 ई. पू. से 600 ई. पू. तक के कालखण्ड को ''वैदिक सभ्यता'' की संज्ञा दी जाती है। वैदिक सभ्यता को दो काल खण्डों में विभक्त कर प्रस्तुत किया जाता है—1500 ई. पू. से 1000 ई. पू. तक के कालखण्ड को ''ऋग-वैदिक सभ्यता'' की संज्ञा दी जाती है तथा 1000 ई. पू. से 600 ई. पू. तक के कालखण्ड को ''उत्तर वैदिक सभ्यता'' के नाम से जाना जाता है। वैदिक शब्द की व्युत्पत्ति ''वेद'' (अर्थात् ज्ञान) से हुई है। इस सभ्यता और संस्कृति के निर्माताओं को ''ऋग्वेद'' में ''आर्य'' (आर्य-संस्कृत भाषा का शब्द है, जिसका अर्थ ''श्रेष्ठ'' है) कहा गया है।

पिछले 15 वर्षों के SSC के प्रश्न पत्रों में ''वैदिक सभ्यता''

- तीन विदुषियां गार्गी, मैत्रेयी तथा कपिला का घर किस शहर में था? **—मिथिला**
  (सेक्शन ऑफीसर्स (ऑडिट) परीक्षा, 2007/ C.P.O. परीक्षा, 2004)
- भारतीय दर्शन शास्त्र का सबसे महत्त्वपूर्ण और सबसे पुराना स्रोत कौन है? **—वेद**
  (असिस्टेंट ग्रेड (P.T.) परीक्षा, 1998)
- सबसे पुराना वेद कौन सा है? **—ऋग्वेद**
  (असिस्टेंट ग्रेड (P.T.) परीक्षा, 1998)
- किस वेद में प्राचीन वैदिक युग की सभ्यता के बारे में सूचना दी गई है? **—ऋग्वेद**
  (स्नातक स्तर (P.T.) परीक्षा, 1999)
- वैदिक गणित का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण ग्रंथ कौन सा है **—शुल्व सूत्र**
  (स्नातक स्तर (P.T.) परीक्षा, 2000)
- अष्टाध्यायी किसकी रचना है **—पाणिनी**
  (सहायक निरीक्षक नियंत्रण परीक्षा, 2003/ स्टेनोग्राफर (ग्रुप-डी) परीक्षा, 1997)
- राष्ट्रीय प्रतीक के फलक के नीचे देवनागरी लिपि में उत्कीर्ण शब्द ''सत्यमेव जयते' किस उपनिषद से लिए गए हैं? **—मुंडक**
  (F.C.I. (असिस्टेंट) परीक्षा, 2012/ C.P.O. परीक्षा, 2006/हायर सेकेंडरी परीक्षा, 2011)
- सुप्रसिद्ध संस्कृत व्याकरण किसने लिखी है **—पाणिनी**
  (स्नातक स्तर (टियर-I) परीक्षा, 2010)
- योग दर्शन के पथ प्रदर्शक थे **—पतंजलि**
  (C.P.O. परीक्षा, 2011)
- वैदिक लोगों का मुख्य व्यवसाय क्या था? **—कृषि**
  (मल्टी टास्किंग स्टाफ (MTS) परीक्षा, 2013)
- उत्तर वैदिक युग का एक पहलू नहीं था **—आयरन (लौह) की खोज**
  (स्टेनोग्राफर (ग्रेड डी, परीक्षा, 2013)
- किसको ऋग्वेद काल में नहीं जाना जाता था? **—वर्ण प्रथा**
  (जूनियर इंजीनियरिंग परीक्षा, 2013)

विशिष्ट तथ्य ''वैदिक संस्कृति''

- वैदिक संस्कृति ग्रामीण संस्कृति थी। आर्यों को लिपि का ज्ञान न होने के कारण वेद श्रवण परम्परा के माध्यम से एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुंचाये जाते थे, इसलिये वेदों को 'श्रुति' कहा गया।
- वेदों का संकलन कृष्ण द्वैपायन व्यास ने किया था। अतएव वे वेदव्यास कहलाये।
- गेरूवर्णी मृदभाण्ड (Ochre Coloured Pottery) ऋग्वैदिक काल का प्रतिनिधित्व करता है।
- चित्रित धूसर मृदभाण्ड (Painted Gray Ware) उत्तर वैदिक काल का प्रतिनिधित्व करता है।
- बोगजकोई (एशिया माइनर) अभिलेख में वैदिक देवताओं—इन्द्र, मित्र, वरुण तथा नासत्य का वर्णन है।
- वेदों में व्याघ्र का उल्लेख नहीं मिलता।
- उत्तर वैदिक काल से लोहे का साक्ष्य मिलता है।
- वैदिक काल में मकानों का निर्माण फूस व बांस बल्ली से किया जाता था।
- **वेद :** चार वेदों के चार उपवेद हैं—(1) ऋग्वेद का आयुर्वेद, (2) यजुर्वेद का धनुर्वेद, (3) सामवेद का गन्धर्ववेद तथा (4) अथर्ववेद का शल्य शास्त्र।

- **वेदत्रयी :** वैदिक मंत्रों को चार संहिताओं में संकलित किया गया है। इनमें ऋक, यजु, साम और अथर्व में प्रथम तीन को वेदत्रयी कहा जाता है।
- **ब्राह्मण :** गद्य में रचित तथा प्रत्येक संहिता के अपने-अपने ब्राह्मण हैं।
- **आरण्यक :** ये ब्राह्मणों के ही अंग हैं।
- **उपनिषद् :** वैसे इनकी संख्या सौ से अधिक मानी जाती है, किन्तु 11 (ईश, केन, कठ, प्रश्न, मुण्डक, माण्डुक्य, ऐतरेय, तैत्तरीय, छान्दोग्य, वृहदारण्यक तथा श्वेता) अधिक प्रसिद्ध हैं।
- **चार कल्पसूत्र :** श्रौत सूत्र, गृह्य सूत्र, धर्म सूत्र एवं शुल्व सूत्र।
- **स्मृतियां :** मनुस्मृति, याज्ञवल्क्य स्मृति, विष्णु स्मृति, कात्यायन स्मृति, बृहस्पति स्मृति, पराशर स्मृति, गौतम स्मृति, वशिष्ठ स्मृति, नारद स्मृति, देवल स्मृति।
- **वेदांग :** वेदों के अर्थ समझने और वैदिक कर्मकाण्डों के प्रतिपादन हेतु ''वेदांग'' (शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरूक्त, छंद व ज्योतिष) की रचना की गई।
- **पुराण :** इनकी संख्या 18 (ब्रह्म पुराण, पद्म पुराण, विष्णु पुराण, शिव पुराण, श्रीमद्‌भगवत् पुराण, नारद पुराण, अग्नि पुराण, ब्रह्म वैवर्त पुराण, वाराह पुराण, स्कंद पुराण, मार्कण्डेय पुराण, वामन पुराण, कूर्म पुराण, मत्स्य पुराण, गरुड़ पुराण, ब्रह्मांड पुराण, लिंग पुराण तथा भविष्य पुराण) है।

वेद	ब्राह्मण	आरण्यक	उपनिषद्
ऋग्वेद	एतरेय/शांखायन	ऐतरेय/कौशीतकी	ऐतरेय कौषीतकी
यजुर्वेद	तैत्तिरीय/शतपथ	तैत्तिरीय/शतपथ	तैत्तिरीय/कठोपनिषद्/ श्वेताम्बर/वृहदारण्यक/ इशोपनिषद्
सामवेद	ताण्ड/जैमनीय	छान्दोग्य/जैमनीय	छान्दोग्योपनिषद्
अथर्ववेद	गोपथ	कोई आरण्यक नहीं	मुण्डकोपनिषद्, प्रश्नोपनिषद्, माण्डूक्योपनिषद्

ऋग्वेद

- दूसरे से सातवें मण्डल को प्राचीन मण्डल, ऋषिकुल या वंश मण्डल कहा जाता है।
- तृतीय मण्डल में गायत्री मंत्र का उल्लेख है।
- दसवां मण्डल सबसे बाद का है।
- चौथा मण्डल कृषि से सम्बन्धित है।
- सातवां मण्डल वरुण को समर्पित है।
- नौवें मण्डल के 144 सूक्तों में सोम का वर्णन है।
- इस काल की विदुषी महिलाओं में प्रमुख है—लोपामुद्रा, घोषा, अपाला, सिक्ता इत्यादि।
- घोषा को चर्मरोग था।
- ऋग्वेद का उपवेद आयुर्वेद है।
- प्रथम मण्डल में इस बात की चर्चा है कि अश्विनों ने मनु को हल चलाना सिखाया।
- सर्वप्रथम चारों वर्णों पुरोहित, राजन्य, वैश्य व शूद्र का उल्लेख ऋग्वेद के 10वें मण्डल के पुरुष सुक्त में हुआ है, जिसमें पुरोहित का उल्लेख 15 बार, राजन्य का उल्लेख 9 बार और वैश्य व शूद्र का उल्लेख एक-एक बार हुआ है।
- ऋग्वेद में सबसे ज्यादा सिंधु नदी का उल्लेख है। इसे हिरण्यानी भी कहा गया है। ऋग्वेद में सरस्वती नदी को नदीतमा (नदियों में उत्तम) कहा गया है।

सामवेद

- सामवेद में ऐसे मंत्रों का संकलन है, जिन्हें गाया जा सके।
- सामवेद के पुरोहित उद्‌गाता कहलाते थे।
- संगीत के सात स्वरों की जानकारी सर्वप्रथम सामवेद से ही मिलती है।
- सामवेद का उपवेद—गांधर्व वेद है।

यजुर्वेद

- यजुर्वेद में यज्ञ संबंधी विधानों का वर्णन है।
- इसका उपवेद धनुर्वेद है।
- यजुर्वेद के पुरोहित अध्वर्यु कहलाते थे।
- यजुर्वेद का अंतिम भाग इषोपनिषद है।

अथर्ववेद

- समस्त वेदों का सार अथर्ववेद में है।
- इसे ब्रह्म वेद भी कहते हैं।
- चाँदी व गन्ने के बारे में सर्वप्रथम उल्लेख अथर्ववेद में मिलता है।
- 'मगध' के लोगों को व्रात्य कहा गया है जो वैदिक नियमों का पालन नहीं करते।
- ब्रह्मचर्य के बारे में सर्वप्रथम जानकारी अथर्ववेद से मिलती है।
- अथर्ववेद का उपवेद शिलावेद है।
- वैश्य वर्ण को अथर्ववेद में बलिकृत (कर देनेवाला) कहा गया है।
- 'गोत्र' शब्द का सर्वप्रथम उल्लेख अथर्ववेद में किया गया है।
- गोपथ ब्राह्मण के रचनाकार गोपथ ऋषि माने जाते हैं।
- मुण्डकोपनिषद में यज्ञ की तुलना टूटी-फूटी नाव से की गई है।
- अथर्ववेद में रोग नाशक मंत्र, जादू-टोना, विवाह गीत, कृषकों के लिए व व्यापारियों के लिए आशीर्वाद सूचक मंत्र है।
- ऋग्वैदिक काल में पशुपालन मुख्य कार्य तथा कृषि गौण कार्य था, जबकि उत्तर वैदिक काल में कृषि मुख्य कार्य हो गया।
- गाय की महत्ता आर्यों के जीवन में अधिक थी। गाय से अनेक शब्दों की व्युत्पत्ति हुई है। जैसे :—गोमत—धनी व्यक्ति, गोधूली—शाम का समय, गोहना—अतिथि, अघन्या—न मारी जाने वाली गाय।
- ऋग्वेद में वर्णित गविष्टि शब्द का तात्पर्य गाय के खोज से स्थापित किया जाता है।
- पुत्री को दुहित्री (गाय दुहने वाली) कहा जाता था।
- पश्चिम का शासक - स्वराट
- पूर्व का शासक - सम्राट
- दक्षिण का शासक - भोज
- मध्य का शासक - राजा
- उत्तर का शासक - विराट

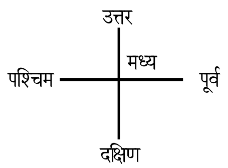

- वैदिक ग्रन्थों में कुल 33 देवताओं का उल्लेख है। जिन्हें तीन भागों में बांटा जा सकता है
- ऋग्वैदिक काल के सबसे महत्त्वपूर्ण देवता इन्द्र थे जिनका 250 बार उल्लेख है।
- इन्द्र को 'पुरन्दर' व रथेष्ठ कहा गया है।

षड्दर्शन (कुल 6)

दर्शन	प्रतिपादक	दर्शन	प्रतिपादक
1. सांख्य दर्शन	कपिल मुनि।	4. वैशेषिक दर्शन	मुनि कणाद।
2. योग दर्शन	पतंजलि।	5. पूर्व मीमांसा	जैमिनी।
3. न्याय दर्शन	गौतम।	6. उत्तर मीमांसा	वादरायण।

महत्त्वपूर्ण प्रश्न-उत्तर और तथ्य

- भारतीय दर्शन की प्रारंभिक शाखा कौन है **—सांख्य**
- 'भाग' और 'बलि' थे **—राजस्व के स्रोत**
- कर्म का सिद्धांत संबंधित है **—मीमांसा से**
- वासुदेव कृष्ण की पूजा सर्वप्रथम किसने प्रारंभ की **—भागवत ने**
- कपिल मुनि द्वारा प्रतिपादित दार्शनिक प्रणाली है **—सांख्य दर्शन**
- उपनिषद पुस्तकें हैं **—दर्शन पर**
- योग दर्शन के प्रतिपादक हैं **—पतंजलि**
- 6ठी शताब्दी ईसा पूर्व के 16 महाजनपदों के विषय में किस बौद्ध ग्रंथ से जानकारी मिलती है ? **—अंगुत्तर निकाय**
- न्याय दर्शन को प्रचारित किया था **—गौतम ने**
- आजीविका संप्रदाय के संस्थापक थे **—मक्खलि गोशाल**
- ऋग्वेद संहिता का नौवा मंडल पूर्णतः समर्पित है **—सोम देवता को**
- प्रसिद्ध दस राजाओं का युद्ध किस नदी के तट पर लड़ा गया था **—परुष्णी (रावी)**
- वैदिक युगीन सभा थी **—मंत्रिपरिषद**
- सर्वाधिक ऋग्वैदिक सूक्त समर्पित है **—इन्द्र को**
- प्राचीन काल के महान विधि निर्माता थे **—मनु**
- प्राचीन नगर तक्षशिला किन नदियों के बीच स्थित है **—सिंधु व झेलम**
- 'आर्य' शब्द इंगित करता है **—श्रेष्ठ वंश का**
- सबसे पुराना वेद कौन सा है? **—ऋग्वेद**
- वेदों में से किस एक में जादुई माया और वशीकरण का वर्णन है? **—अथर्ववेद**
- किस वेद में प्राचीन वैदिक युग की सभ्यता के बारे में सूचना दी गई है? **—ऋग्वेद**
- गायत्री मंत्र किस पुस्तक में उल्लिखित है? **—ऋग्वेद**
- धर्मशास्त्रों में भू-राजस्व की दर बताई गई है **—उपज का 1/6 भाग**
- आरंभिक वैदिक साहित्य में सर्वाधिक वर्णित नदी है **—सिंधु**
- किस वैदिक साहित्य में मोक्ष की चर्चा मिलती है? **—उपनिषद्**
- मनुस्मृति संबंधित है **—समाज व्यवस्था से**
- योग दर्शन के प्रतिपादक हैं **—महर्षि पतंजलि**
- 'शुद्ध अद्वैतवाद' का प्रतिपादन किया था **—वल्लभाचार्य ने**
- गायत्री मंत्र की रचना की थी **—विश्वामित्र ने (ऋग्वेद)**
- 'सत्यमेव जयते' शब्द लिया गया है **—मुण्डकोपनिषद् से**
- सांख्य दर्शन के प्रतिपादक माने जाते हैं **—कपिल मुनी**
- विश्व का पहला गणतंत्र स्थापित किया गया **—लिच्छवि द्वारा (वैशाली)**
- **सुमेल—**

वेद		**विषय-वस्तु**
ऋग्वेद	-	स्तोत्र एवं प्रार्थनाएं
यजुर्वेद	-	स्तोत्र एवं कर्मकांड
सामवेद	-	संगीतमय स्त्रोत
अथर्ववेद	-	तंत्र-मंत्र एवं वशीकरण (औषधि)

4. संगम काल

संस्कृत शब्द ''संगम'' का अर्थ होता है—''सभा''। ''तमिल संगम'' तमिल विद्वानों और कवियों की एक सभा थी। इस साहित्यिक सभा की स्थापना पांड्य राजाओं ने की थी। तमिल परंपरा के अनुसार पौराणिक समय में तीन संगम आयोजित (पहला संगम प्राचीन मदुरै में, दूसरा संगम कपाटपुरम् तथा तीसरा मदुरै में) माने जाते हैं। कतिपय इतिहासकारों द्वारा तृतीय संगम ईसा युग से कुछ शताब्दियों पूर्व माना जाता है।

पिछले 15 वर्षों के SSC के प्रश्न पत्रों में ''विद्युत''

- संगम युग का संबंध कहां के इतिहास से है? —**तमिलनाडु**
  (मैट्रिक स्तर (PT) परीक्षा, 2000)
- ''लाल चेर'' के नाम से प्रसिद्ध वह चेर राजा कौन था जिसने ''कण्णगी'' के मंदिर का निर्माण कराया था? —**सिंचगुट्टवन**
  (संयुक्त मैट्रिक स्तर (PT) परीक्षा, 2002)
- तमिलनाडु भाषा के ''शिलाप्पदिकारम'' और मणिमेखला'' नामक गौरव ग्रंथ किससे संबंधित है? —**हिन्दू धर्म**
  (संयुक्त मैट्रिक स्तर (PT) परीक्षा, 2002)
- चोल वंश में ग्राम प्रशासन के बारे में किस शिलालेख में उल्लेख मिलता है? —**उत्तरामेरुर**
  (मल्टी टास्किंग स्टाफ (MTS) परीक्षा, 2013)
- संगम काल में रोमन व्यापार का केन्द्र था —**अरिकामेडु**
  (मल्टी टास्किंग स्टाफ (MTS) परीक्षा, 2013)
- पश्चिमी चालुक्य वंश का प्रसिद्ध शासक कौन था? —**पुलकेशिन द्वितीय**
  (मल्टी टास्किंग स्टाफ (MTS) परीक्षा, 2013)

- किस चोल शासक ने नई राजधानी गंगईकांडाचोलपुरम का निर्माण किया? —**राजेन्द्र प्रथम**

(मल्टी टास्किंग स्टाफ (MTS) परीक्षा, 2013)

- चोल के स्थानीय स्वशासन में कितने प्रकार की सभाएँ थी? —**तीन**

(प्रसार भारती इजीनियरिंग असिस्टेंट परीक्षा, 2013)

विशिष्ट तथ्य ''संगम काल''

- संगम काल का समय पहली शताब्दी से तीसरी शताब्दी माना जाता है।
- संगम काल की जानकारी का मुख्य स्रोत मेगस्थनीज की इण्डिका, खारवेल का हाथीगुम्फा अभिलेख तथा इरैनार अगप्पोरूल की रचनाएं हैं।
- संगम का तात्पर्य तमिल विद्वानों की परिषद से है। इन संगमों में साहित्यों का संकलन किया गया। पाण्ड्य शासकों के संरक्षण में तीन संगमों का आयोजन किया गया था।
- प्रथम संगम का आयोजन ऋषि अगस्त्य की अध्यक्षता में मदुरा (तमिलनाडु) में हुआ।
- द्वितीय संगम का आयोजन पहले ऋषि अगस्त्य तथा बाद में तोलकाप्पियर की अध्यक्षता में कपाटपुरम् या अलवै में हुआ।
- तृतीय संगम उत्तरी मदुरा में नक्कीरर की अध्यक्षता में आयोजित किया गया।
- जहां प्रथम संगम का कोई भी ग्रंथ उपलब्ध नहीं है, वहीं दूसरे संगम का एकमात्र उपलब्ध ग्रंथ तोलकाप्पियर रचित व्याकरण ग्रंथ तोलकाप्पियम् है।
- तृतीय संगम के ग्रंथों को कई संकलनों में संकलित किया गया है।
- शिलप्पादिकारम्, मणिमेखलै तथा जीवक चिंतामणि को तमिल साहित्य का महाकाव्य माना जाता है।
- शिलप्पादिकारम् का अर्थ है- नुपूर की कहानी। इस महाकाव्य की रचना चेर शासक शेनगुट्टवन के भाई इलांगोआडिगल के द्वारा की गई। इस महाकाव्य के मुख्य पात्र कोवलन्, उसकी पत्नी (कण्णगि) तथा माधवी नाम की एक वेश्या है।
- मणिमेखलै की रचना एक बौद्ध अन्न व्यापारी सीतलैसत्तनार के द्वारा की गई थी। इस महाकाव्य का मुख्य पात्र कोवलन् तथा माधवी से उत्पन्न पुत्री मणिमेखलै है।
- जीवक चिंतामणि, जिसे विवाह ग्रंथ भी कहा जाता है, के लेखक तिरूतंक्कदेवर हैं।
- संगम साहित्यों में दक्षिण भारत के तीन वंशों—चोल, पाण्ड्य तथा चेर का उल्लेख है।
- चोलों का राज्य कावेरी घाटी में स्थित था। इसकी राजधानी मनलूर (बाद में उरैयूर) थी।
- चोल राज्य का सबसे महत्त्वपूर्ण राजा करिकाल (अर्थात् झुलसे हुए टांगों वाला) था।
- चोल राज्य का प्रतीक चिह्न बाघ था।
- चेर का राज्य कोंकण, मालाबार तट व कोचीन था। इसकी राजधानी वज्जि या करूर थी। शेनगुट्टवन इस राज्य का सबसे प्रतापी राजा था। प्रतीक चिह्न धनुष था।
- पाड्य राज्य रामनाथपुरम से त्रावणकोर तक था।
- पाड्य राज्य की राजधानी मदुरै थी।
- इस वंश का सबसे प्रतापी राजा नेडुजेलियन था, जिसने रोमन शासक ऑगस्टस के दरबार में अपना दूत भेजा था।

5. प्राचीन भारतीय धर्म एवं दर्शन और महाजनपद

प्राचीन भारतीय इतिहास का अध्ययन जहां भारतीय सभ्यता और संस्कृति के विभिन्न कालखण्डों के विकासक्रम पर प्रकाश डालता है, वहीं विभिन्न धार्मिक आंदोलनों व धर्मों के उद्‌भव को भी प्रामाणिकता प्रदान करता है। वस्तुतः ईसा पूर्व छठी शताब्दी केवल भारत के लिए ही नहीं अपितु संपूर्ण विश्व के लिए एक विपुल क्रांति-परिवर्तनों की शताब्दी थी। यह कालखण्ड प्रबुद्ध दार्शनिक विचारों एवं सत्यानुसंधान का काल था। इसी काल में भारत में मध्य गंगा की घाटी में दो प्रमुख धर्मों- बौद्ध एवं जैन का प्रार्दुभाव हुआ।

छठी सदी ई. पू. में व्यापार की प्रगति, लोहे का व्यापक प्रयोग, मुद्रा का प्रचलन और नगरों के उत्थान ने बौद्धिक आंदोलन के रूप में जहां एक ओर सामाजिक एवं धार्मिक क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन किए, वहीं उन्हीं परिस्थितियों ने राजनीतिक व्यवस्था में भी युगांतकारी परिवर्तन किए। उत्तर वैदिक काल के जनपद (पाणिनि ने अपने ''अष्टाध्यायी'' में 22 जनपदों का उल्लेख किया है) अब महाजनपदों में परिवर्तित हो गए। जहां तक महाजनपदों की संख्या का प्रश्न है, विभिन्न ग्रंथों में इसकी अलग-अलग संख्याएं मिलती हैं। बौद्धग्रंथ ''अंगुत्तर निकाय'' के अनुसार, 16 ''महाजनपद'' ही अस्तित्व में थे।

पिछले 15 वर्षों के SSC के प्रश्न पत्रों में ''प्राचीन भारतीय धर्म एवं दर्शन''

- लुम्बिनी किसका जन्मस्थान है? —**बुद्ध का**

(स्टेनोग्राफर (ग्रेड-डी) परीक्षा, 1997)

- गौतम बुद्ध का जन्म किस स्थान पर हुआ था? —**लुम्बिनी (नेपाल)**

(असिस्टेंट ग्रेड (P.T.) परीक्षा, 1998/ मैट्रिक स्तर (P.T.) परीक्षा, 1999)

- जैनियों के पहले तीर्थंकर कौन थे? —**ऋषभ देव**

(स्नातक स्तर (P.T.) परीक्षा, 1999)

- महावीर की माता कौन थीं? —**त्रिशला**

(मैट्रिक स्तर (P.T.) परीक्षा, 1999)

- बौद्ध ग्रंथों ''पिटकों'' की रचना किस भाषा में की गई थी?—**प्राकृत**

(मैट्रिक स्तर (P.T.) परीक्षा, 2002)

- त्रिपिटक किसका धार्मिक ग्रंथ है? —**बौद्धों का**

(मैट्रिक स्तर (P.T.) परीक्षा, 2002)

- आजीविका एक सम्प्रदाय था —**बुद्ध के समसमायिक**

(टैक्स असिस्टेंट परीक्षा,, 2004)

- नालंदा विश्वविद्यालय विद्या का एक महान केंद्र था। यह किस धर्म से संबंधित है? —**बौद्ध धर्म**

(मैट्रिक स्तर (P.T.) परीक्षा, 2002)

- बौद्धों का पवित्र ग्रंथ कौन सा है? **—त्रिपिटक**
(स्नातक स्तर (P.T.) परीक्षा, 2005)
- मानव के दुःखों के अंत के लिए ''अंष्टांगिक मार्ग'' पथ का प्रतिपादन किसने किया? **—गौतम बुद्ध**
(टैक्स असिस्टेंट परीक्षा,, 2004)
- बौद्ध धर्म ने समाज के दो वर्गों को अपने साथ जोड़कर एक महत्त्वपूर्ण प्रभाव छोड़ा, ये वर्ग था **—स्त्रियां एवं शूद्र**
(C.P.O. परीक्षा, 2003)
- प्राचीनकाल में स्रोत सामग्री लिखने के लिए प्रयुक्त भाषा थी **—ब्राह्मी**
(C.P.O. परीक्षा, 2006)
- बौद्ध धर्म में बुल का संबंध महात्मा बुद्ध के जीवन की किस घटना के साथ है? **—जन्म से**
(टैक्स असिस्टेंट परीक्षा, 2006)
- बुद्ध का क्या अर्थ होता है? **—ज्ञान की प्राप्ति**
(सेक्शन ऑफीसर्स (ऑडिट) परीक्षा, 2006)
- ''पर्यूषण पर्व'' किसके द्वारा मनाया जाता है? **—जैनियों द्वारा**
(मैट्रिक स्तर (P.T.) परीक्षा, 2006)
- एलोरा में गुफाएं और शैलकृत मंदिर हैं **—हिन्दू, बौद्ध और जैन**
(स्नातक स्तर (PT) परीक्षा, 2008)
- किस मृद्भाण्ड (पॉटरी) भारत में द्वितीय शहरीकरण के प्रारंभ का प्रतीक माना गया? **—चित्रित धूसर**
(मैट्रिक स्तर (PT) परीक्षा, 2002)
- आरंभिक बौद्ध साहित्य किस भाषा में रचे गए? **—पालि**
(मल्टी टास्किंग स्टॉफ परीक्षा, 2011)
- 'इच्छा सब कष्टों का कारण है' इसका प्रचार करने वाला धर्म कौन सा है? **—बौद्ध धर्म**
(मल्टी टास्किंग स्टाफ (MTS) परीक्षा, 2013)
- जैन साहित्य को क्या कहते हैं? **—अंग**
(मल्टी टास्किंग स्टाफ (MTS) परीक्षा, 2013)
- प्रथम बौद्ध परिषद कहाँ आयोजित की गई? **—राजगृह**
(मल्टी टास्किंग स्टाफ (MTS) परीक्षा, 2013)
- कौन सा शासक बुद्ध का समकालीन था? **—बिम्बिसार व प्रसेनजित**
(मल्टी टास्किंग स्टाफ (MTS) परीक्षा, 2013)
- कनिष्क प्रथम किसका पृष्ठ पोषक था? **—महायान बुद्धवाद**
(मल्टी टास्किंग स्टाफ (MTS) परीक्षा, 2013)
- बुद्ध के प्रथम प्रवचन को कहा जाता है **—धर्मचक्रप्रवर्तन (धम्मचक्कपबतनसुत्त)**
(संयुक्त स्नातक स्तरीय प्रा0 परीक्षा, 2013)
- बौद्ध धर्म का सम्प्रदाय कौन नहीं है? **—थेरवाद**
(संयुक्त स्नातक स्तरीय प्रा0 परीक्षा, 2013)

विशिष्ट तथ्य ''प्राचीन भारतीय धर्म एवं दर्शन''

बौद्ध धर्म

छठी शताब्दी ई. पू. मध्य व निम्न मध्य गंगा घाटी में जो 62 धार्मिक सम्प्रदायों का उदय हुआ, उनमें सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण बौद्ध धर्म था। इसने ब्राह्मण धर्म के अन्दर व्याप्त कुरीतियों व कर्मकाण्डों को सशक्त चुनौती दी।

गौतम बुद्ध

- गौतम बुद्ध का जन्म लगभग 563 ई. पू. में कपिलवस्तु के समीप लुम्बिनी में हुआ था। (जिसकी पहचान वर्तमान समय में रूमिन्नदेई नामक स्थान से की जाती है)।
- गौतम बुद्ध के पिता शुद्धोधन कपिलवस्तु के शाक्यों के प्रधान (मुखिया) थे। उनकी माता का नाम माया था, जो कोसल गणराज्य की कन्या थी। गौतम बुद्ध के जन्म के कुछ ही दिनों के बाद उनकी माता माया का देहान्त हो गया तथा उनका पालन-पोषण उनकी मौसी महाप्रजापति गौतमी ने किया।
- गौतम बुद्ध का प्रारंभिक सांसारिक जीवन वैभवपूर्ण व्यतीत हुआ, लेकिन चिन्तनशील बुद्ध ने 29 वर्ष की अवस्था में अपनी पत्नी यशोधरा तथा पुत्र राहुल को छोड़ गृह त्याग कर संन्यास ग्रहण कर लिया।
- गौतम बुद्ध के जीवन से संबंधित चार दृश्यों में—वृद्ध व्यक्ति को देखना, रोगी को देखना, मृतक को देखना तथा संन्यासी को देखना, शामिल है।
- बुद्ध का गृह त्याग बौद्ध साहित्य में महाभिनिष्क्रिमण कहा जाता है।
- बुद्ध के गृह त्याग का प्रतीक घोड़ा माना जाता है। उनके घोड़े का नाम कंथक तथा सारथी का नाम चन्ना था।
- बुद्ध ने आलार कलाम तथा रूद्रक रामपुत्र से संन्यासकाल में शिक्षाएं प्राप्त की थीं।
- कठोर तपस्या के बाद भी ज्ञान प्राप्ति न होने पर बुद्ध ने उरुवेला (बोधगया) में सुजाता नामक लड़की के हाथों खीर खाकर अपना उपवास तोड़ा था।
- महात्मा बुद्ध को गया में पीपल वृक्ष के नीचे वैशाख पूर्णिमा के दिन 35 वर्ष की अवस्था में ज्ञान प्राप्ति हुई। बुद्ध ने अपना पहला उपदेश ऋषिपत्तन, (सारनाथ) में दिया।
- ज्ञान प्राप्ति के बाद सिद्धार्थ को बुद्ध (ज्ञानी) तथा तथागत (वस्तुओं के वास्तविक जानकार) कहा गया।

महत्त्वपूर्ण घटनाएँ व प्रतीक

माता के गर्भ में आना	हाथी
बुद्ध का जन्म	कमल
गृह त्याग	घोड़ा
ज्ञान प्राप्ति	बोधिवृक्ष
प्रथम उपदेश	धर्मचक्र
महापरिनिर्वाण	स्तूप

- ज्ञान प्राप्ति के बाद वे ऋषिपत्तन (सारनाथ) गये। यहां पर उन्होंने पांच ब्राह्मण संन्यासियों को शिक्षा (उपदेश) दिया। ये वही ब्राह्मण संन्यासी थे, जिन्होंने महात्मा बुद्ध का साथ छोड़ दिया था।
- इस प्रथम उपदेश को धर्मचक्र प्रवर्तन कहा गया। धर्मचक्र प्रवर्तन के अन्तर्गत उन्होंने चार आर्य सत्य की बात कही थी।
- महात्मा बुद्ध का प्रिय व प्रधान शिष्य (उनका निजी परिचारक भी)

आनंद था। महात्मा बुद्ध अपने उपदेश आनंद को ही संबोधित करके देते थे। आनंद के ही कहने पर महात्मा बुद्ध ने बौद्ध संघ में स्त्रियों के प्रवेश की अनुमति दी थी। मौसी महाप्रजापति गौतमी (जो उनकी विमाता थी) को उन्होंने वैशाली में सर्वप्रथम बौद्ध संघ में प्रवेश की अनुमति प्रदान की थी। उसके बाद मौसी (विमाता) की पुत्री सुनंदा और उसके बाद यशोधरा ने प्रव्रज्या ग्रहण की थी।

बौद्ध संगीतियाँ

क्रम	समय	स्थान	अध्यक्ष	शासनकाल
प्रथम बौद्ध संगीति	483 ई. पू.	राजगृह	महाकश्यप	अजातशत्रु
द्वितीय बौद्ध संगीति	383 ई. पू.	वैशाली	साबकमीर	कालाशोक
तृतीय बौद्ध संगीति	251 ई. पू.	पाटलीपुत्र	मोग्गलिपुत्ततिस्स	अशोक
चतुर्थ बौद्ध संगीति	ई. की प्रथम शताब्दी	कुण्डलवन (कश्मीर)	वासुमित्र (अध्यक्ष)/ अश्वघोष (उपाध्यक्ष)	कनिष्क

टिप्पणी : चतुर्थ बौद्ध संगीति के बाद बौद्ध धर्म दो भागों (हीनयान-महायान) में विभाजित हो गया।

- **चार आर्य सत्य** : बुद्ध ने सांसारिक दुःखों के संबंध में 4 आर्य सत्यों का उपदेश दिया। ये हैं—(1) दुःख, (2) दुःख समुदाय, (3) दुःख निरोध, (4) दुःख निरोधगामिनी प्रतिपदा।
- **अष्टांगिक मार्ग** : बुद्ध ने सांसारिक दुःखों से मुक्ति हेतु अष्टांगिक मार्ग (सम्यक् दृष्टि, सम्यक् संकल्प, सम्यक् वाणी, सम्यक् कर्मान्त, सम्यक् आजीव, सम्यक् व्यायाम, सम्यक् स्मृति तथा सम्यक् समाधि) की बात कही।
- **निर्वाण** : बुद्ध के अनुसार अष्टांगिक मार्गों का पालन करने के उपरांत मनुष्य की सब तृष्णा नष्ट हो जाती है तथा उसे निर्वाण (बौद्ध धर्म का परम लक्ष्य, जिसका अर्थ है ''दीपक का बुझ जाना'' अर्थात् जीवन मरण चक्र से मुक्त हो जाना) प्राप्त हो जाता है।
- **दस शील** : बुद्ध ने निर्वाण प्राप्ति को सरल बनाने के लिए 10 शीलों, अहिंसा, सत्य, अस्तेय (चोरी न करना), अपरिग्रह (किसी प्रकार की संपत्ति न रखना), मद्य सेवन न करना, स्त्रियों से दूर रहना और नृत्य-गान आदि से दूर रहने पर बल दिया।
- **त्रिरत्न** : बुद्ध, धम्म एवं संघ।
- **त्रिपिटक** : इसका शाब्दिक अर्थ ''तीन टोकरी'' है। ये हैं—सुत्त, विनय एवं अभिधम्म पिटक।
- ज्ञान प्राप्ति के उपरांत महात्मा बुद्ध 45 वर्षों तक धर्मोपदेश (वर्षा ॠतु को छोड़कर) देते रहे।
- बुद्ध ने जीवन का अधिकांश समय (लगभग 25 वर्ष) श्रावस्ती में ही व्यतीत किया था। यहीं पर इनके सर्वाधिक अनुयायी थे।
- बुद्ध की मृत्यु 80 वर्ष की अवस्था 483 ई.पू. में चुन्द नामक एक कर्मकार के हाथों शुकर मांस खाने के कारण पावा (कुशीनारा) में हुई थी।
- बौद्ध धर्म के विकास में चार बौद्ध संगीतियों का महत्त्वपूर्ण स्थान है, जो महात्मा बुद्ध की मृत्यु के बाद आयोजित की गयी थीं।
- नालन्दा विश्वविद्यालय का संस्थापक कुमारगुप्त प्रथम था।
- महायान शाखा के अन्तर्गत माध्यमिक (शून्यवाद, संस्थापक नागार्जुन) तथा विज्ञानवाद (योगाचार, संस्थापक मैत्रेयनाथ) शाखा का विकास हुआ।
- नागार्जुन की पुस्तक—प्रज्ञापारमिता सूत्र।
- महायान शाखा के अन्तर्गत बुद्ध की पहली मूर्ति बनी। बुद्ध को ईश्वर के रूप में पूजने की परम्परा इसी शाखा ने आरंभ की।
- नागार्जुन को भारत का आइंस्टीन कहा जाता है। भारत के काण्ट-धर्मकीर्ति को कहा जाता है।
- महायान शाखा में स्वर्ग-नरक की अवधारणा है।
- महायान शाखा के पोषक शासक थे—कनिष्क, हर्षवर्धन इत्यादि।
- महायान में बोधिसत्व की अवधारणा का विकास हुआ। बोधिसत्व का तात्पर्य उस अवस्था से लिया गया है, जिसमें बुद्धत्व की प्राप्ति के बाद व्यक्ति सारी दुनिया के लोगों को मोक्ष प्राप्ति के उपदेश देने में संलग्न हो जाता है।
- महायान का तात्पर्य बड़ी सवारी तथा हीनयान का तात्पर्य छोटी सवारी होता है।
- बंगाल का कट्टर शैव शासक शशांक था जिसने उस बोधि वृक्ष (पीपल वृक्ष) को कटवा दिया था, जिसके नीचे बुद्ध को ज्ञान की प्राप्ति हुई थी।
- सातवीं सदी के आसपास वज्रयान नामक एक और शाखा बनी जिसकी पढ़ाई नालंदा विश्वविद्यालय में होती थी। इसका गवर्नर धर्मपाल था।
- वर्ण व्यवस्था पर जैन धर्म की अपेक्षा बौद्ध धर्म ज्यादा कट्टर (क्रांतिकारी) तरीके से प्रहार करता है। अतः बौद्ध धर्म ज्यादा क्रांतिकारी है।
- बौद्ध धर्म को विभिन्न शासकों का संरक्षण प्राप्त था।
- बौद्ध धर्म को आम जनता द्वारा स्वीकार किया गया।
- बौद्ध संघ द्वारा पालि भाषा में अपनी बातों का जनता के सामने रखना।
- बौद्ध धर्म के अनुसार मोक्ष प्राप्ति के लिये मृत्यु होना जरूरी नहीं है, मोक्ष इस जीवन में भी संभव है। बौद्ध धर्म मृत्यु को महापरिनिर्वाण मानता है।
- बौद्ध धर्म पुनर्जन्म में विश्वास करता है।

महाजनपद युग

i. छठी शताब्दी ई. पू. में सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलन चले।
ii. छठी शताब्दी ई. पू. में जैन व बौद्ध धर्म का उदय हुआ।
iii. दूसरी नगरीय या नागरिक क्रान्ति हुई, जिसके अन्तर्गत 16 महाजनपदों का आविर्भाव हुआ, इनमें मगध महाजनपद आगे चलकर साम्राज्य बना।
iv. लोहे का उपयोग प्रारंभ हुआ। (कार्बोराइज्ड लोहे का व्यापक उपयोग शुरू हुआ।)
v. पञ्चमार्क सिक्कों का प्रचलन।
vi. कृषि क्रान्ति।

छठी शताब्दी ई. पू. में महाजनपदों के बारे में जानकारी देने वाले मुख्य साधन

- बौद्ध साहित्य के अंतर्गत — अंगुत्तर निकाय।
- जैन साहित्य के अर्न्तगत — भगवती सूत्र।

- बौद्ध ग्रन्थ अंगुत्तर निकाय का वर्णन महत्त्वपूर्ण माना जाता है। अंगुत्तर निकाय के अनुसार 16 महाजनपद निम्न थे :
  (1) काशी, (2) कोशल, (3) अंग, (4) मगध,
  (5) मल्ल, (6) वज्जि, (7) चेदि, (8) कम्बोज,
  (9) शूरसेन, (10) गान्धार, (11) अवन्ति, (12) पाञ्चाल,
  (13) कुरू, (14) अश्मक, (15) वत्स, (16) मत्स्य।
- इन महाजनपदों में कुछ गणतान्त्रिक महाजनपद थे, तो कुछ राजतन्त्रात्मक महाजनपद।
- **गणतन्त्र महाजनपद**—ऐसे राज्यों का शासन राजा द्वारा न होकर गण अथवा संघ द्वारा होता था। इस प्रकार के दो महाजनपद प्रमुख थे—वज्जि तथा मल्ल। वज्जि आठ राज्यों का संघ था। इसमें वज्जि भी एक राज्य (महाजनपद) था तथा उसके अलावा वैशाली, मिथिला, कुण्डग्राम भी प्रसिद्ध थे।
- **राजतंत्र महाजनपद**—ऐसे महाजनपद राजतंत्रात्मक महाजनपद कहलाते थे जिनका अध्यक्ष राजा होता था। इस प्रकार के राज्य थे—अंग, मगध, चेदि, वत्स, कोशल, शूरसेन, अश्मक, गन्धार इत्यादि। राजतंत्र वाले महाजनपदों की संख्या-14 थी।
- वर्तमान वाराणसी तथा उसका समीपवर्ती क्षेत्र ही प्राचीन समय में काशी महाजनपद कहलाता था।
- उत्तर में वरुणा तथा दक्षिण में असी नदियों के बीच में वाराणसी नगरी इसकी राजधानी थी।
- आगे चलकर काशी मगध के विस्तारवाद में आ गया। दूसरे शब्दों में, मगध ने काशी पर अधिकार कर लिया।
- मगध राज्य, वर्तमान बिहार के पटना व उसके आसपास के जिलों में अवस्थित था।
- मगध राज्य, कालान्तर में यह उत्तर भारत का सबसे शक्तिशाली राज्य बना।
- मगध के क्षेत्रों पर सर्वप्रथम हर्यक वंश का शासन स्थापित हुआ।
- मगध के क्षेत्रों में प्राकृतिक संसाधनों की अधिकता थी।
- मगध प्रमुख व्यापारिक मार्ग पर अवस्थित था।
- मध्य व निम्न मध्य गंगा घाटी का उपजाऊ क्षेत्र मगध के पास था।
- रोपनी की तकनीक, सिक्कों का प्रचलन व मगध के सम्राटों का महत्त्वाकांक्षी होना इसके विकास का कारण था।
- हर्यक वंश का संस्थापक बिम्बिसार था जो महात्मा बुद्ध का मित्र व उनका संरक्षक था। बिम्बिसार ने अपनी राजधानी राजगृह या गिरिव्रज को बनाया। उसने श्रेणिय (सेना रखनेवाला) की उपाधि धारण की। उसने तीन नीतियों को महत्त्व दिया- कूटनीति, वैवाहिक नीति व आक्रमण नीति। कूटनीति संबंधों के अंतर्गत गान्धार नरेश पौष्कर सारीन के पास अपना दूत भेजकर उसको मित्र बनाया। वैवाहिक नीतियों के अन्तर्गत उसने तीन विवाह किये—लिच्छवी की राजकुमारी चेल्लना से, कोशल की कन्या महाकोशला देवी से (महाकोशला देवी से विवाह के बाद उसे काशी दहेज में प्राप्त हो गया) तथा मद्र देश की राजकुमारी क्षेमा (या खेमा) से। फलतः उसका पड़ोसी महाजनपदों से संबंध मधुर हो गया। आक्रमण नीति के अन्तर्गत उसने अंग के शासक ब्रह्मदत की हत्या कर अंग को मगध साम्राज्य के अन्तर्गत मिला लिया।

मगध

(तीन वंशों का शासन)

- हर्यक वंश—बिम्बिसार, अजातशत्रु, उदायिन।
- शिशुनाग वंश—शिशुनाग, कालाशोक
- नन्द वंश—महापद्मनन्द, घननन्द।

- बिम्बिसार के बाद अजातशत्रु शासक बना, उसने कुणिक की उपाधि धारण की। अजातशत्रु ने अपने मंत्री वस्सकार की सहायता से लिच्छवियों में फूट डलवाकर उन्हें पराजित कर वैशाली को मगध साम्राज्य में मिला लिया। उसने राजगृह की किलेबन्दी भी कराई थी। वह दो प्रकार के हथियारों का प्रयोग करता था—रथमुसल व महाशिलाकंटक।
- इसके बाद उदायिन शासक बना। इसने पाटलिपुत्र को मगध साम्राज्य की राजधानी बनाया। उदायिन जैन मतावलंबी था।
- इसके बाद शिशुनाग वंश की स्थापना हुई। जिसने कुछ समय तक मगध साम्राज्य पर अपनी सत्ता स्थापित किये रखा।

छठीं शताब्दी ई. पू. के अन्य महत्त्वपूर्ण रूढ़िवादी मत

प्रतिपादक	मत (सम्प्रदाय)
पुरण कश्यप	अक्रियवादी
मक्खलिपुत्र गोशाल	आजीवक सम्प्रदाय के संस्थापक
संजय	अनिश्चयवादी और संदेहवादी
पुकुध कच्चायन	कर्म व पुनर्जन्म पर विश्वास नहीं था

जैन धर्म

- जैन धर्म को बौद्ध धर्म की भांति एक प्रतिक्रियावादी धर्म माना जाता है।
- जैन धर्म के प्रवर्तक ऋषभदेव थे, जिनका उल्लेख ऋग्वेद में मिलता है।

जैन धर्म के तीर्थंकरों के नाम इस प्रकार हैं–

(1) ऋषभदेव या आदिनाथ, (2) अजितनाथ, (3) सम्भव नाथ, (4) अभिनन्दन, (5) सुमति, (6) पद्मप्रभु, (7) सुपार्श्व, (8) चन्द्रप्रभा, (9) पुष्पदन्त, (10) शीतल, (11) श्रेयान्स, (12) वासुपूज्य, (13) विमल, (14) अनन्त, (15) धर्म, (16) शान्ति, (17) कुन्थु, (18) अरह, (19) मल्लिनाथ, (20) मुनिसुब्रत, (21) नेमिनाथ, (22) अरिष्टनेमि, (23) पार्श्वनाथ, (24) महावीर।

- महावीर का जन्म 540 ई. पू. में वैशाली के समीप कुण्डग्राम में क्षत्रिय परिवार में हुआ था। महावीर के पिता सिद्धार्थ कुण्डग्राम (ज्ञातृक क्षत्रिय) के प्रधान थे, जो वज्जि संघ के अन्तर्गत था। राजा सिद्धार्थ का विवाह वैशाली की लिच्छवी राजकुमारी त्रिशला से हुआ था, जो लिच्छवी शासक चेटक की बहन थी। सिद्धार्थ-त्रिशला के छोटे पुत्र का नाम वर्धमान था, जो भविष्य में महावीर नाम से प्रसिद्ध हुआ।
- जैन परम्परा के अनुसार, वर्धमान पहले ब्राह्मण ऋषभदत्ता की पत्नी देवनंदा के गर्भ में आये, परन्तु अभी तक के समस्त तीर्थंकर क्षत्रिय वंश में उत्पन्न हुए थे, इसलिये इन्द्र ने वर्धमान को देवनंदा के गर्भ से हटाकर त्रिशला के गर्भ में स्थापित किया।
- वर्धमान का विवाह यशोदा नामक कन्या से हुआ, जिससे उन्हें एक पुत्री प्रियदर्शना की प्राप्ति हुई।
- प्रियदर्शना का विवाह जामालि से हुआ था।

- 30 वर्ष की अवस्था में वर्धमान ने अपने अग्रज नन्दिवर्धन से आज्ञा प्राप्त कर गृह त्याग कर दिया। बारह वर्षों की कठोर तपस्या के पश्चात् जुम्भिक ग्राम के निकट ऋजुपालिका नदी के तट पर शाल वृक्ष के नीचे उन्हें ज्ञान (कैवल्य) की प्राप्ति हुई।
- ज्ञान प्राप्ति के बाद वे जिन (इंद्रियों का विजेता) केवलिन, निग्रन्थ (बंधिन-रहित), अर्हत (योग्य), महावीर (पराक्रमी) आदि कहलाये।
- जिन के आधार पर महावीर के अनुयायियों को जैन कहा गया।

धर्म प्रचार

- महावीर को 42 वर्ष की अवस्था में ज्ञान प्राप्त हुआ था। उन्होंने जीवन के अन्तिम 30 वर्ष धर्म-प्रचार में ही व्यतीत किये। नग्न रहने के कारण महावीर जनसाधारण के अत्यधिक निकट नहीं आ सके, तथापि उन्होंने लोगों को प्रभावित किया। राजपरिवार से सम्बन्धित होने कारण महावीर को धर्म प्रचार में पर्याप्त सहायता मिली।
- ज्ञान प्राप्ति के बाद महावीर ने अपना पहला उपदेश राजगृह में विपुचल पहाड़ी के पास दिया।

महावीर के नाम
केवलिन, निग्रन्थ, नाथपुत्त, जिन, अर्हत

- इनका पहला शिष्य इनका दामाद जामालि बना।
- चम्पा नरेश दधिवाहन की पुत्री चन्दना महावीर स्वामी की प्रथम भिक्षुणी बनी।
- महावीर के प्रधान शिष्य 11 थे, जिन्हें 'गणधर' कहा जाता था।
- महावीर स्वामी ने धर्म प्रचार की भाषा प्राकृत को अपनाया जबकि महात्मा बुद्ध ने पालि भाषा में धर्म प्रचार किया था।
- महावीर ने अनेक राज्यों में स्वयं जाकर धर्म प्रचार किया। जैन धर्म के प्रचार के लिये उन्होंने पावापुरी में जैन संघ की भी स्थापना की थी। प्रारंभ में महावीर अकेले ही धर्म प्रचार करते थे, लेकिन बाद में उनके शिष्य भी उनके साथ रहकर धर्म प्रचार करने लगे, जिनमें मुख्य थे—आनंद, सुरदेव, कुण्डकोलिय, कामदेव आदि।
- महावीर की मृत्यु 72 वर्ष की अवस्था में पावा (बिहार) के मल्ल शासक शस्तिपाल (या हस्तिपाल) के दरबार में हुई।
- महावीर स्वामी की मृत्यु के बाद जैन संघ का अध्यक्ष सुधर्मन बना।

जैन धर्म के सिद्धांत

- महावीर स्वामी जैन तीर्थंकर परम्परा के चौबीसवें व अन्तिम तीर्थंकर थे, इन्हें जैन धर्म का वास्तविक संस्थापक माना जाता है। उल्लेखनीय है कि जैन धर्म के संस्थापक आदिनाथ (पहले तीर्थंकर) को माना जाता है।

कर्म सिद्धांत

- जैन धर्म में कर्म के सिद्धांत का विश्लेषण किया गया है। व्यक्ति इस सांसारिक बंधनों से इसलिये जकड़ा रहता है, क्योंकि कर्म का जीव की ओर बहाव (आश्रव) होता है। कर्मों का जीव की ओर बहाव रुक जाना 'संवर' कहलाता है। जबकि पहले से किये गये कर्म फल का रुक जाना निर्जरा कहलाता है।

जैन धर्म में त्रिरत्न कहा गया है–

i. सम्यक् दर्शन—तीर्थंकरों के उपदेशों में विश्वास।

ii. सम्यक् ज्ञान—जैन धर्म के सिद्धांतों का ज्ञान।

iii. सम्यक् चरित्र—अच्छे कार्यों को करने का निर्देश।

- पार्श्वनाथ (तेइसवें तीर्थंकर) ने जैन धर्म के पञ्च महाव्रतों में प्रथम चार महाव्रत का प्रतिपादन किया था। पांचवें महाव्रत का प्रातिपादन महावीर द्वारा किया गया।

i. अहिंसा—किसी भी प्रकार की हिंसा नहीं करना।

ii. सत्य—हमेशा सत्य बोलना।

iii. अस्तेय—चोरी न करना।

iv. अपरिग्रह—जरूरत से ज्यादा धन संग्रह नहीं करना।

v. ब्रह्मचर्य—ब्रह्मचर्य का पालन करना। यह महावीर स्वामी द्वारा जोड़ा गया।

- गृहस्थ जीवन में रहनेवाले जैनियों के लिये पञ्च महाव्रतों में कठोरता में कमी के कारण इन्हें अणुव्रत कहा गया।
- सल्लेखना के अंतर्गत जैन धर्म में निर्जल व निराहार रहकर प्राण त्याग किया जाता है। मौर्य शासक चन्द्रगुप्त मौर्य ने अपना प्राण त्याग सल्लेखना पद्धति से ही किया था।
- जैन विद्वान हेमचन्द्र के ग्रन्थ परिशिष्ट पर्वन के अनुसार मगध में 12 वर्ष के भयंकर अकाल के समय भद्रबाहु के नेतृत्व में जैन भिक्षुओं का एक दल कर्नाटक के पास श्रवणबेलगोला चला गया। जबकि स्थूलभद्र के नेतृत्व में जैन भिक्षुओं का एक दल मगध में रुका रहा। भद्रबाहु के वापस लौटने पर जैन धर्म दो भागों में विभाजित हुआ। एक भाग के दल प्रमुख स्थूलभद्र थे, जबकि दूसरे भाग के दल प्रमुख भद्रबाहु थे।
- वस्त्र पहनने और न पहनने के विवाद पर प्रथम जैन संगीति (बैठक) हुई।
- स्थूलभद्र के नेतृत्व ने दिगंबर (नग्न रहने वाले) भिक्षुओं का एक दल बना।
- भद्रबाहु के नेतृत्व में श्वेताम्बर (श्वेत वस्त्र पहनने वालों) का एक दल बना।

प्रथम जैन संगीति

- अध्यक्ष—स्थूलभद्र
- आयोजन स्थल—पाटलिपुत्र
- समकालीन शासक—चन्द्रगुप्त मौर्य
- इस संगीति के परिणामस्वरूप जैन धर्म श्वेताम्बर व दिगम्बर जैसी दो शाखाओं में बंट गया।
- इस संगीति में 12 अंग के रूप में जैन धर्म के शिक्षाओं व सिद्धांतों का संकलन किया गया।

दूसरी जैन संगीति

- आयोजन वर्ष—512 ईस्वी।
- आयोजन स्थल—वल्लभी (गुजरात)।
- अध्यक्ष—देवाधिधर्मिणी क्षमाश्रमण।
- **जैन साहित्य** : जैन साहित्य को "आगम" (इसका अर्थ होता है- सिद्धांत) कहा जाता है। इसमें 12 अंग, 12 उपांग।

श्वेताम्बर व दिगम्बर में अंतर

श्वेताम्बर	दिगम्बर
इस सम्प्रदाय के मुखिया स्थूल भद्र थे।	इस सम्प्रदाय के मुखिया भद्रबाहु थे।
ये श्वेत वस्त्र पहनते थे	ये नग्न रहते थे
ये महावीर स्वामी को विवाहित मानते थे	ये महावीर स्वामी को विवाहित नहीं मानते थे
इनके अनुसार 19वें तीर्थंकर मल्लिनाथ स्त्री थे।	इनके अनुसार मल्लिनाथ पुरुष थे।

- भद्रबाहु ने 'कल्पसूत्र' लिखा था।
- प्रभाचन्द्र ने ''प्रमेय कमलमार्तण्ड'' की रचना की थी।
- पार्श्वनाथ पहले ऐतिहासिक तीर्थंकर माने जाते हैं।
- पार्श्वनाथ ने निग्रन्थ सम्प्रदाय (जैन धर्म का प्राचीन रूप) की स्थापना की। पुष्पचुला नामक स्त्री निग्रन्थ सम्प्रदाय की स्त्री संघ की अध्यक्षा थी।

जैन व बौद्ध धर्म में अन्तर

जैन धर्म	बौद्ध धर्म
-बौद्ध धर्म की तुलना में जैन धर्म प्राचीन है	यह धर्म जैन धर्म से बाद का है
-जैन आत्मवादी है	बौद्ध धर्म अनात्मवादी है
-जैन धर्म काया क्लेश पर विश्वास करता है	यह मध्यम मार्गी है
-यह बौद्ध धर्म की तुलना में वर्ण व्यवस्था पर ज्यादा जोरदार तरीके से प्रहार नहीं कर पाया	बौद्ध धर्म वर्ण व्यवस्था पर क्रांतिकारी प्रहार करता है।
-जैन धर्म ज्यादा अहिंसक है	जैन धर्म की तुलना में कम अहिंसक है

- जैन शब्द की उत्पत्ति 'जिन' से हुई है, जिसका तात्पर्य विजेता होता है। 42 वर्ष की आयु में जब महावीर को कैवल्य (ज्ञान) की प्राप्ति हुई तो वे जिन या विजेता कहलाये।
- महावीर स्वामी के पहले जैन धर्म के 23 तीर्थंकर हुए। दूसरे शब्दों में, जैन धर्म में कुल 24 तीर्थंकर थे।
- तीर्थंकर का तात्पर्य है, जो व्यक्ति अन्य व्यक्तियों को रास्ता बताकर भवसागर से पार कराये।
- **वैष्णव धर्म** : वैष्णव धर्म को पहले भागवत धर्म के नाम से भी जाना जाता था। इसका प्रचलन सर्वप्रथम मथुरा के समीपवर्ती क्षेत्रों में हुआ। वैष्णव लोग अहिंसा पर बल देते हैं। मांस भक्षण को पाप मानते हैं और विष्णु की भक्ति को मोक्ष का परम साधन मानते हैं। अवतारों की कल्पना इस धर्म का एक महत्त्वपूर्ण तत्व हैं। वैसे तो 24 अवतार माने गए हैं किन्तु 10 प्रमुख (दशावतार) हैं—कूर्म, मत्स्य, वाराह, नरसिंह, वामन, परशुराम, राम (रामचन्द्र), बलराम, बुद्ध और कल्कि। ऐसा विश्वास है कि कलयुग में कल्कि अवतार होगा। कृष्ण साक्षात् विष्णु थे और उन्हें अवतारों की श्रेणी में नहीं रखा जाता है।
- **शैव धर्म** : वैष्णव धर्म के साथ ही साथ शैव धर्म का भी विकास हुआ। भगवान शिव इसी धर्म के अनुयायियों के उपास्य हैं। इस धर्म के विकास की प्रक्रिया में कुछ सम्प्रदायों—शैव, पाशुपत, कापालिक और कालामुख का विकास हुआ। शैव सिद्धांत के अनुसार सृष्टि के मूल तत्व—पति (शिव), पशु (जीवात्मा), पाश (जीवात्मा को बांधने वाला तत्व) है। शैव धर्म के अनुसार पाश चार प्रकार (मल, कर्म, माया और रोध) के हैं, जबकि 4 पाद हैं—विद्या, क्रिया, योग और चर्या।

प्रमुख तीर्थंकर	उनके प्रतीक
ऋषभदेव	बैल (वृषभ)
अजितनाथ	हाथी
नेमिनाथ	नीला कमल
अरिष्ट नेमी	शंख
पार्श्वनाथ	सर्प फण
महावीर	सिंह (शेर)

जैन व बौद्ध धर्म में समानताएं

- दोनों धर्म अनिश्वरवादी है।
- दोनों धर्म ब्राह्मण धर्म के विरोधी हैं।
- दोनों धर्म निवृत मार्ग का अनुसरण करने पर बल देते हैं।
- दोनों धर्म के प्रवर्तक क्षत्रिय वर्ण के थे व दोनों का संबंध राजपरिवार से था।

महत्त्वपूर्ण प्रश्न-उत्तर और तथ्य

- मृगदाव (सारनाथ) में बुद्ध द्वारा दिया गया प्रथम उपदेश किस नाम से जाना जाता है —**धर्मचक्रप्रवर्तन**
- सारनाथ में पहला प्रवचन किसने दिया था ?—**महात्मा बुद्ध ने**
- बौद्ध तथा जैन, दोनों धर्म विश्वास करते हैं —**कर्म तथा पुनर्जन्म के सिद्धांत में**
- किस बौद्ध ग्रंथ में संघ जीवन के नियम प्राप्त होते हैं? —**विनय पिटक**
- बुद्ध के जीवन की चार प्रमुख घटनाओं का संबंध किन स्थानों से है?

घटना		स्थान
जन्म	-	लुम्बिनी
ज्ञान प्राप्ति	-	बोधगया
प्रथम प्रवचन	-	सारनाथ
निधन	-	कुशीनगर

- जैन धर्म के प्रवर्तक महावीर स्वामी का जन्म स्थान था —**कुण्डग्राम**
- किस नगर में प्रथम बौद्ध सभा आयोजित की गई थी? —**राजगीर**
- अशोक के शासनकाल में तृतीय बौद्ध संगति किस नगर में आयोजित की गई थी ? —**पाटलिपुत्र**
- महावीर जैन की मृत्यु किस नगर में हुई? —**पावापुरी**
- कनिष्क के शासनकाल में बौद्ध सभा किस नगर में आयोजित की गई थी? —**कश्मीर**
- महात्मा बुद्ध ने पहला धर्मचक्रप्रवर्तन किस स्थान पर दिया था —**सारनाथ**
- किस शासक ने द्वितीय बौद्ध सभा का आयोजन किया था —**कालाशोक**
- सुमेलित करें—

घटना		प्रतीक
जन्म	-	कमल
प्रथम प्रवचन	-	धर्मचक्रप्रवर्तन
महाबोधि	-	बोधि वृक्ष
त्याग	-	घोड़ा

- सुमेलित करें—

वाद		प्रवर्तक
अद्वैतवाद	-	शंकराचार्य
विशिष्ट द्वैतवाद	-	रामानुजाचार्य
द्वैतवाद	-	माधवाचार्य

द्वैताद्वैतवाद - निम्बार्काचार्य
शुद्धाद्वैतवाद - वल्लभाचार्य

- कश्मीर में कनिष्क के शासनकाल में आयोजित बौद्ध संगीति की अध्यक्षता की थी **—वसुमित्र**
- बराबर की गुफाओं का आश्रय के रूप में उपयोग किया था **—आजीविकों ने**
- भागवत धर्म के प्रवर्तक थे—**कृष्ण** (600 ई.पू. - वृष्णि कबीला)
- किस ग्रंथ में सर्वप्रथम देवकी पुत्र कृष्ण का वर्णन है? **—छांदोग्य उपनिषद्**
- 'मिलिन्दपन्हो' राजा मिलिन्द और किस बौद्ध भिक्षु के मध्य संवाद के रूप में है? **—नागसेन**
- नचिकेता और यम के बीच प्रसिद्ध संवाद उल्लिखित हैं **—कठोपनिषद् में**
- गौतम बुद्ध ने सर्वप्रथम अपना उपदेश दिया था **—सारनाथ में (धर्मचक्रप्रवर्तन)**
- बौद्ध ग्रंथों में उल्लिखित 'धर्म चक्र प्रवर्तन' है **—सारनाथ में दिया गया बुद्ध का प्रथम उपदेश**
- 'त्रिपिटक' क्या है **—बुद्ध के उपदेशों का संग्रह**
(त्रिपिटक- विनयपिटक, सुत्तपिटक तथा अभिधम्म पिटक पाली भाषा में रचित बुद्ध के उपदेशों का संग्रह है)
- चारों बौद्ध संगीतियों का सही कालक्रम है **—राजगृह, वैशाली, पाटलिपुत्र तथा कुंडलवन**
- एलोरा का गुहा मंदिर संबंधित है **—हिंदू, बौद्ध व जैन धर्म से**
- बुद्ध ने अपनी मृत्यु के पश्चात् बौद्ध संघ के नेतृत्व के लिए नामित किया था **—आनन्द को**
- गौतम बुद्ध का जन्म हुआ था **—563 ई.पू. (लुम्बिनी ग्राम)**
- भारत का सबसे बड़ा बौद्ध स्तूप है **—साँची स्तूप**
- गौतम बुद्ध का महापरिनिर्वाण (प्राण त्यागना) हुआ था **—कुशीनगर**
- बुद्ध किस वंश से संबंधित थे? **—शाक्य वंश**
- त्रिपिटक किस धर्म का पवित्र ग्रंथ है **—बौद्ध धर्म**
- अशोक ने तृतीय बौद्ध परिषद कहां बुलायी थी? **—पाटलिपुत्र**
- अजंता की चित्रकारी का विषय वस्तु संबंधित है? **—बौद्ध धर्म से**
- अजंता की चित्रकारी में क्या निरूपित किया गया है? **—जातक कथाएं**
- तमिल का गौरव ग्रंथ 'जीवन चिंतामणि' किससे संबंधित है? **—जैन धर्म से**
- जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर थे **—ऋषभदेव**

6. मौर्य-काल

महापद्मनंद मगध का सर्वाधिक शक्तिशाली नंद राजा था। महापद्मनंद के 8 उत्तराधिकारी हुए। इस वंश का अंतिम शासक धननंद था। अपने गुरु चाणक्य की सहायता से धननंद को पराजित कर जिस व्यक्ति ने मौर्य वंश की स्थापना की उसका नाम यूनानी लेखकों ने सैन्ड्रोकोट्स (सर्वप्रथम सर विलियम जोंस ने उस सैन्ड्रोकोट्स की पहचान चंद्रगुप्त मौर्य से की) बताया। विशाखदत्त कृत ''मुद्राराक्षस'' में चंद्रगुप्त मौर्य के लिए 'वृषल'' (निम्न कुल) उपनाम का प्रयोग किया गया है, जबकि बौद्ध एवं जैन साहित्य के ग्रंथ उसे क्षत्रिय कुल में उत्पन्न बताते हैं। 305 ई. पू. में चन्द्रगुप्त ने पश्चिमोत्तर भारत में यूनानी शासक सैल्यूकस निकेटर को पराजित कर एरिया (हेरात), अराकोसिया (कंधार), जेड्रीसिया, पेरोपेनिसडाई (काबुल) के भू-भागों को अधिकृत कर विशाल भारतीय साम्राज्य की स्थापना की। बिन्दुसार (298 ई.-273 ई. पू.) चंद्रगुप्त मौर्य का पुत्र व उत्तराधिकारी था, जिसे यूनानी लेखक ''अमित्रोचेट्स'' कहते थे। बिन्दुसार आजीवक सम्प्रदाय का अनुयायी था। जैन अनुश्रुति के अनुसार अशोक (273 ई. पू. - 232 ई. पू.) ने बिन्दुसार की इच्छा के विरुद्ध मगध का शासन अपने अधिकार में कर लिया था। राज्याभिषेक से पहले अशोक उज्जैन का राज्यपाल था। अशोक बौद्ध धर्म का अनुयायी था। संसार के इतिहास में अशोक की प्रसिद्धि का कारण उसकी विजयें नहीं, अपितु ''धम्म'' है।

पिछले 15 वर्षों के SSC के प्रश्न पत्रों में ''मौर्य-काल''

- लोगों से सीधे संपर्क रखने वाला/सीधे बात करने वाला राजा कौन था? **—अशोक**
(स्टेनोग्राफर (ग्रेड-डी) परीक्षा, 1997)
- अशोक ने अपने सभी अभिलेखों में एकरूपता से किस प्राकृत भाषा का प्रयोग किया है? **—मगधी**
(मैट्रिक स्तर (PT) परीक्षा, 2000)
- बिन्दुसार किस वंश का एक शासक था? **—मौर्य वंश**
(मैट्रिक स्तर (PT) परीक्षा, 2000)
- सांची में स्थित विशालतम स्तूप किस काल का माना जा सकता है? **—मौर्य काल**
(सेक्शन ऑफीसर्स (कामर्शियल ऑडिट) परीक्षा, 2000)
- वह शासक कौन था, जिसने राजसिंहासन पर बैठने के लिए अपने पिता बिन्दुसार की हत्या की थी? **—अशोक**
(मैट्रिक स्तर (PT) परीक्षा, 2002)
- किस विदेशी यात्री ने भारत का दौरा सबसे पहले किया था? **—मेगस्थनीज**
(मैट्रिक स्तर (PT) परीक्षा, 2000)
- किस व्यक्ति का नाम ''देवनाम प्रियदर्शी'' भी था? **—मौर्य राजा अशोक**
(स्नातक स्तर (PT) परीक्षा, 2003)
- चन्द्रगुप्त मौर्य के प्रसिद्ध गुरु चाणक्य किस विद्या केंद्र से संबंधित थे? **—तक्षशिला**
(मैट्रिक स्तर (PT) परीक्षा, 2008)
- मगध के उत्थान के लिए कौन सा प्रथम शासक उत्तरदायी था? **—बिम्बिसार**
(मैट्रिक स्तर (PT) परीक्षा, 2008)
- अशोक ने किस बौद्ध साधु से प्रभावित होकर बौद्ध धर्म अपनाया था? **—उपगुप्त**
(स्नातक स्तर (टियर-I) परीक्षा, 2010)

- चन्द्रगुप्त के दरबार में भेजा गया यूनानी राजदूत कौन था? **—मेगस्थनीज**
(स्नातक स्तर (टियर-I) परीक्षा, 2011)
- प्राचीन भारत का प्रसिद्ध शासक कौन था, जिसने अपने जीवन के अंतिम दिनों में जैन धर्म अपना लिया था? **—चन्द्रगुप्त**
(हायर सेकेण्डरी (10+2) स्तर परीक्षा, 2011)
- अशोक पर कलिंग युद्ध का प्रभाव कहां दिखायी देता है? **—शिलाओं पर उत्कीर्ण 13वें राज्यादेश**
(मल्टी टास्किंग स्टाफ (MTS) परीक्षा, 2013)
- एशिया के कई भागों में बौद्ध सम्प्रदाय का प्रसार करने के लिए अशोक ने किसे नियुक्त किया था? **—धर्म महामात्र**
(मल्टी टास्किंग स्टाफ (MTS) परीक्षा, 2013)
- किसने पहली बार भारत में सात जातियों का अस्तित्व का स्वीकार किया? **—मेगस्थनीज**
(मल्टी टास्किंग स्टाफ (MTS) परीक्षा, 2013)
- इंडिका किसने लिखी है? **—मेगस्थनीज**
(मल्टी टास्किंग स्टाफ (MTS) परीक्षा, 2013)
- किस वंश में कौटिल्य का वर्णन मिलता है? **—मौर्य**
(मल्टी टास्किंग स्टाफ (MTS) परीक्षा, 2013)
- मौर्य वंश के तत्काल बाद किस वंश ने आकर मगध राज्य पर शासन किया? **—शुंग**
(संयुक्त हायर सेकण्डरी (10+2) स्तर परीक्षा, 2013)
- कलिंग के विरुद्ध अशोक के अभियान की जानकारी का मुख्य स्रोत क्या है? **—शिलालेख XIII**
(केन्द्रीय पुलिस संगठन (CPO) एस.आई.परीक्षा, 2013)
- कौन सा राजवंश मौर्य के बाद आया? **—शुंग**
(कांस्टेबिल (GD) भर्ती परीक्षा, 2013)

विशिष्ट तथ्य : मौर्य साम्राज्य

- मौर्य वंश का संस्थापक चन्द्रगुप्त मौर्य था। उसने मगध के नन्दवंशीय शासक घननन्द को मारकर अपनी सत्ता स्थापित की थी।
- मौर्य वंश की जानकारी के मुख्य स्रोतों में पुराण, कौटिल्य रचित अर्थशास्त्र, क्षेमेन्द्र की वृहत्कथामंजरी, विशाखदत्त की मुद्राराक्षस, सिंहली साहित्य दीपवंश तथा महावंश, मेगस्थनीज की इंडिका, अशोक के अभिलेख, रूद्रदामन का जूनागढ़ अभिलेख हैं।
- पुराणों के अनुसार मौर्यों ने कुल 137 वर्षों तक शासन किया।
- भारत में प्रचलित पहला सिक्का आहत सिक्का कहलाता है जिसका प्रयोग पांचवीं शताब्दी ई. पू. (बौद्ध युग से) से होने लगा। आहत सिक्के का व्यापक स्तर पर पहली बार प्रयोग मौर्य काल में किया गया। आहत सिक्कों पर वृक्ष, सूर्य, चन्द्रमा आदि जैसे प्रतीकों को अंकित किया जाता था। मौर्य काल में प्रचलित आहत सिक्का चाँदी का 'पण' (3/4 तोले के बराबर) था। इसके अलावा आहत सिक्कों में कार्षापण माषक व ककणी भी थे।
- मौर्य काल में लोहे का व्यापक प्रयोग आरंभ हो गया था। उत्तरी श्याम चमकीले मृद्भाण्ड (Northern Black Polished Ware, N.B.P.W.) का व्यापक पैमाने पर प्रयोग मौर्य काल में होने लगा।

राजनैतिक इतिहास

- मौर्य वंश का संस्थापक चन्द्रगुप्त मौर्य था। वह भारत का प्रथम सम्राट था, जिसने भारत में राजनीतिक एकता का सूत्रपात किया।

चन्द्रगुप्त मौर्य

- यूनानी लेखकों यथा : स्ट्रेबो, एरियन व जस्टिन ने चन्द्रगुप्त मौर्य को अपने ग्रन्थों में सेन्ड्रोकोट्स, जबकि प्लुटार्क ने उसे एण्ड्रोकोट्स कहा है।
- चन्द्रगुप्त मौर्य के चन्द्रगुप्त नाम का उल्लेख रूद्रदामन के जूनागढ़ अभिलेख में मिलता है।
- कौटिल्य या चाणक्य नामक ब्राह्मण की सहायता से चन्द्रगुप्त मौर्य ने पंजाब प्रांत के यूनानी गवर्नर युडेमस तथा सिकंदर के उत्तराधिकारी सेल्यूकस को पराजित किया।
- चन्द्रगुप्त एवं सेल्युकस के बीच संधि हुई। इस संधि के परिणामस्वरूप चन्द्रगुप्त मौर्य को हेरात, कंधार तथा काबुल के प्रदेश प्राप्त हुए तथा उसकी शादी सेल्यूकस की पुत्री हेलेना से सम्पन्न हुई।
- मेगस्थनीज को दूत बनाकर सेल्यूकस ने चन्द्रगुप्त मौर्य के दरबार में भेजा।
- चन्द्रगुप्त मौर्य के शासनकाल में पाटलिपुत्र में स्थूलभद्र के नेतृत्व में प्रथम जैन संगीति का आयोजन किया गया था।
- चन्द्रगुप्त मौर्य द्वारा बनवाया गया राजप्रासाद (महल) काफी प्रसिद्ध था। यूनानी लेखक एरियन ने उसके राजप्रासाद की तुलना सूसा व एकबतना के महलों से की है।
- जीवन के अन्तिम समय में श्रवणबेलगोला (मैसूर, कर्नाटक) में चन्द्रगिरि नामक पर्वत पर सल्लेखना पद्धति द्वारा अपने प्राणों का परित्याग कर दिया।

मेगस्थनीज

- मेगस्थनीज सेल्यूकस निकेटर का दूत बनकर चन्द्रगुप्त मौर्य के दरबार में आया था। वह सात वर्षों तक भारत में रहा।
- मेगस्थनीज ने ''इण्डिका'' नामक ग्रंथ लिखा, जो अप्राप्य है। किन्तु अन्य विदेशी लेखकों ने उसकी कृति का उदाहरण दिया है।
- मेगस्थनीज के अनुसार—
  1. भारत में 58 नदियां हैं।
  2. तोते बच्चों की तरह बोलते हैं।
  3. मगध की राजधानी पाटलिपुत्र को ''पालिब्रोथा'' कहा।
  4. भारत में दास प्रथा नहीं।
  5. भारतीय समाज 7 वर्ग में विभाजित है।—कृषक, शिकारी व पशुपालक, व्यापारी-शिल्पी, योद्धा, दार्शनिक, निरीक्षक तथा मंत्री।
  6. पाटलिपुत्र नगर का प्रशासन पांच-पांच सदस्यों वाली छः समितियों द्वारा संचालित किया जाता था।
  7. पाटलिपुत्र नगर 80 स्टेडिया (16 किमी.) लम्बा तथा 15 स्टेडिया (3 किमी.) चौड़ा था।
  8. कौटिल्य (अर्थशास्त्र) के नाम का उल्लेख नहीं किया गया।
- चाणक्य का मूल नाम विष्णुगुप्त था। इनके पिता का नाम चणक था। इन्हें भारत का मैकियावेली भी कहा जाता है।
- ये चन्द्रगुप्त मौर्य के प्रधानमंत्री तथा मुख्य सलाहकार थे। इनकी कृति अर्थशास्त्र है, जिसका विषय राजव्यवस्था है।
- पंद्रह अधिकरणों में विभाजित अर्थशास्त्र में राज्य के सात अंग बताये गये हैं—स्वामी (राजा), अमात्य (मंत्री), मित्र, सेना, कोष, दुर्ग तथा जनपद।

- पुराणों में उन्हें द्विजर्षभ (श्रेष्ठ ब्राह्मण) कहा गया है।
- अर्थशास्त्र अधिकरणों, प्रकरणों व श्लोकों में विभाजित है।
- अर्थशास्त्र मुख्यतः सूत्र के गद्य रूप में है।
- युद्ध के मामले में कौटिल्य ने नैतिकता को गौण माना है।

तथ्य : रूद्रदामन का जूनागढ़ अभिलेख (150 ई. के लगभग का) पहला अभिलेख है, जिसमें पहली बार संस्कृत भाषा का प्रयोग किया गया है। इसी अभिलेख में चन्द्रगुप्त मौर्य के नाम का उल्लेख किया गया है। इस अभिलेख से मौर्य काल में निर्मित सुदर्शन झील के बारे में जानकारी मिलती है। सुदर्शन झील का निर्माण चन्द्रगुप्त मौर्य के शासनकाल में पुष्यमित्र वैश्य ने गुजरात के सौराष्ट्र प्रांत में सिंचाई व्यवस्था हेतु करवाया था।

- चन्द्रगुप्त मौर्य की मृत्यु के बाद उसका पुत्र बिन्दुसार मौर्य साम्राज्य की गद्दी पर बैठा। बिन्दुसार ने अपने पिता के साम्राज्य को अक्षुण्ण बनाये रखा।
- यूनानी लेखक बिन्दुसार को अमित्रोचेड्स कहते थे, जिसका संस्कृत में मतलब 'अमित्रघात' (शत्रुओं का नाश करने वाला) बताया गया है
- चाणक्य कुछ समय के लिये बिन्दुसार का भी प्रधानमंत्री रहा था, इसके बाद खल्लाटक प्रधानमंत्री बना।
- बिन्दुसार की मृत्यु 273 ई. पू. में हुई।

अशोक (269 ई. पू.-232 ई. पू.)

- बिन्दुसार की मृत्यु के बाद उसका पुत्र अशोक शासक बना।
- अशोक की माता का नाम सुभद्रांगी था।
- अपने युवराज काल में अशोक तक्षशिला और अवंति का गवर्नर रह चुका था। शासक बनने के पहले वह उज्जैन का गवर्नर था।
- अशोक का शासनकाल भारतीय इतिहास का अत्यंत गौरवमयी काल था, क्योंकि उस समय में अशोक ने अपनी क्षमताओं से भारत को सर्वतोन्मुखी उन्नति प्रदान की।
- अशोक की पत्नी यथा : असंधिमित्रा (अग्रमहिषी-पटरानी), कारूवाकी (इससे उत्पन्न पुत्र का नाम- तीवर था) थीं।
- अशोक के अभिलेखों में कारूवाकी व तीवर का उल्लेख मिलता है।
- अशोक की एक अन्य पत्नी का नाम नाग देवी था, जिससे उत्पन्न पुत्र-पुत्री का नाम महेन्द्र—संघमित्रा था।
- अशोक की दो पुत्रियां : संघमित्रा व चारूमती थीं। संघमित्रा भिक्षुणी बन गई थी, जबकि चारूमती की शादी नेपाल निवासी देवपाल से हुई थी।
- अशोक के अभिलेखों में उसे देवानांप्रिय (देवताओं का प्रिय) 'राजा' आदि उपाधियां दी गई हैं।
- मास्की व गुर्जरा लेखों में उसका नाम अशोक मिलता है।

कलिंग का युद्ध

- कलिंग का युद्ध अशोक ने अपने शासनकाल के आठवें वर्ष में किया था (261 ई. पू.)। कलिंग की राजधानी तोसली बनाई गई।
- इस समय कलिंग (उड़ीसा) का शासक कौन था, इस पर अशोक के अभिलेख मौन हैं। खारवेल के हाथीगुम्फा अभिलेख के अनुसार, इस समय कलिंग नंदराज के द्वारा शासित था।
- इस युद्ध की विभीषिका को देखकर अशोक का मन द्रवित हो गया और उसने लगभग $1^1/_2$ वर्षों के उपरांत बौद्ध धर्म ग्रहण कर लिया।

अशोक कालीन प्रान्त व उनकी राजधानियां

उत्तरापथ की राजधानी	तक्षशिला
दक्षिणापथ की राजधानी	सुवर्णगिरि
अवन्ति पथ की राजधानी	उज्जैन
मध्य क्षेत्र की राजधानी	पाटलिपुत्र
कलिंग की राजधानी	तोसली

- अशोक अपने चचेरे भाई सुशील या सुमन के पुत्र न्यग्रोध के प्रवचन को सुनकर बौद्ध धर्म की ओर आकर्षित हुआ था।
- अशोक को बौद्ध मत में उपगुप्त ने प्रशिक्षित किया।
- अशोक ने कश्मीर में वितस्ता नदी के किनारे 'श्रीनगर' नामक शहर की स्थापना की।
- अशोक को बौद्ध धर्म को संरक्षण प्रदान करने के कारण 'दूसरा बुद्ध' भी कहा जाता है।
- अशोक बौद्ध धर्म के स्थविर शाखा का अनुयायी था।
- अशोक के जीवन एवं उसके नीति-निर्देशन की जानकारी उसके शिलालेखों से प्राप्त होती है?

(1) लघु शिलालेख—कुल 14 हैं (+4 बाद में भी मिले हैं)। लघु शिलालेख के प्राप्ति स्थल हैं—

पश्चिमोत्तर क्षेत्र	कंधार
राजस्थान	वैराट भाब्रु (जयपुर में)
मध्य प्रदेश	गुर्जरा तथा रूपनाथपुर से
उत्तर प्रदेश	अहरौरा
बिहार	सासाराम
कर्नाटक	गविमठ, पालकी गुवण्डु, ब्रह्मगिरि, जटिंग रामेश्वरम् व सिद्धपुर
आंध्र प्रदेश	मास्की, रजुलानंदा व येरागुण्ड्डी से।

(2) वृहत शिलालेख भी दो प्रकार के हैं :

A. = श्रेणी में

B. = पृथक

A. = वृहद श्रेणी शिलालेखों की संख्या-14 है, लेकिन ये आठ स्थानों से प्राप्त हुए हैं।

कालसी	देहरादून
धौली	पुरी (ओडिशा)
जौगढ़	गंजाम, (ओडिशा)
मानसेहरा	पाकिस्तान
शहबाजगढ़ी	पाकिस्तान
गिरनार	सौराष्ट्र गुजरात
सोपारा	महाराष्ट्र
येरागुण्ड्डी	आंध्र प्रदेश के कुरनुल से

B वृहद पृथक शिलालेख धौली (उड़ीसा) व जौगढ़ (उड़ीसा) से मिले हैं।

- स्तम्भ लेख—ये अभिलेख भी दो प्रकार के हैं :

(i) सामान्य—सामान्य अभिलेखों की संख्या 07 है। ये 6 स्थलों से मिले हैं। ये स्थल हैं—रामपुरवा, लौरिया नन्दनगढ़, लौरिया अरराज, दिल्ली-टोपरा, मेरठ कौशाम्बी-I (प्रयाग)।

(ii) स्मारकीय—स्मारकीय अभिलेख दो जगहों से मिले हैं—निग्लियासागर (नेपाल) तथा रूम्मिनदेई।

- संघभेद अभिलेख—संघभेद अभिलेख सांची, सारनाथ तथा कौशाम्बी-II से प्राप्त होते हैं।
- गुहालेख—गुहालेख बराबर की पहाड़ियों (बोधगया, बिहार) से प्राप्त होते हैं।
- अशोक के अभिलेखों में उत्कीर्ण ब्राह्मी लिपि को सबसे पहले जेम्स प्रिन्सेप (1837) ने पढ़ा था।
- अशोक के अभिलेखों के अनुसार, उसने अपने शासनकाल के 14वें वर्ष में कनकमुनी स्तूप (निग्लियासागर) के आकार को दुगुना कराया था (255 B.C.)।
- अपने शासनकाल के 21वें वर्ष अशोक ने लुम्बिनी की यात्रा की थी। लुम्बिनी में भू-राजस्व की दर को 1/6 से घटाकर 1/8 कर दिया।
- अशोक के अभिलेख ब्राह्मी, खरोष्ठी, अरामेइक व ग्रीक भाषाओं में मिलते हैं।
- ब्राह्मी लिपि बांये से दांये लिखी जाती है, जबकि खरोष्ठी दाहिने से बांये।
- अशोक के सर्वाधिक अभिलेख प्राकृत भाषा में मिले हैं।
- अशोक के दूसरे वृहद शिलालेख से उसके सीमावर्ती शासकों चोल, पाण्ड्य, ताम्रपर्णी, सतीयपुत्र, केरलपुत्र व अन्तियोक की जानकारी मिलती है।
- अशोक के तृतीय वृहद शिलालेख से प्रादेशिक राजुक व युक्त के नियुक्ति की जानकारी मिलती है।
- धम्म महामात्र की नियुक्ति की जानकारी पांचवें वृहद शिलालेख से मिलती है।
- भाब्रु लेख में अशोक ने स्वयं को मगध का सम्राट कहा है।
- अशोक ने अपने 13वें वृहद शिलालेख में कलिंग विजय का वर्णन किया है। इसी शिलालेख में अशोक कुल पांच विदेशी राज्यों की चर्चा करता है।
- अशोक के बाद शासकों में दशरथ का नाम उल्लेखनीय है। उसने बिहार प्रांत के गया जिले में स्थित नागार्जुनी पहाड़ी पर आजीवक सम्प्रदाय के साधुओं के निवास के लिये तीन गुफाएं निर्मित कराई थीं। उसने अशोक की तरह ही 'देवानांपिय' की उपाधि धारण की थी।
- पुराणों के अनुसार मौर्य वंश का अन्तिम शासक वृहद्रथ था, जिसे बुद्धिहीन कहा गया है और जिसकी हत्या एक ब्राह्मण मौर्य सेनापति पुष्यमित्र शुंग ने कर दी और नये वंश, शुंग वंश की स्थापना की।

टिप्पणी :

- यूरोपीय इतिहास लेखक अशोक की तुलना रोमन सम्राट कान्स्टेनटाइन से करते हैं।
- अशोक को अकबर का पूर्वगामी कहा जाता है।
- अशोक को अभिलेख जारी करने की प्रेरणा फारस के शासक डेरीयस-I (दारा-I) से मिली थी।
- वर्ण व्यवस्था कठोर रूप लेकर मौर्य काल में जाति व्यवस्था में परिणत हो जाती है जिसका आधार जन्म था।
- मौर्य काल में ही सर्वप्रथम दासों को पहली बार कृषि संबंधी कार्यों में लगाया गया।
- दासों की स्थिति संतोषजनक थी। उन्हें सम्पत्ति रखने तथा बेचने का अधिकार प्राप्त था।
- मौर्य कालीन समाज में (अर्थशास्त्र के अनुसार) ब्राह्मण को सबसे ज्यादा सम्मान प्राप्त था। कौटिल्य ने शूद्रों को भी 'आर्य' कहा है।
- मौर्यकालीन अर्थव्यवस्था पर कौटिल्य के अर्थशास्त्र, मेगस्थनीज की इण्डिका तथा विशाखदत्त के मुद्राराक्षस से व्यापक प्रकाश पड़ता था। मौर्यकाल में राज्य आर्थिक रूप से समृद्ध था। राज्य की अर्थव्यवस्था कृषि, पशुपालन व व्यापार-वाणिज्य पर आधारित थी, जिनको सम्मिलित रूप से 'वार्ता' कहा जाता था। (वार्ता—वृति का साधन)।

मौर्यकालीन सिक्के

- सोने का सिक्का निष्क या सुवर्ण कहलाता था।
- चाँदी के सिक्के कार्षापण/धरण कहलाते थे।
- ताँबे के छोटे सिक्के काकणीं होते थे।
- इन सिक्कों पर स्वामित्व वाले चिह्न भी लगाये जाते थे।
- मौर्यकाल में ताम्रलिप्ति (पूर्वी तट) तथा भृगुकच्छ व सोपारा (पश्चिमी तट) महत्त्वपूर्ण बन्दरगाह थे।

तथ्य

- मौर्यों का राजकीय चिह्न संभवतः मयूर था।
- मौर्यकाल में मुख्य धर्म वैदिक, जैन, बौद्ध व आजीवक (सम्प्रदाय) थे।
- कल्हण (राजतरंगिणी का लेखक) अशोक को कश्मीर का प्रथम शासक मानता है।
- मौर्य काल में साधारण जनता की भाषा पाली थी। ब्राह्मी लिपि सम्पूर्ण भारत में प्रचलित थी।
- मौर्य काल में संभवतः जनगणना के निमित्त एक विभाग भी था।
- भड़ौच पूर्व का सबसे बड़ा व्यापारिक केन्द्र था।
- उद्योग क्षेत्र की संस्थाएं—श्रेणी कहलाती थीं। जातक ग्रन्थों में 18 प्रकार के श्रेणियों की चर्चा है।
- मौर्य काल में तक्षशिला उच्च शिक्षा का प्रसिद्ध केन्द्र था।
- कात्यायन ने अपने ग्रन्थ वार्तिका की रचना मौर्य काल में ही की। यह पाणिनी की अष्टाध्यायी के कठिन शब्दों का अर्थ बताने के लिए किया गया।
- अशोक के समय बुद्ध की मूर्तिपूजा का उल्लेख नहीं मिलता।
- मेगस्थनीज नदियों में गंगा को सबसे ज्यादा पवित्र बताता है।
- विशाखदत्त की रचना मुद्राराक्षस (संस्कृत रचना) प्रथम भारतीय जासूसी उपन्यास मानी जाती है।
- मौर्य शासकों ने कला के क्षेत्र में अभूतपूर्व योगदान दिया और अपने संरक्षण में कला व स्थापत्य को संरक्षण प्रदान किया।
- मौर्य सम्राट अशोक ने अनेक नगरों की स्थापना की। उसने कश्मीर में श्रीनगर व नेपाल में ललित पाटन की स्थापना कराई।
- पाटलिपुत्र के बारे में मेगस्थनीज कहता है कि इसका निर्माण समानान्तर चतुर्भुज के रूप में किया गया था? जो गंगा व सोन नदियों के संगम पर स्थित था।
- चन्द्रगुप्त मौर्य का राजप्रासाद (महल) लकड़ी का बना था। चीनी यात्री फाह्यान के अनुसार, मानो इस राजप्रासाद को देवदूतों ने बनाया हो।
- मौर्य काल में वास्तुकला के क्षेत्र में एक नवीन शैली का जन्मदाता अशोक था। अशोक ने भिक्षुओं के लिये पाषाणों को काटकर गुहाओं का निर्माण कराया। इनमें गया के निकट बराबर पहाड़ी की गुफाओं में सुदामा की गुफा (सबसे प्राचीन) सबसे प्रसिद्ध है। इस क्षेत्र में अशोक का अनुसरण उसके पौत्र दशरथ ने भी किया।

दशरथ ने लोमष ऋषि (बराबर समूह की सबसे प्रसिद्ध गुफा) व नागार्जुनी समूह की गोपिका गुहा बनवाई।

- अशोक के स्तम्भ एक ही पत्थर से तराशकर (एकाश्मक) बनाये गये हैं।
- अशोक के स्तम्भ सपाट मिलते हैं।
- स्तम्भ शीर्षों में सारनाथ के स्तंभ का सिंह शीर्ष सर्वोत्कृष्ट है।
- बौद्ध परम्परा के अनुसार अशोक ने 84000 स्तूपों का निर्माण कराया था।

तथ्य :

- स्तूपों का सर्वप्रथम उल्लेख ऋग्वेद से मिलता है।
- अशोक के स्तंभ एकाश्मक हैं, जिनके निर्माण में संभवतः चुनार के बलुआ पत्थर का प्रयोग हुआ है।
- इस काल के मूर्तिकला का सर्वोत्कृष्ट उदाहरण चामरग्राहणी की यक्ष मूर्ति को माना जाता है।
- पत्थरों पर शीशे की तरह चमकदार पालिश लगाने की कला मौर्य कलाकारों ने अखामनियों से सीखी थी।

महत्त्वपूर्ण प्रश्न-उत्तर और तथ्य

- सांची का स्तूप किस शासक ने बनवाया था? **—अशोक**
- कौटिल्य चाणक्य प्रधानमंत्री थे **—चंद्रगुप्त मौर्य के**
- चाणक्य के बचपन का नाम क्या था **—विष्णु गुप्त**
- वह एकमात्र स्तंभ, जिसमें अशोक ने स्वयं को मगध का सम्राट बताया है **—भाब्रु स्तंभ**
- अशोक के शिलालेखों में प्रयुक्त भाषा है **—प्राकृत**
- मेगस्थनीज ने भारत को कितनी श्रेणियों में विभाजित किया है? **—सात**
- मेगस्थनीज की पुस्तक का नाम है **—इंडिका**
- मौर्य काल में शिक्षा का प्रसिद्ध केंद्र था **—तक्षशिला**
- अशोक ने बौद्ध होते हुए भी हिंदू धर्म में आस्था नहीं छोड़ी, इसका प्रमाण है **—देवानामप्रिय की उपाधि**
- प्रसिद्ध यूनानी राजदूत मेगस्थनीज भारत में किसके दरबार में आए थे? **—चंद्रगुप्त मौर्य**
- विशाखदत्त के प्राचीन नाटक मुद्राराक्षस का विषयवस्तु है **—चंद्रगुप्त मौर्य के समय में राजदरबार की दुरभिसंधियों के विषय में**
- वह कौन सा शासक है जिसका नाम 'देवानाम पियदशी' भी था? **—मौर्य राजा अशोक**
- कौटिल्य का 'अर्थशास्त्र' संबंधित है **—राजनीति से**
- 'मुद्राराक्षस' नामक पुस्तक का लेखक था **—विशाख दत्त**
- वर्तमान नगर पालिका प्रशासन का कौन सा कार्य मौर्यकाल में भी प्रचलित था? **—जन्म एवं मृत्यु का पंजीकरण**
- किस एक राज्यादेश में 'अशोक' के व्यक्तिगत नाम का उल्लेख है? **—मास्की अभिलेख**
- कौटिल्य महामंत्री थे **—चंद्रगुप्त मौर्य के**
- साँची का स्तूप बनवाया था **—अशोक ने**
- अशोक के शिलालेख को पढ़ने वाला प्रथम अंग्रेज था **—जेम्स प्रिन्सेप (1837)**
- सैण्ड्रोकोट्टस से चंद्रगुप्त मौर्य की पहचान की थी **—विलियम जोन्स के**
- अंतिम मौर्य सम्राट था **—वृहद्रथ**

7. मौर्योत्तर काल

अंतिम मौर्य सम्राट वृहद्रथ की हत्या करके, उसके सेनापति पुष्यमित्र शुंग ने 184 ई. पू. में शुंग राजवंश की स्थापना की थी। शुंग वंश (184 ई. पू.-75 ई. पू.) के अंतिम सम्राट देवभूति की हत्या करके उसके सचिव वासुदेव ने 75 ई. पू. में कण्व राजवंश (75 ई. पू. से 30 ई. पू.) की नींव डाली। वासुदेव पाटलिपुत्र के कण्व वंश का प्रवर्तक था। कण्व वंश के अंतिम शासक सुशर्मा को सातवाहन वंश के प्रवर्तक सिमुक ने पदच्युत कर दिया था। आंध्र सातवाहन वंश की स्थापना सिमुक ने की थी। सातवाहन वंश के संबंध में विस्तृत जानकारी मत्स्य व वायुपुराण में उपलब्ध है। यज्ञश्री शातकर्णी सातवाहन वंश का अंतिम महान शासक था। उत्तर-पश्चिम से पश्चिमी विदेशियों का आक्रमण मौर्योत्तर काल की सर्वाधिक महत्वपूर्ण घटना थी। इनमें सबसे पहले आक्रमणकारी बैक्ट्रिया के ग्रीक (जिन्हें यवन के नाम से जाना जाता है) थे। यूनानियों के बाद मध्य एशिया के शकों ने भारत पर आक्रमण किया तथा उन्होंने यूनानियों से अधिक भाग पर कब्जा किया। भारत के शक राजा अपने आप को ''क्षत्रप'' कहते थे। पश्चिमोत्तर भारत में शकों के आधिपत्य के बाद पार्थियाई (पार्थियाई या पहलव मध्य एशिया में ईरान से आए थे) लोगों का आधिपत्य स्थापित हुआ। पहलव के बाद कुषाणों (कुषाण मध्य एशिया में पश्चिमी चीन के यूची जाति के थे) का भारत में आगमन हुआ। मौर्योत्तर कालीन जो भारतीय राजवंश प्रसिद्ध हुए, वे हैं—शुंग वंश, कण्व वंश, आंध्र-सातवाहन वंश, आभीर वंश, इक्ष्वाकु वंश, चुटुशातकर्णी वंश, कलिंग का चेदि वंश तथा वाकाटक वंश।

पिछले 15 वर्षों के SSC के प्रश्न पत्रों में ''मौर्योत्तर काल''

- किस व्यक्ति को ''द्वितीय अशोक'' कहा जाता है? **—कनिष्क**
  (संयुक्त मैट्रिक स्तर (P.T.) परीक्षा, 1999)
- भारतीयों के लिए महान् ''सिल्क मार्ग'' किसने आरंभ कराया? **—कनिष्क**
  (संयुक्त मैट्रिक स्तर (P.T.) परीक्षा, 1999)
- किस वंश के शासकों ने ब्राह्मणों तथा बौद्ध-भिक्षुओं को कर मुक्त ग्राम देने की प्रथा प्रारंभ की? **—सातवाहन**
  (संयुक्त मैट्रिक स्तर (P.T.) परीक्षा, 1999)
- भारत सरकार द्वारा प्रयोग में आने वाला शक-संवत् किसने प्रारंभ किया था? **—कनिष्क**
  (संयुक्त मैट्रिक स्तर (P.T.) परीक्षा, 2000)
- भारतीय रंगमंच में यवनिका (पर्दा) का शुभारंभ किसने किया? **—यूनानियों ने**
  (संयुक्त स्नातक स्तर (P.T.) परीक्षा, 1999)
- गांधार चित्रकला के प्रमुख संरक्षक थे? **—शक एवं कुषाण**
  (सेक्शन ऑफीसर्स (कामर्शियल ऑडिट) परीक्षा, 2000)

- तक्षशिला के प्रसिद्ध स्थल के रूप में होने का क्या कारण था? **—गांधार कला**
(संयुक्त मैट्रिक स्तर (P.T.) परीक्षा, 2001)
- भारत में प्रथम स्वर्ण मुद्राएं किसने चलाई? **—यूनानी**
(संयुक्त मैट्रिक स्तर (P.T.) परीक्षा, 2001)
- भारतीय और यूनानी कला के अभिरक्षणों को समन्वित करने वाली कला शैली का क्या नाम है? **—गांधार**
(संयुक्त मैट्रिक स्तर (P.T.) परीक्षा, 2001)
- यूनानी-रोमन कला को कहां स्थान प्राप्त हुआ है? **—गांधार**
(संयुक्त मैट्रिक स्तर (P.T.) परीक्षा, 2001)
- चरक किसके राज चिकित्सक थे? **—कनिष्क**
(संयुक्त मैट्रिक स्तर (P.T.) परीक्षा, 2001)
- वह महानतम कुषाण नेता कौन था, जो बौद्ध बन गया था? **—कनिष्क**
(संयुक्त मैट्रिक स्तर (P.T.) परीक्षा, 2001)
- श्रीलंका पर विजय प्राप्त करने वाला चोल वंश का सबसे प्रतापी राजा कौन था? **—राजराज-प्रथम**
(संयुक्त मैट्रिक स्तर (P.T.) परीक्षा, 2002)
- सातवाहनों ने पहले स्थानीय अधिकारियों के रूप में पहले किसके यहां काम किया? **—मौर्यों के यहां**
(संयुक्त मैट्रिक स्तर (P.T.) परीक्षा, 2002)
- भारत में सर्वप्रथम सोने के सिक्के जारी करने वाले कौन थे? **—हिन्द-यूनानी**
(संयुक्त मैट्रिक स्तर (P.T.) परीक्षा, 2002)
- ई. सन् 78 से प्रारंभ होने वाला शक संवत् का संस्थापक कौन था **—कनिष्क (C.P.O. परीक्षा, 2003)**
- चित्रकला में गांधार शैली का सूत्रपात किसके द्वारा किया गया था? **—महायान सम्प्रदाय**
(C.P.O. परीक्षा, 2003)
- गांधार कला किस काल में विकसित हुई थी? **—कुषाण काल में**
(C.P.O. परीक्षा, 2003)
- चरक किसके दरबार के चिकित्सक थे? **—कनिष्क**
(कर सहायक, परीक्षा, 2005)
- कनिष्क के शासनकाल में रहने वाले मुख्य साहित्यकार कौन थे? **—वसुमित्र और अश्व घोष**
(स्टेनोग्राफर (ग्रेड-डी) परीक्षा, 2005)
- कला की गांधार शैली किसके शासनकाल में पनपी थी? **—कनिष्क**
(संयुक्त मैट्रिक स्तर (P.T.) परीक्षा, 2006)
- चौथी बौद्ध परिषद का आयोजन किसने किया था? **—कनिष्क**
(संयुक्त मैट्रिक स्तर (P.T.) परीक्षा, 2006)
- कनिष्क की राजधानी कहां थी? **—पुरुषपुर**
(संयुक्त स्नातक स्तर (P.T.) परीक्षा, 2007)
- शक संवत् किसने और कब शुरू किया था? **—कनिष्क ने 78 ईस्वी में**
(संयुक्त स्नातक स्तर (P.T.) परीक्षा, 2008)
- चरक किस राजा के दरबार में प्रसिद्ध चिकित्सक (आयुर्वेदाचार्य) थे? **—कनिष्क**
(डाटा एण्ट्री ऑपरेटर (E.E.O.) परीक्षा, 2009)
- कुषाण काल में भारतीय और ग्रीक शैली के मिश्रण से विकसित कला विद्यालय का किस नाम से जाना जाता है?**—गांधार कला**
(मल्टी टास्किंग स्टाफ (MTS) परीक्षा, 2013)
- गंधर्व कला विद्यालय और किस नाम से जाना जाता है? **—ग्रीक-रोमन बौद्ध कला**
(संयुक्त स्नातक स्तरीय प्रा0 परीक्षा, 2013)

विशिष्ट तथ्य ''मौर्योत्तर काल''

पूर्व गुप्तकाल अथवा मौर्योत्तर काल

- मौर्य वंश के अन्तिम शासक वृहद्रथ की हत्या पुष्यमित्र शुंग नामक ब्राह्मण ने कर दी, फलतः मौर्य साम्राज्य के पतन के साथ ही भारत की राजनैतिक एकता विलुप्त हो गई। अतएव भारत की उत्तरी-पश्चिमी सीमा से लड़ाकू जातियां भारत में प्रविष्ट होने लगीं।
- शुंग वंश का संस्थापक पुष्यमित्र था, जिसने अन्तिम मौर्य शासक वृहद्रथ की हत्या कर मौर्य साम्राज्य के क्षेत्रों पर अपने आधिपत्य की स्थापना की।
- पुष्यमित्र के पुरोहित का नाम पतंजलि (पाणिनि के अष्टाध्यायी पर महाभाष्य की रचना की) था।
- पुष्यमित्र के समय उसका पुत्र अग्निमित्र विदिशा का राज्यपाल था, जबकि घनदेव अयोध्या का राज्यपाल था।
- पुष्यमित्र शुंग ने दो अश्वमेध यज्ञ कराये।
- वस्तुतः पुष्यमित्र शुंग के समय में ही सांची के स्तूप का आकार दुगुना कराया गया था।
- पुष्यमित्र के शासनकाल की सबसे महत्त्वपूर्ण घटना यवनों का भारत पर आक्रमण था। कालिदास के नाटक माल्विकाग्निमित्रम् के अनुसार पुष्यमित्र शुंग के पौत्र (अग्निमित्र का पुत्र) वसुमित्र ने यवनों को (संभवतः सिन्धु नदी के तट पर) परास्त किया।
- शुंग काल में ही पहला स्मृति ग्रन्थ मनुस्मृति की रचना की गई।
- शुंग वंशीय नौवें शासक भागभद्र के दरबार में एण्टियाल्किडस का दूत बनकर हेलियोडोरस भारत आया था। यहां आकर उसने भागवत धर्म ग्रहण कर लिया था तथा विदिशा (बेसनगर) में गरुड़ स्तम्भ की स्थापना कर भागवत (विष्णु) की पूजा की थी।
- शुंग काल में संस्कृत भाषा व ब्राह्मण व्यवस्था का पुनरुत्थान हुआ।
- कण्व वंश की स्थापना वासुदेव ने की थी।
- इस वंश के अंतिम शासक सुशर्मा की हत्या आंध्र जातीय भृत्य सिमुक (सिन्धुक) ने कर दी।
- सातवाहन वंश का संस्थापक 'सिमुक' था जिसने कण्व वंश के अन्तिम शासक सुशर्मा की हत्या कर अपने वंश की स्थापना की।
- सातवाहन सत्ता का पुनरुद्धार गौतमीपुत्र शातकर्णी के समय में हुआ। पुराणों के अनुसार, गौतमी पुत्र शातकर्णी इस वंश का 23वां शासक था।
- यज्ञश्री शातकर्णी सातवाहन वंश का अन्तिम शक्तिशाली शासक था, इसके सिक्कों पर मछली, जहाज और शंख का चित्र अंकित है।

भारत पर आक्रमण करने वाले विदेशी

मौर्योत्तर काल में भारतीय क्षेत्रों पर यूनानी, शक, पहलव तथा कुषाणों का हमला हुआ।

यूनानी आक्रमण

- भारत पर सर्वप्रथम आक्रमण यूनानियों (इण्डो-ग्रीक या बैक्ट्रियाई) का हुआ।
- यूनानियों द्वारा किये गये आक्रमण का नेतृत्वकर्ता डिमेट्रियस प्रथम था (जिसने 220-175 ई. पू.) में भारत पर आक्रमण किया। इसने शाकल (पाकिस्तान स्यालकोट) को अपनी राजधानी बनाई।
- इतिहासकार जस्टिन डिमैट्रियस को भारत का राजा बताता है।
- डिमैट्रियस का उत्तराधिकारी मिलिन्द या मिनांडर एक महान शासक था। भारत आने के बाद मिनांडर ने बौद्ध धर्म ग्रहण कर लिया। उसने अपने समकालीन विद्वान नागसेन (या नागार्जुन) से बौद्ध धर्म के विषय में संवाद किये।
- पाली साहित्य मिलिन्दपन्हो में राजा मिलिन्द व नागसेन के मध्य हुए वार्तालाप का जिक्र है। (मिलिन्दपन्हो-राजा मिलिन्द के प्रश्न)।
- मिनांडर की मुद्राएं चांदी व तांबे की हैं। हिन्द-यूनानी शासकों में सबसे ज्यादा सिक्के मिनांडर के ही हैं।
- इस वंश के प्रसिद्ध शासक एन्टियालकिड्स ने अपने शासनकाल के 14 वें वर्ष विदिशा स्थित शुंग वंशीय नौवें शासक भागभद्र के दरबार में अपना दूत बनाकर हेलियोडोरस को भेजा था।
- हेलियोडोरस ने भारत आकर भागवत धर्म ग्रहण कर लिया।

टिप्पणी :

- यूनानियों के आक्रमण से भारत पर यूनानी प्रभाव दिखाई पड़ता है।
- भारतीय ज्योतिष पर यूनानी प्रभाव दिखाई देता है।
- भारतीयों ने यूनानियों से सांचे में ढालकर मुद्रा बनाने की कला सीखी।
- यूनानी शासकों के लेखों में खरोष्टी व यूनानी लिपि मिलती है।
- भारतीय रंगमंच पर भी यूनानी प्रभाव दिखाई देता है।
- चिकित्सा विज्ञान के क्षेत्र में भी यूनानी प्रभाव है।
- गांधार व मथुरा कला शैली यूनानी प्रभाव से भरे पड़े हैं।
- भारतीयों ने अनेक यूनानी शब्दों-कलम, पुस्तक इत्यादि को ग्रहण किया।

शक

- हिन्द यवनों के बाद मौर्योत्तर काल में भारतीय क्षेत्रों पर हमला करने वाले शक थे।
- भारतीय साहित्य में शकों के प्रदेश को 'शकद्वीप' कहा गया है।

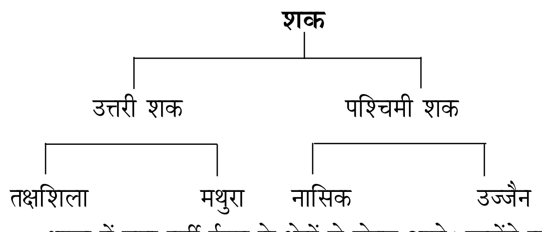

- भारत में शक पूर्वी ईरान के क्षेत्रों से होकर आये। उन्होंने पश्चिमोत्तर प्रदेश से यवन-सत्ता को समाप्त करके उत्तरापथ व अन्य क्षेत्रों पर अपने प्रभुत्व की स्थापना की।
- शक नरेशों के भारतीय प्रदेशों के शासक 'क्षत्रप' कहे जाते थे।
- पहलव मूलतः पार्थिया के निवासी थे। पार्थियन साम्राज्य का वास्तविक संस्थापक—मिथ्रदात प्रथम था।
- इस वंश का सर्वाधिक शक्तिशाली राजा—गोण्डोफर्नीज था। उसके शासनकाल का एक अभिलेख 'तख्ते बही' (पेशावर) से प्राप्त हुआ है।
- गोण्डोफर्नीज की राजधानी तक्षशिला थी।
- पहलव राजाओं के सिक्कों पर ''धार्मिय'' (धार्मिक) उपाधि उत्कीर्ण है।
- गोण्डोफर्नीज के शासनकाल में ही ईसाई धर्म प्रचारक सेन्ट टॉमस का दल भारत आया था।

कुषाण राजवंश

- कुषाण वंश का राजनैतिक इतिहास चीनी स्रोतों से प्राप्त होता है।
- इस वंश का शासक विम कडफिसेस ने ही भारत में सर्वप्रथम स्वर्ण सिक्के प्रचलित कराये थे।
- कुषाण यूची जाति की एक शाखा थे।

कनिष्क

- कुषाण राजवंश का सबसे महान शासक कनिष्क था। उसके लगभग 12 अभिलेख तथा बहुसंख्य स्वर्ण मुद्राएं मिली हैं।
- कनिष्क ने शक संवत् को चलाया। यही उसके राज्यारोहण की तिथि है।
- कनिष्क की दो राजधानियां थीं—पेशावर तथा मथुरा।
- चौथी बौद्ध संगीति कनिष्क के शासनकाल में हुई थी। कश्मीर में कनिष्क ने कनिष्कपुर नामक नगर की स्थापना की थी।
- कनिष्क ने मध्य एशिया में काशगर, यारकन्द, खेतान आदि प्रदेशों पर अपने आधिपत्य की स्थापना कर पहली बार एक अंतर्राष्ट्रीय साम्राज्य की स्थापना की थी।
- कनिष्क शासनकाल में भारत का व्यापारिक संबंध मध्य एशिया व पश्चिमी विश्व के साथ बना।
- अपने प्रारंभिक वर्षों में ही कनिष्क बौद्ध हो गया था। उसने पेशावर में चैत्य का निर्माण कराया था।
- चीन के राजा पान-चाऊ ने कनिष्क को परास्त किया था।
- अश्वघोष कनिष्क का राजकवि था। अश्वघोष की रचनाएं—सौन्दरानन्द, बुद्धचरित तथा सारिपुत्र प्रकरण।
- कनिष्क के अभिलेखों में उसे देवपुत्र-षाहि-षाहानुषाहि कहा गया है।
- कनिष्क के राजवैद्य चरक थे (चरक संहिता के रचनाकार)।
- कनिष्क ने बौद्ध धर्म के महायान शाखा को राजाश्रय प्रदान किया था।
- कनिष्क के शासनकाल में कला के क्षेत्र में दो स्वतंत्र शैलियों का विकास हुआ—(i) गांधार कला शैली, (ii) मथुरा कला शैली।
- यूनानी कला शैली के प्रभाव से गांधार कला शैली का जन्म हुआ (कनिष्क के काल में)।
- तपस्यारत बुद्ध का एक दृश्य (जिसमें उपवास के कारण उनका शरीर निर्बल हो गया है) गांधार कला का सर्वोत्तम उदाहरण है।
- मथुरा कला शैली की मूर्तियां लाल-बलुआ पत्थर की हैं।
- मथुरा कला आदर्शवादी है।
- मथुरा शैली में ही बुद्ध की संभवतः सर्वप्रथम मूर्तियां बननी शुरू हुई।
- सर्वाधिक शुद्ध सोने के सिक्के कुषाणों ने चलाये।
- इण्डो-ग्रीकों ने सर्वप्रथम सोने के सिक्के चलाये।
- सातवाहनों ने सीसे के सिक्के चलाये।
- ईसा की पहली सदी में (45-49 ई.) मिस्र के नाविक हिप्पालस के द्वारा अरब सागर में चलने वाले मानसून की जानकारी देने से समुद्री यात्रा सरल हो गई थी।
- मौर्योत्तर काल में आहत मुद्राओं का प्रचलन बंद हो गया।

महत्त्वपूर्ण प्रश्न-उत्तर और तथ्य

- शक संवत् कब प्रारंभ किया गया? **—78 ई.**
- कुषाण शासक कनिष्क का राज्याभिषेक कब हुआ? **—78 ई.**
- विक्रम संवत् कब प्रारंभ हुआ? **—57 ई. पू.**
- गांधार कला शैली एक संश्लेषण है **—भारतीय तथा यूनानी कला का**
- मिलिन्दपन्हो है **—पालि ग्रंथ**
- हेलियोदोरस का बेसनगर स्तंभ संबंधित है **—वसुदेव से**
- राजा खारवेल का नाम जुड़ा है **—हाथी गुम्फा अभिलेख के साथ**
- प्राचीन काल में भारत पर आक्रमण के संदर्भ में कौन सा सही कालानुक्रम है? **—यूनानी-शक-कुषाण**
- कुषाण काल में सबसे अधिक विकास हुआ था **—वास्तुकला का**
- कनिष्क के समकालीन थे **—नागार्जुन, अश्वघोष व वसुमित्र**
- भारत में सर्वप्रथम स्वर्ण मुद्राएं चलाने वाले शासक थे **—भारतीय युनानी**
- किस वंश के शासकों ने अग्रहार (कर मुक्त ग्राम दान की प्रथा शुरू की? **—सातवाहन**
- भारतीयों के लिए महान 'सिल्क मार्ग' किसने प्रारंभ कराया? **—कनिष्क**
- कला की गांधार शैली किस समय में फली-फूली? **—कुषाणों के समय**
- जो कला शैली भारतीय और ग्रीक (यूनानी) कला शैली का मिश्रण है, उसे कहते हैं? **—गांधार शैली**
- भारत सरकार द्वारा प्रयोग किये जाने वाले शक संवत् का प्रयोग किया था **—कनिष्क ने**
- प्राचीन संस्कृत ग्रंथों में 'यवन प्रिय' शब्द द्योतक था **—काली मिर्च का**
- प्राचीन भारत में नियमित रूप से सोने के सिक्के चलाए थे **—कुषाण शासकों ने**

8. गुप्त काल

मौर्य साम्राज्य के विघटन के पश्चात् प्राचीन भारत में गुप्तों ने ही विस्तृत साम्राज्य की स्थापना की। गुप्तों की वंशावली के संदर्भ में हमें महत्त्वपूर्ण जानकारी समुद्रगुप्त के प्रयाग प्रशस्ति, कुमारगुप्त के भिलसद स्तंभलेख तथा स्कंदगुप्त के भीतरी स्तंभलेख से प्राप्त होती है। इन अभिलेखीय साक्ष्यों के आधार पर गुप्तों के आदि पुरुष का नाम श्रीगुप्त था, उसका उत्तराधिकारी व पुत्र घटोत्कच था। परन्तु, गुप्त वंशावली में सबसे पहला प्रतापी शासक चंद्रगुप्त प्रथम (319 ई.-335 ई.) था। इसने ''महाराजाधिराज'' की उपाधि ग्रहण की थी। समुद्रगुप्त (335 ई. - 375 ई.) गुप्त वंश का एक महान योद्धा तथा कुशल सेनापति था, इसी कारण उसे ''भारत का नेपोलियन'' कहा जाता है। चंद्रगुप्त द्वितीय (380-412 ई.) ''विक्रमादित्य'' के शासनकाल में गुप्त साम्राज्य अपने उत्कर्ष पर पहुंच गया था। उसका शासन काल प्राचीन भारतीय इतिहास में ''स्वर्णयुग'' के नाम से जाना जाता है। चंद्रगुप्त द्वितीय ''विक्रमादित्य'' के पश्चात् उसका पुत्र कुमारगुप्त प्रथम (413 ई. से 455 ई.) सिंहासनारूढ़ हुआ। गुप्त शासकों में सर्वाधिक अभिलेख कुमारगुप्त के ही प्राप्त हुए हैं। उसी के शासनकाल में नालंदा विश्वविद्यालय की स्थापना हुई। 455 ई. में कुमारगुप्त की मृत्यु के पश्चात् उसका प्रतापी पुत्र स्कंदगुप्त (455 ई. से 467 ई.) सिंहासनारूढ़ हुआ। कुमारगुप्त तृतीय, गुप्त वंश का अंतिम शासक था। गुप्त साम्राज्य के पतन में हूणों का आक्रमण एक प्रधान कारण था। गुप्तों के पतन के साथ ही नवीन राजवंशों (बल्लभी के मैत्रेय, कन्नौज के मौखरि, थानेश्वर में वर्धन) का उदय हुआ।

पिछले 15 वर्षों के SSC के प्रश्न पत्रों में ''गुप्त काल''

- कवि कालिदास किसके राजकवि थे?—**चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य**
  (संयुक्त मैट्रिक स्तर (P.T.) परीक्षा, 1999)
- गुप्त युग का प्रवर्तक कौन था? —**श्रीगुप्त**
  (संयुक्त मैट्रिक स्तर (P.T.) परीक्षा, 2000)
- मुद्रा राक्षस के लेखक कौन थे? —**विशाखदत्त**
  (संयुक्त मैट्रिक स्तर (P.T.) परीक्षा, 2000)
- शून्य की खोज किसने की? —**आर्यभट्ट**
  (संयुक्त मैट्रिक स्तर (P.T.) परीक्षा, 2000)
- गुप्त शासन के दौरान ऐसा व्यक्ति कौन था, जो एक महान खगोल-विज्ञानी तथा गणितज्ञ था? —**आर्यभट्ट**
  (संयुक्त मैट्रिक स्तर (P.T.) परीक्षा, 2002)
- 'गुप्त' राजा जिसने 'विक्रमादित्य' की पदवी ग्रहण की थी, वह था? —**चन्द्रगुप्त द्वितीय**
  (संयुक्त मैट्रिक स्तर (P.T.) परीक्षा, 2002)
- गुप्तवंश का वह राजा कौन था, जिसने हूणों को भारत पर आक्रमण करने से रोका? —**स्कंद गुप्त**
  (संयुक्त मैट्रिक स्तर (P.T.) परीक्षा, 2002)
- किसको अपनी विजयों के कारण ''भारत का नेपोलियन'' कहा जाता है? —**समुद्रगुप्त**
  (संयुक्त मैट्रिक स्तर (P.T.) परीक्षा, 2000)
- ''मृच्छकटिकम्'' के रचनाकार कौन हैं? —**शूद्रक**
  (सहायक निरीक्षक नियंत्रक परीक्षा, 2003)
- ''भारतीय नेपोलियन'' की उपाधि किसे दी गई है? —**समुद्रगुप्त**
  (C.P.O. परीक्षा, 2003)
- ''उत्तर रामचरित'' नाटक किसने लिखा है? —**भवभूति**
  (सेक्शन ऑफीसर्स (ऑडिट) परीक्षा, 2005)
- आयुर्वेद के वैद्य ''चिकित्सा का भगवान'' किसे मानते हैं? —**धनवंतरि**
  (सेक्शन ऑफीसर्स (ऑडिट) परीक्षा, 2005)
- गुप्त वंश का प्रथम महान सम्राट कौन था? —**चन्द्रगुप्त**
  (संयुक्त स्नातक स्तर (P.T.) परीक्षा, 2005)
- संख्या प्रणाली 'शून्य' का आविष्कार किसने किया था? —**आर्यभट्ट (कर सहायक परीक्षा, 2005)**
- भारतीय संस्कृति का 'स्वर्ण युग' था? —**गुप्तकाल**
  (लोअर डिवीजन क्लर्क, 2005)

- हरिषेण किस राजा का राजकवि था? **—समुद्रगुप्त**
  (संयुक्त मैट्रिक स्तर (P.T.) परीक्षा, 2002)
- वह शासक कौन था जो विक्रमादित्य के नाम से जाना जाता था? **—चन्द्रगुप्त द्वितीय**
  (संयुक्त मैट्रिक स्तर (P.T.) परीक्षा, 2006)
- प्राचीन भारत के विख्यात चिकित्सक धन्वन्तरि ने अपना परामर्श किसके दरबार में दिया था? **—चन्द्रगुप्त द्वितीय**
  (संयुक्त मैट्रिक स्तर (P.T.) परीक्षा, 2006)
- फाह्यान ने भारत की यात्रा किस काल में किया था? **—गुप्त काल में**
  (सेक्शन ऑफीसर्स (कामर्शियल ऑडिट) परीक्षा, 2006)
- आर्यभट्ट और वाराहमिहिर के सुविख्यात नाम किसके युग के साथ संबंधित है? **—गुप्त वंश**
  (सेक्शन ऑफीसर्स (कामर्शियल ऑडिट) परीक्षा, 2006)
- प्रसिद्ध काव्य 'गीतगोविंद' के रचयिता कौन हैं? **—जयदेव**
  (सेक्शन ऑफीसर्स (ऑडिट) परीक्षा, 2006)
- ऋतुसंहार के लेखक कौन हैं? **—कालिदास**
  (C.P.O. परीक्षा, 2008)
- चीनी यात्री फाह्यान किस गुप्त शासक के शासनकाल के दौरान भारत आया था? **—चंद्रगुप्त द्वितीय**
  (C.P.O. परीक्षा,, 2008)
- इलाहाबाद स्तंभ के शिलालेख में किसकी उपलब्धियां वर्णित है? **—समुद्रगुप्त**
  (संयुक्त मैट्रिक स्तर (P.T.) परीक्षा, 2008)
- गुप्तवंश के किस राजा को ''भारत का नेपोलियन'' कहा जाता है? **—समुद्रगुप्त**
  (कर सहायक परीक्षा, 2008)
- अपनी प्रसार की नीतियों के कारण 'भारत का नेपोलियन' कहलाने वाला राजा है? **—समुद्रगुप्त**
  (स्टेनोग्राफर्स (ग्रेड सी एवं डी) परीक्षा, 2010)
- गीतगोविंद का लेखक कौन था? **—जयदेव**
  (संयुक्त हॉयर सेकेण्डरी स्तर परीक्षा, 2010)
- प्राचीन सिक्कों पर वीणा बजाते हुए दिखाया गया हिन्दू राजा कौन था? **—समुद्रगुप्त**
  (संयुक्त हॉयर सेकेण्डरी स्तर परीक्षा, 2010)

विशिष्ट तथ्य ''गुप्त काल''

- गुप्त काल 319 से 550 ई. तक था।
- गुप्त काल को भारतीय इतिहास का स्वर्ण युग (Golden Age) कहा जाता है। मौर्यों के पतन के बाद नष्ट हुई राजनैतिक एकता को गुप्त शासकों ने पुनः अर्जित कर लगभग सम्पूर्ण भारत को एक राजनैतिक क्षेत्र के अधीन कर शक्तिशाली विदेशी आक्रांताओं का सफलतापूर्वक सामना करके आर्थिक, सामाजिक व साहित्यिक क्षेत्र में उन्नति का मार्ग प्रशस्त किया।
- चन्द्रगुप्त प्रथम गुप्त वंश का वास्तविक संस्थापक था।
- चन्द्रगुप्त प्रथम ने 319 ई. में एक नया संवत 'गुप्त संवत' चलाया।
- चन्द्रगुप्त प्रथम के शासनकाल की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण घटना गुप्तों तथा लिच्छवियों के बीच वैवाहिक सम्बन्ध की स्थापना थी। उसने लिच्छवी राजकुमारी कुमारदेवी से विवाह किया।
- कुमारदेवी से विवाह के बाद उसने राजा-रानी प्रकार या चन्द्रगुप्त-कुमारदेवी प्रकार के सिक्के जारी किये।
- गुप्त वंश में सर्वप्रथम चन्द्रगुप्त प्रथम ने ही रजत मुद्राओं का प्रचलन कराया।
- समुद्रगुप्त का शासनकाल 335 से 375 ई. तक था।
- समुद्रगुप्त, चन्द्रगुप्त प्रथम का पुत्र था, इसने लिच्छवयः दौहित्र (लिच्छवि कन्या से उत्पन्न) की उपाधि धारण की।
- समुद्रगुप्त एक साम्राज्यवादी शासक था। समुद्रगुप्त के इतिहास को जानने का सर्वप्रमुख स्रोत इलाहाबाद स्तंभ लेख (या प्रयाग प्रशस्ति) है। प्रयाग प्रशस्ति की रचना उसके सन्धि-विग्रहिक (युद्ध व सन्धि का मंत्री) हरिषेण ने की थी।
- प्रयाग प्रशस्ति के प्रारंभ में अशोक (मौर्य शासक) का लेख अंकित है। तत्पश्चात समुद्रगुप्त का लेख अंकित है। यह ब्राह्मी लिपि तथा विशुद्ध संस्कृत भाषा में (चम्पू शैली में) लिखा गया है। इस शैली को काव्य कहा गया है। मध्यकाल में मुगल शासक अकबर ने इसे कौशाम्बी से मंगाकर इलाहाबाद के किले में सुरक्षित करा दिया। इसमें अकबर के दरबारी बीरबल का भी लेख मिलता है।
- समुद्रगुप्त के एरण अभिलेख (मध्य प्रदेश के सागर जिले में एरण नामक स्थल से) से पता चलता है कि उसकी पत्नी का नाम दत्त देवी था।
- बौद्ध ग्रन्थों के अनुसार समुद्रगुप्त कवि, संगीतज्ञ और विद्या का उदार संरक्षक था, उसने प्रसिद्ध बौद्ध विद्वान वसुबन्धु को संरक्षण प्रदान किया था।
- समुद्रगुप्त ने वैदिक धर्म के अनुसार शासन किया, उसे 'धर्म की प्राचीर' कहा गया है।
- समुद्रगुप्त की सेवा में श्रीलंका के राजा मेघवर्ण ने उपहार भेजे तथा गया (बिहार) में मठ बनवाने की अनुमति चाही थी।
- इतिहासकार विन्सेंट आर्थर स्मिथ ने समुद्रगुप्त को 'भारत का नेपोलियन' कहा है।
- समुद्रगुप्त के सिक्कों पर उसे वीणा बजाते दिखाया गया है।
- उसने 'अश्वमेध प्राक्रमांक' की उपाधि धारण की थी।
- चन्द्रगुप्त द्वितीय विक्रमादित्य का शासनकाल 380 से 414 ई. तक था।
- चन्द्रगुप्त द्वितीय समुद्रगुप्त एवं दत्त देवी से उत्पन्न पुत्र था।
- यह गुप्त राजवंश का शक्तिशाली एवं महत्त्वपूर्ण शासक था। चन्द्रगुप्त द्वितीय के काल में गुप्त साम्राज्य उत्कर्ष पर जा पहुंचा।
- चन्द्रगुप्त द्वितीय ने अपने पुत्र कुमारगुप्त प्रथम का विवाह कदम्ब देश में किया।
- मेहरौली स्तंभ लेख (दिल्ली में कुतुबमीनार के निकट) का संबंध चन्द्रगुप्त-II विक्रमादित्य से स्थापित किया जाता है।
- चन्द्रगुप्त-II विक्रमादित्य ने अश्वमेध यज्ञ किया था।

चन्द्रगुप्त-II विक्रमादित्य

उपाधियाँ	अन्य नाम	चीनी यात्री	दरबार में
विक्रमांङ्क, विक्रमादित्य, परमभागवत् आदि।	देव, देवश्री, देवराज, देवगुप्त	फाह्यान का आगमन इसी के समय	नौ रत्नों का निवास

- चन्द्रगुप्त-II विक्रमादित्य ने सात प्रकार के सिक्के जारी किये थे। उसके सिंहहंता प्रकार के सिक्कों से पता चलता है कि उसने शकों को पराजित किया था।
- उसके उदयगिरि गुहा लेख के अनुसार चन्द्रगुप्त द्वितीय विक्रमादित्य का उद्देश्य सम्पूर्ण पृथ्वी को जीतना था।
- उसके सांची अभिलेख में आम्रकार्दव नामक (बौद्ध) सैनिक पदाधिकारी का उल्लेख है, जो सैकड़ों युद्धों का विजेता था।
- चन्द्रगुप्त-II विक्रमादित्य की राजधानी पाटलिपुत्र थी, शकों पर विजय के बाद चन्द्रगुप्त-II विक्रमादित्य ने अपनी दूसरी राजधानी उज्जैन में स्थापित की।
- चन्द्रगुप्त-II विक्रमादित्य ने 40 वर्षों तक शासन किया।
- मेहरौली लेख के अनुसार, चन्द्रगुप्त द्वितीय 'विक्रमादित्य' ने विष्णुपद पर्वत पर विष्णुध्वज की स्थापना करवाई थी।
- कालिदास को भारत का शेक्सपियर कहा जाता है। चन्द्रगुप्त-II ने कालिदास को अपना दूत बनाकर, कुन्तल नरेश के दरबार में भेजा था।
- चन्द्रगुप्त-II के विजयों का वर्णन मेहरौली लौह स्तंभ लेख में मिलता है।
- राजशेखर की रचना काव्यमीमांसा है।
- फाह्यान ने अपने यात्रा विवरण में सम्राट का नाम उल्लिखित नहीं किया है।

कालिदास की रचनाएँ

नाटक ग्रन्थ

रघुवंशम्, ऋतुसंहारम्, मेघदूतम्, कुमारसंभवम्

अन्य ग्रन्थ

अभिज्ञान शाकुन्तलम्, माल्विकाग्निमित्रम, विक्रमोर्वशीयम्

- कुमारगुप्त प्रथम के शासनकाल के दौरान नालन्दा विश्वविद्यालय की स्थापना हुई। इस विश्वविद्यालय में बौद्ध धर्म की महायान शाखा की विशेषतः पढ़ाई होती थी। इस विश्वविद्यालय को 'ऑक्सफोर्ड ऑफ महायान बुद्धा' भी कहा जाता था।
- नालन्दा विश्वविद्यालय को मोहम्मद गोरी के एक सेनापति बख्तियार खिलजी ने नष्ट कर दिया था।
- नालंदा विश्वविद्यालय की यात्रा ह्वेनसांग ने भी की थी।
- स्कंदगुप्त के भितरी अभिलेख (गाजीपुर, उत्तर प्रदेश से प्राप्त) से पता चलता है कि उसके शासन के अंतिम दिनों में पुष्यमित्र नामक जाति का गुप्त साम्राज्य पर हमला हुआ था। इस युद्ध में आक्रमणकारी परास्त हुये, लेकिन इस विजय की सूचना मिलने से पूर्व ही सम्राट कुमारगुप्त प्रथम का स्वर्गवास हो चुका था।
- कुमारगुप्त प्रथम ने भी अश्वमेध यज्ञ का आयोजन किया, क्योंकि उसके सिक्कों पर यज्ञयूप में बंधे हुए घोड़े की आकृति दिखाई पड़ती है।
- करमदण्डा लेख के अनुसार अवध प्रदेश का राज्यपाल पृथ्वीषेण शैव मतानुयायी था।
- गढ़वा लेख में उसे 'परम भागवत' कहा गया है।
- उसने भितरी नामक स्थान पर भगवान विष्णु की प्रतिमा स्थापित कराई।
- प्रशासनिक सुविधा के लिये स्कंदगुप्त ने अपनी राजधानी अयोध्या में स्थानांतरित की।
- जूनागढ़ लेख में हूणों को मलेच्छ कहा गया है।
- स्कंदगुप्त के इन्दौर लेख में सूर्य पूजा का उल्लेख है।
- बर्बर हूणों के विरुद्ध अपनी सफलता से गौरवान्वित होकर स्कंदगुप्त ने क्रमादित्य की उपाधि धारण की थी।

विदेशी यात्री व उनकी रचनाएँ

- फाह्यान—Fu-Ko-Ki
- वांग-ह्वेन—FA-UWAN-CHOLIN
- ह्वेनसांग—Si-U-Ki

- स्कंदगुप्त गुप्त वंश का अंतिम महान शासक था।
- स्कंदगुप्त के भितरी अभिलेख (गाजीपुर, उत्तर प्रदेश) में जिन शत्रुओं का उल्लेख हुआ है, वे बाह्य शत्रु थे।
- स्कंदगुप्त के बाद बुधगुप्त तक गुप्त साम्राज्य की एकता कायम रही। लेकिन बुधगुप्त के बाद इसका उत्तरोत्तर ह्रास होता रहा।
- विष्णु गुप्त गुप्त वंश का अंतिम शासक था। उसके बाद संभवतः 550 ई. में गुप्त साम्राज्य का विलोप हो गया।
- हूणों का प्रथम महत्त्वपूर्ण राजा तोरमाण था, जिसने उत्तरी भारत पर शासन किया था।
- गुप्त काल में नये विश्वास, उनके सम्बन्ध का नया जीवन्त रोमांचक-लोमहर्षक साहित्य इस नवयुग की देन थे। गुप्तकाल में त्रिमूर्ति के अन्तर्गत ब्रह्मा, विष्णु और महेश की पूजा प्रारंभ हुई। (ब्रह्मा- सर्जन करने वाले, विष्णु- पालन करने वाले तथा महेश- संहार करने वाले)।

विष्णु के दस अवतार

1. मत्स्य	2. कूर्म
3. वराह	4. नरसिंह
5. वामन	6. परशुराम
7. राम	8. बलराम
9. बुद्ध	10. कल्कि

- गुप्तकाल में हिन्दू धर्म के अन्तर्गत ब्राह्मण धर्म के लिये पुनरुत्थान का काल माना जाता है।
- गुप्त शासक वैष्णव धर्मावलंबी थे।
- इस समय भक्ति सिद्धांत को प्रोत्साहन मिला।
- गुप्त काल में शैव धर्म के साथ-साथ बौद्ध धर्म का भी पुनरुत्थान हुआ।
- कलयुग की कल्पना विष्णु के कल्कि अवतार के आगमन से संबंधित है।
- इस काल में संस्कृत भाषा को बल मिला।
- कालिदास की रचना विक्रमोर्वशीयम में उर्वशी व पुरूरवा की प्रणय कथा का वर्णन है।
- सम्पूर्ण संस्कृत साहित्य में अभिज्ञानशाकुन्तलम सर्वोत्कृष्ट नाटक है।
- इस काल के बौद्ध दार्शनिक थे—आर्यदेव, असंग, वसुबन्धु, मैत्रेय व दिङ्नाथ।
- मुद्राराक्षस (विशाखदत्त की रचना) में चाणक्य की योजनाओं का वर्णन है।

- कामन्दक का नीतिसार व वात्स्यायन का कामसूत्र इसी काल में लिखा गया।

ग्रन्थ व उसके रचनाकार		
विक्रमांकदेव चरित	:	बिल्हण
मुद्राराक्षस	:	विशाखदत्त
गौडवाहो	:	वाक्पति
नवसाहसांक चरित	:	पदमगुप्त
अमरकोश	:	अमर सिंह

- गुप्तकालीन अभिलेखों से ही सर्वप्रथम कायस्थ का उल्लेख मिलता है।

विभिन्न दर्शन व प्रतिपादक		
न्याय दर्शन	—	गौतम
वैशेषिक दर्शन	—	कणाद
सांख्य दर्शन (सबसे प्राचीन)	—	कपिल
योग दर्शन	—	पतंजलि
लोकमत (चार्वाक)	—	चार्वाक

- गुप्तयुगीन वास्तुकला के सर्वोत्तम उदाहरण मन्दिर हैं। गुप्तकाल में जो मन्दिर प्रारंभिक समय में बने उनकी छतें सपाट हैं, लेकिन बाद में शिखर युक्त मन्दिरों का निर्माण भी होने लगा। शिखरयुक्त मन्दिर का पहला उदाहरण देवगढ़ (झांसी) का दशावतार मन्दिर है। दशावतार मन्दिर वैष्णव धर्म का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण उदाहरण है। गुप्तकालीन मन्दिरों में यह सर्वाधिक खूबसूरत है।
- गंगा और यमुना की मूर्ति गुप्तकाल की ही देन है।
- गुप्तकालीन अन्य महत्त्वपूर्ण मन्दिर हैं- नागोद राज्य में अवस्थित भूमरा का शिव मंदिर, तिगवा (जबलपुर) का विष्णु मंदिर, नचना कुठार का पार्वती मंदिर, सिरपुर का लक्ष्मण मंदिर, विदिशा के निकट उदयगिरि का विष्णु मंदिर आदि।
- कला और साहित्य की दृष्टि से गुप्त काल को भारतीय इतिहास का क्लासिकल युग और स्वर्ण युग कहा जाता है।
- प्राचीन भारतीय इतिहास में मंदिरों का निर्माण सर्वप्रथम गुप्त काल से ही प्रारंभ हुआ।
- गुप्त काल अपनी चित्रकला के लिये प्रसिद्ध है। गुफा चित्रकलाओं में अजंता व बाघ की गुफाएं महत्त्वपूर्ण हैं, जो बौद्ध धर्म से संबंधित है।
- **अजन्ता की गुफाएं** : अजन्ता महाराष्ट्र के औरंगाबाद जिले में स्थित है। यहां पर कुल 29 गुफाओं का निर्माण किया गया है, जिनमें गुफा संख्या 16, 17 और 19 का सम्बन्ध गुप्त काल से है।
- गुफा संख्या-16 में मरणासन्न राजकुमारी का चित्र बना है।
- गुफा संख्या-17 में जातक कथाओं (बुद्ध के जन्म से पूर्व की कथाओं) का उल्लेख है।
- **बाघ की गुफाएँ :** बाघ मध्य प्रदेश के धार जिले में स्थित है। यहां कुल 9 गुफाओं के होने का प्रमाण मिला है। यहां की समस्त गुफाएं गुप्त काल की मानी जाती हैं। इन गुफाओं के चित्रों के निर्माण में समरूपता दिखाई पड़ती है। अजंता की गुफाएं जहां धार्मिक और अभिजात वर्गीय हैं, वहीं बाघ की गुफाएं धर्मनिरपेक्ष व लौकिक हैं।
- विज्ञान के क्षेत्र में शून्य का सिद्धांत तथा दशमलव प्रणाली का विकास गुप्त काल में ही हुआ।
- गुप्तकालीन मूर्तिकारों ने मूर्तियों को बनाने में मोटे उत्तरीय वस्त्रों का प्रदर्शन किया है।
- व्यवसाय अथवा उद्योग का संचालन श्रेणियां करती थीं। श्रेणी एक ही प्रकार के व्यवसाय अथवा शिल्प का अनुसरण करने वाले लोगों की समिति होती थी।
- विष्णु शर्मा ने पंचतंत्र की रचना की जिसका विश्व की अनेक भाषाओं में अनुवाद हुआ है।
- जैन आचार्य सिद्धसेन ने न्याय दर्शन पर न्यायावतार की रचना की।
- विष्णु का अगला अवतार होना है, जो कल्कि अवतार है। वह सफेद घोड़े पर सवार होकर हाथों में नंगी तलवार लिये आयेंगे व सारी दुनिया के लोगों को मोक्ष दिलायेंगे।
- विष्णु के 10 अवतारों में नौवां अवतार बुद्ध माने जाते हैं।
- राजशेखर की रचना काव्यमीमांसा है।
- शकों पर विजय के बाद चन्द्रगुप्त द्वितीय ने अपनी राजधानी उज्जैन को बनायी।

महत्त्वपूर्ण प्रश्न-उत्तर एवं तथ्य

- भारत का नेपोलियन किसे कहा जाता है? —**समुद्रगुप्त**
- प्राचीन भारत के किस वंश का शासनकाल भारत का स्वर्ण युग कहा जाता है? —**गुप्त वंश**
- गुप्त युग में भूमि राजस्व की दर थी—**उपज का छठा भाग**
- इलाहाबाद का अशोक स्तंभ किस शासक के बारे में सूचना प्रदान करता है? —**समुद्रगुप्त**
- गुप्तकाल में उत्तर भारत का एक महत्त्वपूर्ण पत्तन था —**ताम्रलिप्ति (तामलूक-पश्चिम बंगाल)**
- इलाहाबाद स्तंभ में किसकी उपलब्धियां उत्कीर्ण हैं? —**समुद्रगुप्त**
- पहला ज्ञात गुप्त शासक था —**श्री गुप्त**
- गुप्त शासकों द्वारा जारी चांदी के सिक्के कहलाते थे —**रूपक**
- प्राचीन भारत में व्यापारियों का निगम था —**मणिग्राम**
- गुप्तकाल में अपनी आयुर्विज्ञान रचना के लिए जाना जाता है — **सुश्रुत संहिता** (200 BC)
- प्रयाग प्रशस्ति किसके सैन्य अभियान के बारे में जानकारी देता है? —**समुद्रगुप्त**
- अभिज्ञान शाकुंतलम के लेखक हैं —**कालिदास** (कालिदास की अन्य कृतिया हैं- रघुवंश, कुमारसम्भव, विक्रमोर्वशीयम, मालविकाग्निमित्रम, मेघदूत, ऋतुसंहार)
- किसके शासनकाल में हूणों ने भारत पर आक्रमण किया? —**स्कंदगुप्त**
- गुप्त काल का कौन सा शासक 'भारत का नेपोलियन' कहा जाता है? —**समुद्रगुप्त**

9. गुप्तोत्तर काल

(चालुक्य, राष्ट्रकूट, वाकाटक, पल्लव, चोल एवं हर्ष)

गुप्त साम्राज्य के पतन के साथ-साथ अनेक नए राजवंशों का उदय प्रारंभ हुआ। वादामी (वातापी) के उत्कर्ष का काल छठी शताब्दी ई. के मध्य से लेकर 8वीं शताब्दी के मध्य तक रहा। इन चालुक्य नरेशों को पूर्व कालीन पश्चिमी चालुक्य भी कहा जाता है। राष्ट्रकूटों के अभिलेख में उनका मूल निवास स्थान लट्टलूर (आधुनिक लाटूर-बीदर के समीप) था, उन्होंने एलिचपुर में राज्य स्थापित किया था। कल्याणी के चालुक्य वंश की स्वतंत्रता का संस्थापक तैलप द्वितीय था, इस राजवंश को प्रभुत्व राष्ट्रकूटों के पतन के फलस्वरूप प्राप्त हुआ था। दक्षिणपंथ में राज्य स्थापित करने वाला वाकाटक वंश सर्वाधिक सम्मानित व सुसंस्कृत राजवंश के रूप में भारतीय इतिहास में चर्चित है। पल्लव राजवंश का संस्थापक सिंह विष्णु था। चोलों का प्रारंभिक इतिहास संगम युग (तीसरी शताब्दी ई. पू.) से प्रारंभ होता है किन्तु चोल साम्राज्य का राजनीतिक उत्कर्ष नवीं शताब्दी ई. में हुआ था। चोल साम्राज्य की स्थापना विजयालय (850-880 ई.) ने की थी। हर्ष से पूर्व वर्धन वंश (पुष्यभूति) की राजधानी थानेश्वर थी। परन्तु, हर्ष ने कन्नौज को अपनी राजधानी बनाई थी। हर्ष के समय में कन्नौज का राजनीतिक उत्कर्ष व राजनीतिक केन्द्र के रूप में प्रतिष्ठापित होना उत्तर भारत में सामंत युग के आगमन का प्रतीक था।

पिछले 15 वर्षों के SSC के प्रश्न पत्रों में ''गुप्तोत्तर काल''

- चीनी यात्री ह्वेनसांग किसके शासनकाल में भारत भ्रमण किया था? **—हर्षवर्धन**
  (सीमा सुरक्षा बल (सब-इंस्पेक्टर्स) परीक्षा, 1997)
- भारत के किस शासक ने जावा और सुमात्रा पर विजय प्राप्त की थी? **—राजेन्द्र चोल**
  (सीमा सुरक्षा बल (सब-इंस्पेक्टर्स) परीक्षा, 1997)
- बाणभट्ट किस सम्राट के राज दरबारी थे? **—हर्षवर्धन**
  (संयुक्त स्नातक स्तर (P.T.) परीक्षा, 1999)
- उत्तर-गुप्त युग में कौन सा विश्वविद्यालय काफी प्रसिद्ध हो गया था? **—नालंदा विश्वविद्यालय**
  (संयुक्त स्नातक स्तर (P.T.) परीक्षा, 1999)
- प्रथम भारतीय शासक कौन था, जिसने अरब सागर में भारतीय नौसेना की सर्वोच्चता स्थापित की? **—राजराज-I**
  (संयुक्त स्नातक स्तर (P.T.) परीक्षा, 1999)
- चोल राजाओं ने किस धर्म का संरक्षण प्राप्त किया? **—शैव धर्म**
  (संयुक्त स्नातक स्तर (P.T.) परीक्षा, 1999)
- यादव सम्राटों की राजधानी कहां थी? **—देवगिरी**
  (संयुक्त स्नातक स्तर (P.T.) परीक्षा, 1999)
- तमिलनाडु में महाबलीपुरम मंदिर किसके शासनकाल में बनाया गया? **—पल्लव**
  (लोअर डिवीजन क्लर्क (L.D.C) परीक्षा, 1998)
- पांड्य शासकों की राजधानी कहां थी? **—मदुरै**
  (स्टेनोग्राफर (ग्रेड-डी) परीक्षा, 1999)
- विरुपाक्ष मंदिर का निर्माण किसने किया था? **—चालुक्य**
  (संयुक्त स्नातक स्तर (P.T.) परीक्षा, 2000)
- चालुक्यों ने अपना साम्राज्य कहां स्थापित किया था? **—मालवा**
  (संयुक्त मैट्रिक स्तर (P.T.) परीक्षा, 2000)
- एलोरा में सुविख्यात कैलाश शिव-मंदिर का निर्माण किस राष्ट्रकूट शासक ने करवाया था? **—कृष्ण-I**
  (संयुक्त मैट्रिक स्तर (P.T.) परीक्षा, 2000)
- पुहार नगर की नींव किस चोल शासक ने रखी थी? **—राजेंद्र चोल**
  (संयुक्त मैट्रिक स्तर (P.T.) परीक्षा, 2000)
- हर्षवर्धन के समय में कौन सा चीनी तीर्थयात्री भारत आया था? **—ह्वेनसांग**
  (संयुक्त मैट्रिक स्तर (P.T.) परीक्षा, 2001)
- चालुक्य राजा पुलकेशिन द्वितीय को किसने पराजित किया था? **—नरसिंह वर्मन प्रथम**
  (संयुक्त मैट्रिक स्तर (P.T.) परीक्षा, 2001)
- राष्ट्रकूट साम्राज्य का प्रवर्तक कौन था? **—दन्तिदुर्ग**
  (संयुक्त मैट्रिक स्तर (P.T.) परीक्षा, 2001)
- किन शासकों के राज्यकाल में अजंता और एलोरा की गुफा चित्रकला विकसित हुई थी? **—राष्ट्रकूट**
  (संयुक्त मैट्रिक स्तर (P.T.) परीक्षा, 2001)
- पांड्य साम्राज्य की राजधानी कहां थी? **—मदुरै**
  (संयुक्त मैट्रिक स्तर (P.T.) परीक्षा, 2001)
- चोल राजाओं की राजधानी कहां थी? **—तंजौर**
  (संयुक्त मैट्रिक स्तर (P.T.) परीक्षा, 2001)
- चालुक्य वंश का सर्वाधिक प्रसिद्ध शासक कौन था? **—पुलकेशिन-II**
  (संयुक्त मैट्रिक स्तर (P.T.) परीक्षा, 2002)
- अंतिम बौद्ध राजा कौन था जो संस्कृत का महान विद्वान और लेखक था? **—हर्षवर्धन**
  (संयुक्त मैट्रिक स्तर (P.T.) परीक्षा, 2002)
- तंजौर में वृहदेश्वर मंदिर का निर्माण किसने किया था? **—राजराज चोल**
  (संयुक्त मैट्रिक स्तर (P.T.) परीक्षा, 2002)
- महाबलिपुरम की स्थापना किसने की थी?**—पल्लव शासक**
  (संयुक्त स्नातक स्तर (P.T.) परीक्षा, 2002)
- कौन से शासकों ने एलोरा मंदिरों का निर्माण कराया था? **—राष्ट्रकूट**
  (संयुक्त स्नातक स्तर (P.T.) परीक्षा, 2003)
- तंजौर के वृहदेश्वर मंदिर को जो हमारे देश में सबसे बड़ा है, किसने बनवाया? **—राजराज-I**
  (सहायक निरीक्षक नियंत्रण परीक्षा,, 2003)
- महाबलिपुरम के रथों का निर्माण किसके शासनकाल में हुआ? **—पल्लवों के**
  (सेक्शन ऑफीसर्स (ऑडिट) परीक्षा, 2005)
- किस चोल शासक ने श्रीलंका के उत्तरी भाग को जीतकर अपने साम्राज्य का एक प्रांत बनाया था? **—राजराज-I**
  (संयुक्त मैट्रिक स्तर (P.T.) परीक्षा, 2008)
- त्याग समुद्र की पदवी किसने धारण किया था? **—चोल राजा राजेंद्र**
  (संयुक्त स्नातक स्तर (P.T.) परीक्षा, 2007)

- पल्लवों की राजधानी का नाम क्या था? **—कांची**
(सेक्शन ऑफीसर्स (कामर्शियल ऑडिट) परीक्षा, 2006)
- कहा जाता है कि सेंट थॉमस ईसाई धर्म का प्रचार करने के लिए भारत आए थे। ये किसके शासनकाल के दौरान आए थे? **—पार्थियन**
(सेक्शन ऑफीसर्स (ऑडिट) परीक्षा, 2008)
- महाबलीपुरम में रथ मंदिरों का निर्माण किस पल्लव शासक के शासनकाल में हुआ था? **—नरसिंह वर्मन प्रथम**
(संयुक्त मैट्रिक स्तर (P.T.) परीक्षा, 2008)
- किस चोल राजा ने लंका (सिंहल) को पहले जीता था? **—राजराज-I**
(संयुक्त मैट्रिक स्तर (P.T.) परीक्षा, 2008)
- ऐलोरा में प्रसिद्ध कैलाश मंदिर का निर्माण किस राजा ने किया था? **—सआदत खां**
(संयुक्त मैट्रिक स्तर (P.T.) परीक्षा, 2008)
- हर्षवर्धन को किसने पराजित किया था? **—पुलकेशिन-I**
(संयुक्त स्नातक स्तर (P.T.) परीक्षा, 2010)
- रत्नावली किसकी रचना है **—हर्षवर्धन की**
(सबऑर्डिनेट एकाउंट सर्विस अप्रैंटिस परीक्षा, 2010)
- हर्षवर्द्धन के राजकवि कौन थे? **—बाणभट्ट**
(संयुक्त हायर सेकेण्डरी स्तर परीक्षा, 2011)
- ह्वेनसांग किसके शासनकाल के दौरान भारत आया था? **—हर्षवर्धन**
(स्नातक स्तर (टियर-I) परीक्षा, 2011)
- चालुक्य शासक पुलकेशिन ने हर्षवर्धन को किस नदी के तट पर हराया था? **—नर्मदा**
(मल्टी टास्किंग स्टाफ (MTS) परीक्षा, 2013)
- पुलकेशिन द्वितीय किसका महानतम शासक था? **—बदौरी के चालुक्य**
(संयुक्त स्थातक स्तरीय प्रा0 परीक्षा, 2013)

विशिष्ट तथ्य ''गुप्तोत्तर काल''

- छठीं शताब्दी के मध्य गुप्त साम्राज्य पूर्णतः विभक्त हो गया। गुप्त साम्राज्य के पतनोपरांत स्थानीय शासकों ने अपनी-अपनी स्वतंत्रता घोषित करनी शुरू कर दी। हर्ष के उदय के पूर्व उत्तर व पश्चिमी भारत में निम्नलिखित प्रमुख शक्तियों का प्रादुर्भाव हुआ :
  —वल्लभी में मैत्रक वंश ने सत्ता संभाली।
  —पंजाब में हूणों का शासन था।
  —कन्नौज में मौखरि वंश ने सत्ता स्थापित की।
  —मालवा में यशोवर्मन का शासन था।
- दक्षिण भारत में इस समय पल्लवों का शासन रहा। इसके साथ ही दक्षिण भारत में तीन शक्तियों का प्रादुर्भाव हुआ—बादामी के चालुक्य, कांची के पल्लव तथा मदुरा के पाण्ड्य।
- हूण मध्य एशियाई बर्बर जाति थी।
- तोरमाण के बाद उसका पुत्र मिहिरकुल शासक बना। आरंभ में इसकी राजधानी गांधार में थी।
- मिहिरकुल के ग्वालियर लेख में उसे पृथ्वी का स्वामी कहा गया है।
- मिहिरकुल शैव मतानुयायी था तथा बौद्धों का घोर शत्रु था। कल्हण अपनी रचना राजतरंगिणी में लिखता है कि उसने श्रीनगर में शिव मंदिर बनवाया था। वह बौद्धों पर बहुत जुल्म करता था।

मालवा में यशोधर्मन का शासन था।

- यशोधर्मन ने नालंदा में एक बड़ा विहार बनवाया था।
- मंदसौर प्रशस्ति में उसे जननेद्र कहा गया है।
- यशोधर्मन के उत्थान व पतन का काल 528-543 ई. के बीच (संभवतः) रहा होगा।

कन्नौज में मौखरि वंश का शासन था।

- मालवा के शासक यशोधर्मन के बाद आर्यावर्त पर मौखरि वंश का शासन स्थापित हुआ। इनकी राजधानी कन्नौज थी।
- कन्नौज के मौखरियों के पहले शासक, हरिवर्मा था उसके बाद उसका पुत्र आदित्य वर्मा शासक बना, परन्तु मौखरियों को सामन्त स्थिति (ये पूर्ववर्ती शासक गुप्तों के सामंत थे) से स्वतंत्र स्थिति में लाने वाला शासक ईशान वर्मा था।
- ईशान वर्मा के विजयों का उल्लेख हरहा अभिलेख में है।
- ईशान वर्मा वैदिक मत का पोषक था।
- ईशान वर्मा के बाद के उल्लेखनीय व महत्त्वपूर्ण शासकों में ग्रहवर्मा था, जिसका विवाह थानेश्वर नरेश प्रभाकरवर्द्धन की कन्या राज्यश्री के साथ हुआ था।

दक्षिण भारत

बादामी (वातापी) के चालुक्य

- बादामी के चालुक्यों का उत्कर्ष पुलकेशिन प्रथम के समय में हुआ। पुलकेशिन प्रथम ने बीजापुर के निकट वातापी या बादामी को अपनी राजधानी बनाई थी, इसीलिये इस वंश को बादामी के चालुक्य भी कहते हैं।
- पुलकेशिन-I के बाद कीर्तिवर्मन शासक बना। इसे वातापी का प्रथम निर्माता कहा गया है। कीर्तिवर्मन ने गोवा पर अधिकार किया था।
- कीर्तिवर्मन के बाद उसका बेटा पुलकेशिन-II शासक बना। इसने हर्ष के विजय अभियान को संभवतः नर्मदा के तट पर रोका था।
- पुलकेशिन-II के समय में ही पल्लव-चालुक्य संघर्ष की शुरुआत होती है। पुलकेशिन-II के समय में ही ह्वेनसांग महाराष्ट्र के क्षेत्र में गया था।
- पुलकेशिन-II ने ऐहोल अभिलेख लिखवाया था। इस अभिलेख की भाषा संस्कृत व लिपि ब्राह्मी है।
  (ऐहोल प्रशस्ति लेखक रविकीर्ति जैन मतानुयायी था)
- परवर्ती शासकों के काल में शक्ति का धीरे-धीरे ह्रास होता रहा। अन्ततः राष्ट्रकूट शासक दन्तिदुर्ग ने 757 ई. में इस वंश की सत्ता को समाप्त कर अपनी सत्ता की स्थापना की।
- चालुक्यों ने वास्तुकला के क्षेत्र में दक्कनी या बेसर शैली (द्रविड़ शैली + नागर शैली का मिश्रण) की शुरुआत की।
- चालुक्यों के काल में ऐहोल, बादामी व पट्टदकल में अनेक खूबसूरत मंदिरों का निर्माण हुआ।
- मंदिरों में मेगुति जैन का मंदिर व लाढ़ का सूर्य मंदिर प्रसिद्ध है।
- एहोल को 'मंदिरों का शहर' कहा जाता है। यहां कुल 70 मंदिर के साक्ष्य मिलते हैं।

पल्लव

- पल्लव वंश का उत्कर्ष महेन्द्र वर्मन प्रथम के शासनारोहण के समय शुरू हुआ। महेन्द्र वर्मन ने 'मत्तविलास प्रहसन' की रचना की और वास्तुकला के क्षेत्र में उसने मण्डप शैली को प्रारम्भ

किया। इस शैली को महेन्द्रवर्मन शैली भी कहा जाता है। प्रारंभ में वह जैन मत का पोषक था, इसीलिये तमिल क्षेत्र में जैन धर्म का काफी विकास हुआ। लेकिन बाद में 'अप्पार' संत (नयनार संत) के प्रभाव में आकर वह शैव धर्मानुयायी बने।

- पल्लवों की देन मुख्यतः कला के क्षेत्र में रही है, अतः इनके राज्य कांची (तमिलनाडु) में पहलवों द्वारा वास्तुकला के क्षेत्र द्रविड़ शैली की शुरुआत है।
- पल्लवों की राजभाषा संस्कृत थी।
- पल्लवों के शासनकाल में देवदासी प्रथा का आरंभ हुआ।

वर्द्धन

- हर्षवर्द्धन वर्द्धन वंश का शक्तिशाली एवं यशस्वी शासक था।
- गद्दी पर बैठते समय उसकी आयु 16 वर्ष थी। उसने 606 से 647 वर्ष तक शासन किया।
- हर्ष के दरबार में अनेक विद्वानों का निवास था—बाणभट्ट, मयूर, मातंगदिवार।
- हर्ष का दरबारी बाणभट्ट था, जिसने "हर्षचरित" व "कादम्बरी" की रचना की।
- हर्ष ने बौद्ध धर्म की महायान शाखा को अपना संरक्षण प्रदान किया।
- ह्वेनसांग ने क्षत्रियों को राजाओं की जाति कहा है।
- हर्ष काल के लेखों में तीन प्रकार के करों की जानकारी प्राप्त होती है—भाग, हिरण्य तथा बलि।
- **भाग** : कृषकों से उपज का 1/10 भाग लिया जाता था।
- **हिरण्य** : नकद कर था।
- **बलि** : इसके बारे में पर्याप्त जानकारी प्राप्त नहीं हो पाती।
- हर्षचरित के टीकाकार शंकर हैं।
- हर्ष ने प्रयाग में महामोक्ष परिषद का आयोजन कराया था।
- हर्ष के काल में पुलिस कर्मियों को चाट (या भाट) कहा जाता था। दण्डपाशिक तथा दाण्डिक पुलिस विभाग के अधिकारी होते थे।
- प्रसिद्ध गणितज्ञ ब्रह्मगुप्त (रचना : ब्रह्मस्फोट् सिद्धान्त) भी हर्ष के ही समकालीन थे।
- हर्ष के समय नालंदा महाविहार (इसकी स्थापना गुप्त शासक कुमार गुप्त-I ने करवाई थी) महायान बौद्ध धर्म की शिक्षा का मुख्य केन्द्र था। हर्ष के समय यहां के कुलपति आचार्य शीलभद्र थे।
- हर्ष की मृत्यु के बाद कन्नौज राजनीतिक प्रभुत्व का केन्द्र बना। कन्नौज के लिये त्रिकोणात्मक संघर्ष में भागीदारी करनेवाले शासकों में पाल, प्रतिहार व राष्ट्रकूट थे।

महत्त्वपूर्ण प्रश्न-उत्तर और तथ्य

- ह्वेनसांग किसके शासनकाल में भारत आया था? —**सम्राट हर्ष**
- हर्ष साम्राज्य की राजधानी थी —**कन्नौज**
- चट्टानों को काटकर महाबलीपुरम का मंदिर किसके द्वारा बनवाया गया था? —**पल्लव**
- किसने नालंदा विश्वविद्यालय का भ्रमण व अध्ययन किया था? —**ह्वेनसांग ने**
- गीत गोविन्द के गीतकार जयदेव किसकी सभा को अलंकृत करते थे —**लक्ष्मण सेन**
- पहाड़ी काटकर एलोरा के विश्वविख्यात कैलाश मंदिर का निर्माण कराया था —**राष्ट्रकूटों ने**
- नालंदा विश्वविद्यालय किस लिए विश्वप्रसिद्ध है—**बौद्ध धर्म दर्शन**
- विक्रमशिला शिक्षा केंद्र के संस्थापक हैं —**धर्मपाल**
- चीनी यात्री ह्वेनसांग ने किस विश्वविद्यालय में अध्ययन किया था? —**नालंदा**
- भारत में ह्वेनसांग को याद करने का मुख्य कारण है —**'सी युकी' रचना**
- नागानन्द, रत्नावली एवं प्रियदर्शिका के लेखक थे —**हर्षवर्धन**
- विक्रमशिला महाविहार की स्थापना किस वंश के शासक द्वारा करवाई गई थी? —**पालवंश**
- नर्मदा नदी पर सम्राट हर्ष के दक्षिणावर्ती आगमन को रोका —**पुलकेशिन द्वितीय ने**
- एलोरा में गुफाएं और शैलकृत मंदिर है —**हिंदू, बौद्ध व जैन धर्म की**
- उत्तर गुप्त युग में भारत का प्रसिद्ध विश्वविद्यालय था—**नालंदा**
- बाणभट्ट किस सम्राट के राज दरबारी कवि थे? —**हर्षवर्धन**
- 'हर्षचरित' नामक पुस्तक लिखी थी —**बाणभट्ट ने**
- हर्षवर्धन ने बौद्ध महासम्मेलन आयोजित किया था —**प्रयाग में**
- किस दक्षिण भारतीय राज्य में उत्तम ग्राम प्रशासन था? —**चोल**
- दक्षिण भारत का कौन सा राजवंश अपनी नौसैनिक शक्ति के लिए प्रसिद्ध था? —**चोल**
- चोल प्रशासन की विशेषता क्या थी —**ग्राम प्रशासन की स्वायत्तता**
- प्राचीन भारत का वह राज्य, जो नौ सेना के लिए प्रसिद्ध था —**चोल**
- चोल युग प्रसिद्ध था —**ग्रामीण सभाओं के लिए**
- चोल शासन के समय बनी प्रतिमाओं में सबसे अधिक विख्यात हुई —**नटराज शिव की कांसे की प्रतिमा**
- चोल राजा जिसने सीलोन (श्रीलंका) पर विजय प्राप्त की थी —**राजेन्द्र प्रथम**
- प्रथम भारतीय शासक कौन था जिसने अरब सागर में भारतीय नौसेना की सर्वोच्चता स्थापित की? —**राजराजा प्रथम**
- चालुक्यों की राजधानी कहां थी? —**वातापी (बादामी)**
- तोलकप्पियम ग्रंथ संबंधित है —**व्याकरण और काव्य से**
- द्रविड शैली के मंदिरों में गोपुरम से तात्पर्य है —**तोरण के ऊपर बने अलंकृत और बहुमंजिला भवन से**
- तृतीय संगम हुआ था —**मदुरई में**
- दक्षिण भारत के किन राजवंशों का उल्लेख संगम साहित्य में किया गया है? —**चेर, चोल व पाण्डय**
- राष्ट्रकूट साम्राज्य की नींव किसने रखी थी? —**दन्तिदुर्ग**
- महाबलीपुरम के सात पगौडा किसके द्वारा संरक्षित कला के साक्षी हैं —**पल्लवों के**
- कौन से शासकों ने एलोरा मंदिर का निर्माण कराया था —**राष्ट्रकूट**
- तमिल भाषा के 'शिल्पदिकारम' और 'मणिमेखलै' नामक गौरव ग्रंथ संबंधित हैं —**हिंदू धर्म से**
- महाबलीपुरम की स्थापना किसने की थी? —**पल्लव**
- संगम युग में उरइयूर किसके लिए विख्यात था? —**कपास व्यापार का केंद्र**
- बृहदेश्वर मंदिर स्थित है —**तंजौर में**
- एलोरा के प्रसिद्ध कैलाश मंदिर का निर्माण कराया था —**राष्ट्रकूट शासक (कृष्ण प्रथम)**
- मीनाक्षी मंदिर स्थित है —**मदुरई में**

भारत : सांस्कृतिक परिदृश्य

भारत में प्रचलित प्रमुख लोक नृत्य

राज्य/के.शा. प्र.	प्रचलित प्रमुख लोक नृत्य
1. असम	बिहू, नागा नृत्य, नट पूजा, कलिगोपाल, खेल गोपाल, नहारास, बोईसाजू, झुमुरा, बुगुरुम्बा, बिछुआ, अंकियानाट, होब्जानाई, तबल चौगंबी आदि।
2. अरुणाचल प्रदेश	मुखौटा नृत्य, युद्ध नृत्य आदि।
3. बिहार	कठघोरबा नृत्य, जोगीड़ा नृत्य, लौंडा नृत्य, पंवड़िया नृत्य, धोबिया नृत्य, करिया झूमर नृत्य, झरनी नृत्य, विद्यापति नृत्य, झिझिया नृत्य, खोलडिन झागोर, खोल, दकनी नृत्य आदि।
4. गोवा	झागोर, खोल, दकनी नृत्य आदि।
5. गुजरात	गरबा, डांडिया रास, गणपति भजन, लास्या, झकोलिया, पणिहारी नृत्य, रासलीला, दीपक नृत्य, टिप्पनी, भवई आदि।
6. पंजाब व हरियाणा	भांगड़ा, गिद्धा, कोकली, डफ, धमान, सांग आदि।
7. हिमाचल प्रदेश	छारबा, छपेली, चम्बा, महाथू, थाली, झैंता, जद्दा, सांगला, डांगी, डंडा नाच, धमान आदि।
8. कर्नाटक	यक्षगान, भूतकोला, कर्गा, कुनीता, वीग्गास्से आदि।
9. केरल	ओटटम, कुडीओट्टम, कालीअट्टम, केकोट्टिकली, थुलाल, भद्रकपिष, ओट्टमतुल्लन, टप्पातिकली, पादयानी आदि।
10. मध्य प्रदेश	दीवाली नृत्य, चैत नृत्य, रीना नृत्य, छेरिया नृत्य, गोंडो नृत्य, भागोरिया नृत्य, मुण्डड़ी नृत्य, सींगमाड़िया नृत्य आदि।
11. महाराष्ट्र	लावणी, मौनी, लेजम, गौरीचा, गफा, ललिता, दहिकला, तमाशा, कोली, बोहदा, पोवाड़ा आदि।
12. मणिपुर	राखाल, महारास, वसंतरास, लाई हरीबा, नटरास, थांग्टा, पुंगचोलोन, कीतलम आदि।
13. मेघालय	बांग्ला
14. मिजोरम	चेरोकान, पाखुपिला आदि।
15. नगालैंड	खैवा, युद्ध नृत्य, नूरालिम, लिम, कुमीनागा, चोंग आदि।
16. उड़ीसा	छऊ, डंडानाट, सवारी, अया, संचार, गरुड़ वाहन, जदूर, मुदारी, चंगुनाटा, धूमरा, पैका आदि।
17. राजस्थान	घापाल, घूमर, गकरिया, शंकरिया, जिन्दाद, गणगौर, पणिहारी, गोपिका, लीला, डंडिया, कृष्ण नृत्य, चरी, चंग, फूंदी, गीदड़, कामड़ आदि।
18. तमिलनाडु	पिन्नल कोलाट्टम, कावड़ी कोलाट्टम, कड़ागम, कुम्मी आदि।
19. उत्तर प्रदेश	रासलीला, नौटंकी, कजरी, झूला, छपेली, चाचरी, जांगर, थाली, जैता, झोरा, जद्दा, दीवाली नृत्य आदि।
20. जम्मू-कश्मीर	राउफ, हिकात, मंदजास आदि।
21. लक्षद्वीप	परिचाकाली
22. पश्चिम बंगाल	गम्भीरा, कीर्तन, मरसिया, ढाली, रामवेश, काठी, जात्रा, बांउल आदि।
23. झारखण्ड	छऊ नृत्य, जदुर नृत्य,जपी नृत्य, करमा नृत्य, माघे नृत्य, पइका नृत्य, करिया झूमर नृत्य, जतरा नृत्य, नचनी नृत्य, नेटुआ नृत्य, गोंग नृत्य, मुण्डारी नृत्य, अगिन नृत्य आदि।
24. छत्तीसगढ़	सुआ नृत्य, चन्देनी नृत्य, रऊत नाचा, पंथी नाचा, करमा नृत्य, सैला नृत्य, परधोनी नृत्य, बिलमा नृत्य, फाग नृत्य, थापटी नृत्य, ककसार नृत्य, गेंडी नृत्य, गंवर नृत्य, दोरला नृत्य, सरहुल नृत्य, काल दहका नृत्य, दशहरा नृत्य, अटारी नृत्य, हुलकी नृत्य, राई नृत्य, ढांढ़ल नृत्य आदि।
25. उत्तराखण्ड	चांचरी/झोड़ा नृत्य, छपेली नृत्य, छोलियां नृत्य, झुमैलो नृत्य, जागर नृत्य आदि।

भारतीय लोक-कला शैलियां

लोक-कला शैली	संबंधित राज्य
1. रंगोली	महाराष्ट्र
2. गोदना	बिहार व झारखण्ड
3. माण्डणां	राजस्थान
4. आपना	पहाड़ी क्षेत्र
5. साथिया	गुजरात
6. अरपन	बिहार
7. चौक पूरना	उत्तर प्रदेश
8. मेंहदी	राजस्थान

शाास्त्रीय संगीत की शैलियां

शास्त्रीय संगीत शैली	शास्त्रीय गायक
1. हिन्दुस्तानी संगीत	हीराबाई वरोडकर, पंडित भीमसेन जोशी
2. कर्नाटक संगीत	मल्लिकार्जुन मंसूर, श्रीनिवास अय्यर सेमनगुडी, पालघाट राम, भागवतार अरिकुड्डी, रामानुज आयंगर, पलनि सुब्बुड, महाराजपुरम, विश्वनाथ अय्यर, दक्षिणमूर्ति पिल्लै
3. शास्त्रीय गायन	एम.एस. सुब्बलक्ष्मी
4. पंडवाणी शैली	तीजनबाई, ऋतु शर्मा
5. गजल गायिकी	पीनाज मसानी, मल्लिका पुखराज, बेगम अख्तर, गुलाम अली, मेंहदी हसन, शाहिर लुधियानवी, कैफी आजमी, जगजीत सिंह।

प्रमुख भारतीय राग

राग	विशेषता
1. राग भैरव	प्रभात बेला में गाया जाने वाला राग
2. राग भैरवी	प्रातःकाल में गाया जाने वाला राग
3. राग दीपक	दीपक प्रज्जवलित करते समय गाया जाने वाला राग
4. राग यमन	रात्रि के प्रथम प्रहर में गाया जाने वाला राग
5. राग विहाग	रात्रि के द्वितीय प्रहर में गाया जाने वाला राग
6. राग बिलावल	रात्रि के प्रथम प्रहर में गाया जाने वाला राग
7. राग देस	रात्रि के द्वितीय प्रहर में गाया जाने वाला राग
8. राग मेघ	वर्षा ऋतु में गाया जाने वाला राग
9. राग डिण्डोली	वसंत ऋतु में गाया जाने वाला राग
10. राग काफ	फाल्गुन माह के रात्रि समय में गाया जाने वाला राग
11. राग भूपाली	रात्रि के प्रथम प्रहर में गाया जाने वाला राग
12. राग श्री	मानव मनोमस्तिष्क को अह्लादित करने वाला राग
13. राग बागश्री	यह राग मध्य रात्रि में गाया जाता है।
14. राग मालकोस	यह राग शीत ऋतु का है तथा मध्य रात्रि में गाया जाता है।

वाद्य यंत्र और उनके वादक

वाद्य यंत्र	वादक
1. सितार	पंडित रविशंकर, निखिल बनर्जी, विलायत खां बंदे हसन, शाहिद परवेज, उमाशंकर मिश्र, बुद्धादित्य मुखर्जी।
2. तबला	अल्लारखा खां, गदुई महाराज, जाकिर हुसैन, लतीफा खां, किशन महाराज, फैय्याज खां, सुखविन्दर सिंह।
3. बाँसुरी	पन्ना लाल घोष, हरि प्रसाद चौरसिया, वी. कुंजमणि, एन. लीला, राजेन्द्र प्रसन्ना, राजेन्द्र कुलकर्णी।
4. सरोद	अमजद अली खां, अली अकबर खां, अलाउद्दीन खां, विश्वजीत राय चौधरी, जरीन दारुवाला, बुद्धसेन दास गुप्ता, मुकेश शर्मा।
5. वायलिन	डॉ. एन. राजन, विष्णु गोविंद जोग, एल. सुब्रह्मण्यम, संगीता राजन, कुनक्कड़ी वैद्यनाथन, टी.एन. कृष्णन।
6. वीणा	एस. बालचन्द्रन, कल्याण कृष्ण भागवतार, बदरुद्दीन डागर, वी. दोरेस्वामी आयंगर।
7. शहनाई	बिस्मिल्ला खां, दयाशंकर जगन्नाथ, अली अहमद, हुसैन खा।
8. संतूर	शिव कुमार शर्मा, भजन सोपोरी।
9. पखावज	गोपाल दास, उस्ताद रहमान खां छत्रपति सिंह, ठाकुर लक्ष्मण सिंह।
10. रुद्रवीणा	असद अली खां, उस्ताद सादिक अली खां।
11. मृदंग	पालधार रघु, ठाकुर भीकम सिंह, डॉ. जगदीश सिंह।
12. सारंगी	पंडित रामनारायण जी, इन्द्रलाल, सावरी खां, ध्रुव घोष, वजीर खां, आसिफ अली खां, रमजान खां, संतोष मिश्रा।
13. गिटार	विश्व मोहन भट्ट, ब्रजभूषण काबड़ा, श्रीकृष्णनलिन।
14. हारमोनियम	भूरेलाल खां, महमूद धालपुरी, अप्पा जुलगांवकर
15. जल तरंग	घासीराम निर्मल, जगदीश मोहन, रामस्वरूप प्रभाकर।

भारतीय धर्म एवं दर्शन

हिन्दू धर्म

- हिन्दू धर्म भारत का सर्वप्रमुख धर्म माना जाता है।
- हिन्दू धर्म की प्राचीनता एवं विशालता के कारण इसे 'सनातन धर्म' भी कहा जाता है।
- हिन्दू धर्म की शुरुआत लगभग 1500 ई.पू. में मानी जाती है, जब भारतवर्ष में आर्यों का आगमन हुआ।
- हिन्दू धर्म लघु एवं महान परम्पराओं का उत्तम समन्वय दर्शाता है।
- हिन्दू धर्म सगुण एवं बहुदेववादी धर्म माना जाता है।
- हिन्दू धर्म में मोक्ष एवं पुनर्जन्म पर विश्वास किया जाता है।
- हिन्दू धर्म में कर्म को बहुत अधिक महत्त्व प्रदान किया गया है और कहा गया है कि जो जैसा कर्म करता है उसे उसका वैसा ही परिणाम मिलता है।
- हिन्दू धर्म में देवताओं के साथ देवियों को भी समान महत्ता प्रदान की गई है।
- हिन्दू धर्म में जीवन के चार लक्ष्य बताए गए हैं। ये हैं—1. धर्म 2. अर्थ 3. काम तथा 4. मोक्ष।
- हिन्दू धर्म में चार आश्रमों का पालन अनिवार्य माना गया है। ये चार आश्रम हैं—ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ एवं संन्यास।
- हिन्दू धर्म में चार युग-कृत, त्रेता, द्वापर एवं कलि माने गए हैं।
- हिन्दू धर्म में 16 संस्कारों का पालन अनिवार्य बताया गया है। ये 16 संस्कार हैं—1. गर्भाधान, 2. पुंसवन, 3. सीमोन्तोत्रयन, 4. जातकर्म 5. नामकरण 6. निष्क्रमण 7. अन्नप्राशन 8. चूड़ाकरण 9. कर्णछेदन 10. विद्यारम्भ 11. उपनयन 12. वेदारम्भ 13. केशान्त 14. सावित्री 15. विवाह तथा 16. अन्त्येष्टि।
- हिन्दू धर्म वर्ण व्यवस्था पर आधारित है। ऋग्वैदिक काल में केवल आर्य और अनार्य ही दो वर्ण थे, लेकिन कालान्तर में चारवर्ण-ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य एवं शूद्र विकसित हो गए।
- हिन्दू धर्म में चार योग—ज्ञान योग, भक्ति योग, कर्मयोग एवं राजयोग महत्त्वपूर्ण स्थान रखते हैं।
- हिन्दू धर्म में चारों दिशाओं में चार धामों की स्थापना की गई है। ये हैं—उत्तर में ब्रदीनाथ, दक्षिण में रामेश्वरम, पूर्व में जगन्नाथपुरी तथा पश्चिम में द्वारका। इन चारों धामों की यात्रा करना प्रत्येक हिन्दू धर्मावलम्बी का पुनीत कर्त्तव्य माना जाता है।
- हिन्दू धर्म के धार्मिक ग्रंथों में वेद, उपनिषद, पुराण, रामायण, महाभारत, गीता, रामचरितमानस आदि मुख्य हैं।
- वेदों की संख्या 4 है। ये हैं—ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद तथा अथर्ववेद।

- उपनिषदों की संख्या 13 है जबकि पुराणों की संख्या 18 है।
- महर्षि वाल्मीकि रचित रामायण संस्कृत साहित्य में 'आदिकाव्य' माना जाता है।
- वाल्मीकि रामायण में सात काण्ड हैं। ये हैं—बालकाण्ड, अयोध्या काण्ड, करण्यकाण्ड, किष्किन्धाकाण्ड, सुंदरकाण्ड, युद्धकाण्ड तथा उत्तर काण्ड।
- रामायण में कुल मिलाकर 24000 श्लोक हैं। इसी कारण इसे चतुर्विंशातिस्राहि संहिता भी कहा जाता है।
- महाभारत के रचयिता वेदव्यास हैं। महाभारत को पंचम वेद के नाम से भी जाना जाता है। आरम्भिक अवस्था में इसे जय संहिता कहा जाता था।
- महाभारत में श्लोकों की संख्या 1 लाख है। इसी कारण इसे 'शतसाश्रही संहिता' भी कहा जाता है।
- महाभारत में कुल 18 पर्व हैं।

बौद्ध धर्म

- बौद्ध धर्म की स्थापना गौतम बुद्ध ने की थी।
- गौतम बुद्ध (बचपन का नाम सिद्धार्थ) का जन्म 563 ई. पू. में नेपाल के कपिलवस्तु के शाक्य वंशीय क्षत्रिय राज परिवार में लुम्बिनी नामक वन में हुआ था।
- 16 वर्ष की अवस्था में गौतम बुद्ध का विवाह यशोधरा नामक एक कन्या से हुआ, जिससे उन्हें एक पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई।
- 29 वर्ष की अवस्था में गौतम बुद्ध ने एक रात गृह त्याग दिया और ज्ञान की खोज में निकल पड़े। बुद्ध द्वारा गृहत्याग की घटना को 'महाभिनिष्क्रमण' के नाम से जाना जाता है।
- बोधगया में निरंजना नदी के तट पर एक पीपल के वृक्ष के नीचे कई दिनों की तपस्या के उपरान्त उन्हें ज्ञान की प्राप्ति हुई। तत्पश्चात् वे बुद्ध कहलाए।
- वाराणसी के समीप सारनाथ में उन्होंने अपने पांच पुराने साथियों को अपना प्रथम उपदेश दिया। इसे बौद्ध धर्म ग्रंथों में 'धर्मचक्रप्रवर्तन' के नाम से जाना जाता है।
- गौतम बुद्ध का निधन 483 ई. पू. में कुशीनगर (देवरिया जिला, उत्तर प्रदेश) में हुआ, जिसे बौद्ध धर्म ग्रंथों में महापरिनिर्वाण की संज्ञा दी गई है।
- गौतम बुद्ध ने अपने उपदेश मगध, कौशल, वैशाली, कौशाम्बी एवं अन्य अनेक राज्यों में दिये।
- गौतम बुद्ध ने अपने जीवनकाल के दौरान सर्वाधिक उपदेश कौशल राज्य की राजधानी श्रावस्ती में दिए।
- गौतम बुद्ध के अनुयायी शासकों में बिम्बसार, प्रसेनजित तथा उदयन प्रमुख थे।
- गौतम बुद्ध ने सांसारिक दुखों के संबंध में चार आर्य सत्यों (दुःख, दुःख समुदाय, दुःख निरोध और दुःख निरोधयामिनी प्रतिपद्या) का उपदेश दिया।
- गौतम बुद्ध ने सांसारिक दुःखों से मुक्ति हेतु 'अष्टांगिक मार्ग' की बात कही।
- प्रतीत्यसमुत्पाद गौतम बुद्ध के उपदेशों का सार एवं उनके संपूर्ण शिक्षाओं का आधार स्तंभ है।
- 'निर्वाण' बौद्ध धर्म का परम लक्ष्य है, जिसका अर्थ है—'दीपक का बुझ जाना' अर्थात जीवन-मरण चक्र से मुक्त हो जाना।
- गौतम बुद्ध ने निर्वाण प्राप्ति को सरल बनाने के लिए 10 शीलों पर विशेष बल दिया।
- बुद्ध, संघ और धम्म बौद्ध धर्म के त्रिरत्न माने जाते हैं।
- बौद्ध धर्म के धर्मग्रंथ को 'पिटक' के नाम से जाना जाता है, जिनकी संख्या तीन है। ये हैं—सुत्तपिटक, विनयपिटक तथा अभिधम्मपिटक।
- कनिष्क के शासनकाल में बौद्ध धर्म दो वर्गों में विभाजित हो गया। ये दो वर्ग थे—हीनयान तथा महायान। बाद में वज्रयान का भी विकास हुआ।
- कालान्तर में हीनयान सम्प्रदाय भी दो भागों में—वैभाषिक एवं सौत्रान्तिक में विभाजित हो गया।
- महायान सम्प्रदाय भी दो भागों—शेन्यवाद (माध्यमिक) तथा विज्ञानवाद (योगाचार) में विभाजित हो गया।
- बौद्ध धर्म के अनुयायी जापान, थाईलैंड, कोरिया, म्यांमार, लाओस, श्रीलंका, मंगोलिया, तिब्बत, नेपाल, वियतनाम एवं भारत में अधिवासित हैं।

जैन धर्म

- 'जैन' शब्द 'जिन' से बना है जिसका अर्थ है—विजेता अर्थात् जिसने इन्द्रियों को जीत लिया हो।
- छठी शताब्दी ई.पू. में प्रचलित धर्मों में जैन धर्म काफी लोकप्रिय हुआ था।
- जैन धर्म की संस्थापना वर्द्धमान महावीर ने की थी।
- वर्द्धमान महावीर का जन्म 569 ई.पू. में प्राचीन वज्जि गणतंत्र की राजधानी वैशाली (वर्तमान बसाढ़) में लिच्छवियों की एक शाखा ज्ञातवंश में हुआ था। उनके पिता सिद्धार्थ तथा माता त्रिशाला थीं। उनका विवाह यशोदा नामक कन्या से हुआ था जिससे उन्हें एक पुत्री 'प्रियदर्शिनी' उत्पन्न हुई।
- 30 वर्ष की अवस्था में महावीर ने गृह त्याग दिया और एक वर्ष तक वस्त्र धारण कर भटकते रहे। तत्पश्चात् उन्होंने वस्त्र, भिक्षापात्र आदि सभी चीजों का त्याग कर दिया और घोर तपस्या में लीन हो गए।
- 12 वर्ष की कठोर तपस्या के पश्चात् उन्हें कैवल्य (ज्ञान) की प्राप्ति हुई। तत्पश्चात् उन्होंने जीवनपर्यंत घूम-घूम कर अपने मत का प्रचार किया।
- महावीर की मृत्यु 72 वर्ष की अवस्था में 485 ई. पू. में पावापुरी नामक स्थान में हुई।
- जैन धर्म में 24 तीर्थंकर हुए। इन तीर्थंकरों के नाम इस प्रकार हैं—1. ऋषभ 2. अजित 3. संभव 4. अभिनंद 5. सुमति 6. पदमप्रभ 7. सुपार्श्व 8. चंद्रप्रभा 9. पुष्पदंत 10. शीतल 11. श्रेयस 12. वासुपूज्य 13. विमल 14. अनन्त 15. धर्म 16. शांति 17. कुन्तु 18. अर 19. मालि 20. सुनिसुव्त्र 21. नामी 22. नेमिनाथ 23. पार्श्वनाथ 24. महावीर।
- जैन धर्म में तीर्थंकर का अर्थ संसार रूपी सागर से पार कराने के लिए औरों को मार्ग बताने वाला होता है।
- जैन धर्म के ग्रंथों को 'आगम' कहा जाता है।
- ऋषभदेव को जैव धर्म का संस्थापक, प्रवर्तक एवं पहले तीर्थंकर के रूप में जाना जाता है।
- जैन धर्म के 23वें तीर्थंकर पार्श्वनाथ ने 4 महाव्रतों का प्रतिपादन किया। ये 4 महाव्रत हैं—अहिंसा, सत्य, अपरिग्रह तथा अस्तेय।
- पार्श्वनाथ ने अपने 4 महाव्रतों में से अहिंसा को सर्वाधिक महत्त्व प्रदान किया।
- जैन धर्म के 24वें व अंतिम तीर्थंकर महावीर को जैन धर्म का वास्तविक संस्थापक कहा जाता है।
- महावीर ने अपने पूर्वगामी तीर्थंकर पार्श्वनाथ द्वारा प्रतिपादित 4 महाव्रतों में पांचवां व्रत ब्रह्मचर्य जोड़ा।
- सम्यक श्रद्धा सम्यक ज्ञान और सम्यक आचरण जैन धर्म के तीन प्रमुख रत्न माने जाते हैं जिन्हें त्रिरत्न कहा जाता है।
- स्यादवाद जैन धर्म में मूल रूप से ज्ञान की सापेक्षता का सिद्धांत है। स्यादवाद को 'सप्त भंगीनय' एवं 'अनेकान्तवाद' भी कहा जाता है।
- महावीर की मृत्यु के लगभग 200 वर्ष पश्चात् जैन धर्म दो भागों—श्वेताम्बर और दिगम्बर में विभाजित हो गया।

सिक्ख धर्म

- सिक्ख शब्द शिष्य से उत्पन्न हुआ है, जिसका तात्पर्य है गुरुनानक के शिष्य, अर्थात् उनकी शिक्षाओं का अनुसरण करने वाले।
- सिक्ख धर्म की स्थापना 15वीं शताब्दी में भारत के उत्तर-पश्चिमी भाग के पंजाब प्रांत में गुरुनानक देव द्वारा की गई।
- गुरुनानक का जन्म 1469 ई. में लाहौर (पाकिस्तान) के समीप तलवंडी नामक स्थान में हुआ था।
- गुरुनानक हिन्दू-मुस्लिम एकता के समर्थक थे। वे मानव एकता एवं सद्भावना के भी समर्थक थे।
- गुरुनानक ने जगह-जगह भ्रमण कर मानव मात्र के कल्याण का उपदेश दिया। यात्रा के दौरान उनके साथ मर्दाना और बालाबन्धु नामक दो शिष्य हमेशा साथ रहे।
- गुरुनानक ने अपने प्रिय शिष्य 'लहणा' की क्षमताओं की पहचान कर उसे अपना उत्तराधिकारी नियुक्त किया और उसे अंगद नाम दिया।
- गुरु अंगद ने गुरुनानक देव की वाणियों को संग्रहित करके उसे गुरुमुखी लिपि में लिपिबद्ध कराया।
- सिक्ख धर्म में 'सतनाम' का अर्थ है—उसी का नाम सत्य है।
- सिक्ख धर्म में गुरु परम्परा का विशेष महत्त्व रहा है। इनके 10 गुरु माने गए हैं, जिनके नाम और काल इस प्रकार हैं—
  1. गुरुनानक देव 1469-1539
  2. गुरु अंगद 1539-1552
  3. गुरु अमरदास 1552-1574
  4. गुरु रामदास 1574-1581
  5. गुरु अर्जुनदास 1581-1606
  6. गुरु हरगोविन्द 1606-1644
  7. गुरु हरराय 1644-1661
  8. गुरु हरकृष्ण 1661-1664
  9. गुरु तेगबहादुर 1664-1675
  10. गुरु गोविंद सिंह 1675-1708
- सिक्ख धर्म के तीसरे गुरु अमरदास ने जाति प्रथा एवं छुआछूत को समाप्त करने के उद्देश्य से लंगर परम्परा की नींव डाली।
- सिक्ख धर्म के चौथे गुरु रामदास ने 'अमृत सरोवर' (अब अमृतसर) नामक एक नए नगर की नींव रखी।
- सिक्ख धर्म के पांचवें गुरु अर्जुनदास ने 'हरमिंदर साहब' (स्वर्ण मंदिर) की स्थापना की।
- गुरु अर्जुनदास ने अपने पिछले गुरुओं तथा अपने समकालीन हिन्दू-मुस्लिम संतों के पदों एवं भजनों का संग्रह कर 'आदि ग्रंथ' की रचना की।
- सिक्ख धर्म के दसवें गुरु गोविन्द सिंह सिक्ख पंथ को एक नया स्वरूप, नई शक्ति और नयी ओजस्विता प्रदान की।
- गुरुगोविंद सिंह ने 'खालसा' परम्परा की स्थापना की। उन्होंने खालसाओं के पांच अनिवार्य लक्षण भी निर्धारित किए, जिन्हें पांच कक्के कहते हैं। ये पांच अनिवार्य लक्षण हैं—केश, कंघा, कड़ा, कच्छा और कृपाण।
- गुरु गोविंद सिंह ने पुरुष खालसाओं को 'सिंह' तथा महिला खालसाओं को 'कौर' की उपाधि दी।
- गुरु गोविंद सिंह के बाद कोई अन्य गुरु नहीं माना गया, बल्कि 'आदिग्रंथ' को ही गुरु माना जाने लगा।
- 'आदि ग्रंथ' ही सिक्खों का मुख्य धर्म ग्रंथ है। इसे गुरु ग्रंथ साहिब' भी कहा जाता है।
- गुरुद्वारे में गुरु ग्रंथ साहिब का पाठ करने वाले विशेष व्यक्ति को 'ग्रन्थी' और विशिष्ट रूप से गायन करने वाले व्यक्ति को 'रागी' कहा जाता है।
- सिक्ख धर्म के 5 प्रमुख धर्म केंद्र (तख्त) हैं। ये हैं—अकाल तख्त, हरमिंदर साहेब, पटना साहेब, आनन्दपुर साहेब और हुजूर साहेब।
- 'वाहे गुरु' सिक्ख धर्म में ईश्वर का प्रशंसात्मक नाम है।

भारतीय दर्शन

क्रम.	दर्शन	संस्थापक
1.	न्याय दर्शन	गौतम
2.	वैशेषिक दर्शन	कणाद (उलूक)
3.	सांख्य दर्शन	कपिल
4.	योग दर्शन	पतंजलि
5.	मीमांसा दर्शन	जैमिनी
6.	वेदान्त दर्शन	वादरायण
7.	लिंगायत दर्शन	वासवराज
8.	जड़वाद दर्शन	चार्वाक

दार्शनिक मत और उनके प्रवर्तक

	दार्शनिक मत	प्रवर्तक
1.	अद्वैतवाद	शंकराचार्य
2.	भेदाभेदभाव	भास्कराचार्य
3.	विशिष्टाद्वैतवाद	रामानुजाचार्य
4.	द्वैतवाद	माधवाचार्य
5.	द्वैताद्वैतवाद	निम्बाकाचार्य
6.	शैव विशिष्टा द्वैतवाद	श्रीकण्ठाचार्य
7.	वीर शैव विशिष्ट द्वैतवाद	श्रीपतिचार्य
8.	शुद्धाद्वैतवाद	वल्लभाचार्य
9.	अविभागाद्वैतवाद	विज्ञानभिक्षु
10.	अनिन्यभेदाभेदवाद	बलदेवाचार्य

मेले

भारत में मेलों का अपना एक अलग ही महत्त्व है। यहां विभिन्न अवसरों पर कई प्रकार के मेलों का आयोजन होता है।

प्रमुख मेले

1. कुम्भ मेला	कुम्भ मेले का आयोजन 12 वर्षों में एक बार होता है। इस मेले का आयोजन चार स्थानों पर होता है। ये चार स्थान हैं—प्रयाग, नासिक, उज्जैन तथा हरिद्वार। अर्द्धकुम्भ का आयोजन 6 वर्ष में एक बार होता है।
2. गंगा सागर मेला	इस मेले का आयोजन कोलकाता के दक्षिण में स्थित सागर नामक स्थान पर जहां हुगली नदी सागर से मिलती है, होता है।
3. पुष्कर मेला	इस मेले का आयोजन राजस्थान राज्य में अजमेर के समीप स्थिति पुष्कर नामक स्थान पर होता है।

9. सोनपुर का मेला	इस मेले का आयोजन बिहार स्थित सोनपुर में कार्तिक पूर्णिमा के अवसर पर होता है। यह भारत का सबसे बड़ा पशु मेला है।
27. सूरजकुण्ड हस्तशिल्प मेला	यह भारत के सुंदरतम हस्तशिल्प और हथकरघा मेलों में से एक है। यह प्रतिवर्ष हरियाणा राज्य में सूरजकुण्ड नामक स्थान पर लगता है।
29. अंतर्राष्ट्रीय आम मेला	उत्तर प्रदेश के सहारनपुर जिले में अंतर्राष्ट्रीय आम मेला का आयोजन किया जाता है। इस मेले के अंतर्गत एक बगीचे में आम के विभिन्न किस्मों की प्रदर्शनी लगती है।
31. अंतर्राष्ट्रीय व्यापार मेला	इस मेले का आयोजन प्रतिवर्ष नई दिल्ली में 14-23 नवंबर तक किया जाता है। यह विश्व के सर्वोत्तम मेलों में से एक है। नई दिल्ली स्थित प्रगति मैदान में इसे वृहत् पैमाने पर लगाया जाता है।
37. कालूजी महाराज का मेला	यह माह पर्यन्त (30 दिन) तक चलने वाला एक प्राचीन मेला है, जो कि मध्य प्रदेश प्रांत के निमाड़ जिले के अंतर्गत आने वाले पपल्याखुर्द नामक गांव में आयोजित किया जाता है। यह मेला संत कालूजी की स्मृति में लगाया जाता है।
38. ग्वालियर का मेला	मध्य प्रदेश प्रान्त के जनपद ग्वालियर में इस मेले का आयोजन दिसंबर-जनवरी माह में किया जाता है। व्यापारिक दृष्टि से इस मेले का विशेष महत्त्व है। पशुओं की खरीद-फरोख्त के अलावा यहां जानी-मानी कंपनियों के उत्पादों तथा वाहनों की भी खरीदारी होती है।
39. गोपा अष्टमी का मेला	इस मेले को गऊचारण मेला भी कहा जाता है, क्योंकि इस अवसर पर गायों की पूजा होती है। ब्रज क्षेत्र का यह प्रमुख मेला मथुरा में कार्तिक माह के अष्टमी के अवसर पर आयोजित होता है। मेले में श्रीकृष्ण, बलराम एवं गायों की सवारी भक्तों के आकर्षण का प्रमुख केंद्र होती है, जो कि द्वारिकाधीश मंदिर से उठायी जाती है।
40. पीर बुधान का मेला	मुस्लिम संत पीर बुधारी के मजार पर आयोजित होने वाला यह एक प्राचीन मेला है। संत पीर बुधारी का मजार सांवरा गांव में है, जो कि मध्य प्रदेश के शिवपुरी जिले में स्थित है। मेले का आयोजन अगस्त-सितंबर माह में होता है।

भारत के प्रसिद्ध ऐतिहासिक एवं दर्शनीय स्थल

स्थल	स्थिति
1. अजन्ता	औरंगाबाद
2. एलोरा	औरंगाबाद
3. एलीफेन्टा	मुम्बई
4. अमरनाथ	कश्मीर
5. आनन्द भवन	इलाहाबाद
6. अकबर का मकबरा	सिकंदरा
7. आईलैण्ड पैलेस	उदयपुर
8. चारमीनार	हैदराबाद
9. चिल्का झील	भुवनेश्वर के समीप
10. डल झील	श्रीनगर
11. दिलवाड़ा मंदिर	माउण्टआबू
12. गेटवे ऑफ इण्डिया	मुम्बई
13. गोल गुम्बज	बीजापुर
14. गांधी सदन	नई दिल्ली
15. बिरला प्लेनीटोरियम	कोलकाता
16. ब्लैक पैगोडा	कोणार्क
17. वृहदेश्वर मंदिर	तंजावुर
18. बुलंद दरवाजा	फतेहपुर सीकरी
19. वृंदावन गार्डेन	मैसूर
20. बीबी का मकबरा	औरंगाबाद
21. विजय चौक	नई दिल्ली
22. कंदारिया महादेव	खजुराहो
23. द्वारिका	काठियावाड़
24. कुतुबमीनार	दिल्ली
25. लिंगराज मंदिर	भुवनेश्वर
26. महाकालेश्वर	उज्जैन
27. महाकाली मंदिर	कोलकाता
28. मालाबार हिल्स	मुम्बई
29. मीनाक्षी मंदिर	मदुरई
30. महाबलीपुरम	चेन्नई के निकट
31. नटराज मंदिर	चेन्नई
32. निशात बाग	श्रीनगर
33. नासिक मंदिर	नासिक
34. नन्दी प्रतिमा	नागरकोइल
35. गोमतेश्वर	श्रावणबेलगोला
36. हैंगिंग गार्डेन	मुम्बई
37. हवा महल	जयपुर
38. हावड़ा ब्रिज	कोलकाता
39. हम्पी	कर्नाटक
40. हेलिविड	मैसूर
41. जगन्नाथ मंदिर	पुरी
42. विजय स्तंभ	चित्तौड़गढ़
43. जंतर-मंतर	जयपुर, दिल्ली
44. जामा मस्जिद	दिल्ली
45. लाल किला	दिल्ली, आगरा
46. सान्ताक्रुज	मुम्बई
47. सारनाथ	वाराणसी
48. शालीमार बाग	श्रीनगर
49. शांति निकेतन	कोलकाता
50. स्वर्ण मंदिर	अमृतसर
51. सांची स्तूप	सांची (विदिशा, म.प्र.)
52. ताजमहल	आगरा
53. टावर ऑफ साइलेंस	मुम्बई
54. त्रिमूर्ति भवन	नई दिल्ली
55. विजय घाट	दिल्ली

56. राजघाट	दिल्ली
57. रामेश्वरम मंदिर	रामेश्वरम
58. वीर भूमि	दिल्ली
59. कर्मभूमि	दिल्ली
60. उदय भूमि	दिल्ली
61. एकता स्थल	दिल्ली
62. शांति वन	दिल्ली
63. शक्ति स्थल	दिल्ली
64. समता स्थल	दिल्ली
65. जालियांवाला बाग	अमृतसर
66. छोटी इमामबाड़ा	लखनऊ
67. बड़ी इमामबाड़ा	लखनऊ
68. हौज खास	दिल्ली
69. रामबाग	आगरा
70. लक्ष्मण झूला	ऋषिकेश
71. राष्ट्रपति भवन	दिल्ली
72. बैलूर मठ	कोलकाता
73. पिछोला झील	उदयपुर
74. गोलघर	पटना
75. विष्णुपद मंदिर	गया
76. अढ़ाई दिन का झोपड़ा	अजमेर
77. साबरमती आश्रम	अहमदाबाद
78. गोलकुण्डा का किला	हैदराबाद
79. जूनागढ़ का किला	बीकानेर
80. जयसमंद	उदयपुर
81. फतेहसागर	उदयपुर
82. आगरा फोर्ट	आगरा
83. जहांगीर महल	आगरा फोर्ट
84. जिम कार्बेट पार्क	नैनीताल
85. फिरोजशाह कोटला	दिल्ली
86. लक्ष्मी नारायण मंदिर	दिल्ली
87. चश्मा शाही	जम्मू-कश्मीर
88. फोर्ट विलियम	कोलकाता
89. हरमिंदर	पटना साहिब
90. पादरी की हवेली	पटना
91. शेरशाह का मकबरा	सासाराम
92. जयसमंद	उदयपुर
93. आनासागर	अजमेर
94. खजुराहो मंदिर	छतरपुर
95. सेंट जॉर्ज किला	चेन्नई
96. विवेकानन्द रॉक मेमोरियल	तमिलनाडु
97. प्रिंस ऑफ वेल्स म्युजियम	मुम्बई
98. कनेरी की गुफाएं	मुम्बई
99. रथ मंदिर	महाबलीपुरम
100. रंगास्वामी मंदिर	कोटागिरि
101. स्वर्ण मंदिर	अमृतसर
102. बुलंद दरवाजा	फतेहपुर सीकरी
103. विरूपाक्ष मंदिर	हम्पी
104. कन्दारिया महादेव मंदिर	खजुराहो
105. अमरनाथ गुफा	कश्मीर
106. ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती की दरगाह	अजमेर
107. ब्लैक पैगोडा	कोणार्क
108. चामुण्डा देवी का मंदिर	कांगड़ा
109. रघुनाथ मंदिर	चित्तौड़गढ़
110. जोशी मठ	बद्रीनाथ
111. नंदादेवी	पिथौड़ागढ़
112. लोटस टेम्पल	दिल्ली
113. इण्डिया गेट	दिल्ली

भारत की भाषाएं

- भारत में भाषाओं के संबंध में विस्तृत जानकारियां सर्वप्रथम 1961 ई. की जनगणना में एकत्रित की गई थीं।
- 1971 ई. की जनगणना रिपोर्ट के अनुसार भारत में 1652 मातृ भाषाएं तथा 187 भाषाएं थीं। इन 187 भाषाओं में से 94 भाषाएं 10,000 से भी कम लोगों द्वारा बोली जाती है तथा सिर्फ 33 भाषाएं ही ऐसी हैं जिनके बोलने वालों की संख्या 1 लाख से अधिक है।
- भारत की 97% जनसंख्या सिर्फ 23 भाषाएं ही बोलती हैं। इन 23 भाषाओं में से 22 भाषाओं को भारत के संविधान की आठवीं अनुसूची में रखा गया है।
- मूल संविधान में केवल 14 भाषाओं को ही संविधान की आठवीं अनुसूची में रखा गया था। ये 14 भाषाएं थीं— 1. हिन्दी 2. संस्कृत 3. बांग्ला 4. तमिल 5. तेलुगू 6. कन्नड़ 7. मलयालम 8. उड़िया 9. गुजराती 10. मराठी 11. पंजाबी 12. असमिया 13. कश्मीरी एवं 14. उर्दू।
- सिंधी को 21वें संविधान संशोधन अधिनियम (1987 ई.) के द्वारा कोंकण, मणिपुरी एवं नेपाली को 71वें संविधान संशोधन अधिनियम (1992) द्वारा तथा बोडो, डोगरी, संथाली एवं मैथिली को 92वें संविधान संशोधन अधिनियम (2003) द्वारा संविधान की आठवीं अनुसूची में जोड़ा गया। इस प्रकार आठवीं अनुसूची में भाषाओं की कुल संख्या 22 हो गई।
- सभी प्रादेशिक भाषाओं में हिन्दी बोलने और समझने वालों की संख्या सर्वाधिक है। इस कारण हिन्दी को संघ की राजभाषा के रूप में मान्यता प्रदान की गई है।
- संविधान के अनुच्छेद 343(1) के अनुसार संघ की भाषा हिन्दी है और इसकी लिपि देवनागरी है।
- संविधान के अनुच्छेद 348 के अनुसार उच्चतम न्यायालय तथा उच्च न्यायालय की सभी कार्यवाहियों में अंग्रेजी का प्रयोग होगा।
- संविधान का अनुच्छेद 29 अल्पसंख्यकों की भाषा की रक्षा का अधिकार राष्ट्रपति को प्रदान करता है।

विश्व की भाषाएं

- विश्व में सर्वाधिक लोगों द्वारा बोली जाने वाली प्रथम तीन भाषाएं- क्रमशः मंडारिन, अंग्रेजी तथा स्पेनिश हैं।
- हिन्दी विश्व में चौथी सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा है। हिन्दी के अलावा भारत में अन्य बोली जाने वाली भाषाओं में बांग्ला का विश्व में सातवां पंजाबी का पंद्रहवां, मराठी का सोलहवां, तेलुगू का अठारहवां तथा तमिल का बीसवां स्थान है।

विश्व की शीर्ष 20 भाषाओं का क्रम—

1. मंडारिन 2. अंग्रेजी 3. स्पेनिश 4. हिन्दी 5. अरबी 6. पुर्तगाली 7. बांग्ला 8. रूसी 9. जापानी 10. जर्मन 11. फ्रेंच 12. जैवनिज 13. कोरियाई 14. इटालियन 15. पंजाबी 16. मराठी 17. वियतनामी 18. तेलुगू 19. तुर्की 20. तमिल।

भारत के सांस्कृतिक स्थल

1. **अजन्ता** : महाराष्ट्र प्रान्त के औरंगाबाद जिले में स्थित है। यहां दूसरी सदी से छठी तथा सातवीं सदी के मध्य निर्मित बौद्ध गुफायें हैं जिनमें बुद्ध से संबंधित जीवनगाथा और शिक्षाओं का चित्रण है। 'मरणासन्न राजकुमारी' तथा 'माता और शिशु' नामक चित्र अत्यन्त सुंदर आकर्षक एवं प्रभावोत्पादक हैं।
2. **अयोध्या** : उत्तर प्रदेश के फैजाबाद के समीप सरयू सरिता के तट पर स्थित अयोध्या नामक नगर भगवान राम की पुण्य भूमि होने के कारण इतिहास प्रसिद्ध है। रामायण काल में यह कोशल राज्य की राजधानी रही।
3. **आएहोल** : कर्नाटक प्रांत के बीजापुर जिले में स्थित आएहोल पश्चिमी चालुक्यों की राजधानी थी। यह दक्षिणी शैली की वास्तुकला का प्रमुख केंद्र था। मंदिरों के नगर आएहोल में 'लाह खां', मेगुती तथा दुर्ग का मंदिर प्रमुख है।
4. **आबू** : राजस्थान प्रान्त में स्थित आबू पर्वतीय नगर है। यह स्थान जैन मंदिरों एवं मूर्तियों के लिए जगप्रसिद्ध है। संगमरमर निर्मित 'दिलवाड़ा का मंदिर' तथा तेजपाल का मंदिर स्थापत्य कला का सुंदर नमूना है।
5. **उज्जैन** : उज्जैन मध्य प्रदेश में क्षिप्रा नदी के पूर्वी किनारे पर स्थित है। यह छठीं शताब्दी ई.पू. के महाजनपद अवन्ति की राजधानी था। यह तत्कालीन समय का प्रमुख आर्थिक केंद्र था।
6. **एलिफेन्टा** : बम्बई से समुद्र में सात मील उत्तर-पूर्व एलिफेन्टा नामक छोटा सा द्वीप स्थित है। एलिफेंटा की गुफाओं में बुद्ध की मूर्तियों के साथ-साथ हिन्दू देवी-देवताओं की मूर्तियां मिली हैं। महायोगी, नटराज, भैरव त्रिमूर्ति, अर्धनारीश्वर, कैलाशधारी आदि की मूर्तियों कलात्मक दृष्टि से उच्चकोटि की हैं। इनमें त्रिमूर्ति 'शिव की प्रतिमा' सबसे प्रसिद्ध है।
7. **एलोरा** : महाराष्ट्र प्रान्त के औरंगाबाद जिले में स्थित एलोरा अपने गुहा-मंदिरों के लिए प्रसिद्ध है। यहां पहाड़ी को काटकर अनेक गुफायें बनाई गई हैं जो हिन्द, जैन तथा बौद्ध सम्प्रदायों से सम्बद्ध हैं। राष्ट्रकूट नरेश कृष्ण प्रथम द्वारा निर्मित 'कैलाश मंदिर' वास्तु तथा तक्षण कला का अद्भुत नमूना है।
8. **ओदन्तपुरी** : बिहार प्रान्त के नालंदा जिले में स्थित यह स्थल बौद्ध बिहार तथा विश्वविद्यालय के लिए प्रसिद्ध था। पाल वंशीय शासक गोपाल द्वारा स्थापित ओदन्तपुरी विश्वविद्यालय शिक्षा का प्रमुख केंद्र था, जहां लगभग एक हजार विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण करते थे। तेरहवीं शताब्दी में बख्तियार खिलजी ने इस संस्थान को नष्ट कर दिया।
9. **कपिलवस्तु** : नेपाल की तराई में स्थित कपिलवस्तु शाक्यों की राजधानी तथा बौद्ध धर्म के प्रवर्तक महात्मा बुद्ध की जनमस्थली था। प्राचीनकाल में यह महत्त्वपूर्ण व्यापारिक केंद्र था।
10. **कुरुक्षेत्र** : यह हरियाणा में थानेश्वर के निकट स्थित है। यह 'महाभारत' का रणक्षेत्र था जहां कुरन जनजाति के कौरवों और पांडवों के बीच युद्ध हुआ था।
11. **कांचीपुरम** : वर्तमान तमिलनाडु का कंजीवरम नामक जनपद ही प्राचीनकाल में कांची या काञ्चीपुरम् नाम से विख्यात था। यह पल्लवकालीन प्रमुख साहित्यिक धार्मिक एवं कलात्मक केंद्र था। पल्लव नरेश राजसिंह के काल में निर्मित कैक्लाशनाथ मंदिर तथा नन्दि वर्मन द्वितीय के काल में निर्मित 'बैकुण्ठपेरूमात्र मंदिर' प्रविड़ स्थापत्यकला का अद्भुत नमूना है।
12. **काशी** : यह उत्तर प्रदेश में गंगा के उत्तरी किनारे पर स्थित है। छठी शताब्दी में यह एक महाजनपद था जिसकी राजधानी वाराणसी थी। इसकी गणना भारत के सात पवित्र मोक्षदायिका नगरियों में की गयी है।
13. **कान्यकुब्ज** : वर्तमान में यह नगर कन्नौज के नाम से जाना जाता है। प्राचीनकाल में यह नगर हर्षवर्द्धन तथा उसके पश्चात् प्रतिहारों की राजधानी रहा। सम्राट हर्ष ने ह्वेनसांग के नेतृत्व में एक बौद्ध सभा का आयोजन करवाया था।
14. **कुम्हरार** : बिहार प्रांत के पटना जिले के समीप कुम्हरार गांव वास्तुकला के लिए जाना जाता है। यहां से मौर्यकालीन महल तथा भवनों के अवशेष मिले हैं।
15. **खजुराहो** : मध्य प्रदेश प्रान्त के छतरपुर जिले में स्थित यह स्थल 'मंदिरों का नगर' माना जाता है। चंदेल राजाओं द्वारा निर्मित कण्डारिया महादेव मंदिर, पार्श्वनाथ का मंदिर, चौसठ योगिनी मंदिर तथा चित्रगुप्त सूर्य मंदिर वास्तुकला के अद्भुत नमूने हैं।
16. **गया** : यह बिहार में फल्गू नदी के किनारे स्थित है। यहां हिन्दू अपने पित्तरों को पिंड दान करते हैं। विष्णुपद मंदिर यहीं अवस्थित है।
17. **चंपा** : बिहार के भागलपुर जिले में स्थित चंपा छठी शताब्दी ई. पू. में अंग जनपद की राजधानी थी।
18. **तंजौर** : तमिलनाडु के त्रिचनापल्ली जिले में स्थित तंजौर चोल शासकों की राजधानी थी। यहां ही दक्षिण भारत का सर्वश्रेष्ठ हिन्दू मंदिर 'बृहदीश्वर मंदिर' स्थित है।
19. **दीदारगंज** : बिहार प्रांत की राजधानी पटना के पास यह स्थान स्थित है। यहां से 'चामरग्राही यक्षिणी' की मूर्ति प्राप्त हुई है।
20. **नालंदा** : बिहार की राजधानी पटना के निकट राजगृह से सात मील की दूरी पर आधुनिक बड़गांव नामक ग्राम से प्राचीन नालंदा के अवशेष मिलते हैं। यहां सातवीं शताब्दी का जगत प्रसिद्ध विश्वविद्यालय था। यह बौद्ध धर्म एवं शिक्षा का महान केंद्र था।
21. **पट्टडकल** : कर्नाटक प्रांत के बीजापुर जिले में मालप्रभा नदी के तट पर स्थित यह स्थान चालुक्य वास्तु एवं तक्षण कला का महत्त्वपूर्ण केंद्र माना जाता है। विरूपाक्ष मंदिर, संगमेश्वर मंदिर तथा पापनाथ का मंदिर चालुक्य वास्तुकला के अद्भुत नमूने हैं।
22. **पाटलिपुत्र** : यह बिहार की वर्तमान राजधानी पटना का प्राचीन नाम है। उदायिन ने इस नगर की नींव डाली तथा मगध साम्राज्य की राजधानी बनाया। यहीं पर तृतीय संगीति एवं प्रथम जैन सभा का आयोजन किया गया था।
23. **प्रयाग अथवा इलाहाबाद** : गंगा-यमुना के संगम पर स्थित यह नगर चिरकाल से भारतीय धर्मपरायण जनता का तीर्थस्थल रहा है। यहां प्रत्येक छठे वर्ष अर्धकुम्भ तथा बारहवें वर्ष महाकुम्भ का आयोजन किया जाता है। सम्राट अकबर ने इस प्राचीन नगरी प्रयाग का नाम परिवर्तित कर इलाहाबाद कर दिया।
24. **पावापुरी** : बिहार प्रांत स्थित पावापुरी नालंदा से 25 किमी. दूर स्थित है। यहीं जैन धर्म के प्रवर्तक महावीर ने निर्वाण प्राप्त किया था। मनियार मठ, वैनुवम तथा जल मंदिर यहां के दर्शनीय स्थल हैं।
25. **पारसनाथ** : जैनों का प्रमुख तीर्थस्थल पारसनाथ झारखण्ड राज्य की पहाड़ी पर स्थित है। जैन धर्म में हुए 24 तीर्थंकरों में से 21 तीर्थंकरों को यही निर्वाण प्राप्त हुआ था। यह स्थान सुमेर शिखर के नाम से प्रसिद्ध है।

26. **पुरी** : उड़ीसा प्रान्त में समुद्र तट पर स्थित पुरी हिन्दुओं का पवित्र तीर्थ-स्थल है। इसकी स्थापना शंकराचर्य द्वारा की गई थी। जगन्नाथ का मंदिर स्थापत्य कला का अद्‌भुत नमूना है।

27. **पंचमढ़ी** : मध्य प्रदेश में पिपरिया स्टेशन के समीप सतपुडा के पठार पर स्थित 'पंचमढ़ी' मध्य प्रदेश का प्रमुख पर्यटन स्थल है। पंचमढ़ी के मुख्य सौंदर्यपूर्ण उच्च शिखरों में धूपगढ़, चौरागढ़ एवं महादेव से प्रकृति के नयनाभिराम सूर्योदय एवं सूर्यास्त के दृश्यों की रमणीयता का पर्यटक यहां आकर आनन्द उठाते हैं।

28. **बोधगया** : गया से 7 मील दूर दक्षिण में बोध गया स्थित है। कहा जाता है कि गौतम बुद्ध को यहीं ज्ञान प्राप्त हुआ था। यहां भगवान बुद्ध का विशाल कलापूर्ण मंदिर अवस्थित है।

29. **बिहार शरीफ** : बिहार प्रदेश स्थित पटना से लगभग 64 किलोमीटर दूर बिहार शरीफ मुस्लिम संस्कृति का प्रमुख केंद्र है। यहां स्थित मलिक इब्राहिम बया का मकबरा पुरातात्विक दृष्टि से अत्यंत ही महत्त्वपूर्ण है। इसके अतिरिक्त यहां मुस्लिम संत पीर मखदूम शाह शरीफुद्दीन का मकबरा स्थित है।

30. **ब्रदीनाथ** : उत्तराखण्ड राज्य में अवस्थित बद्रीनाथ भारत के चार प्रमुख धामों में से एक है। ऋषि गंगा एवं अलकनंदा नदियों के तट पर तथा नर और नारायणपर्वत श्रृंखलाओं के मध्य स्थित इस स्थान पर प्रतिवर्ष हजारों की मात्रा में धर्मावलम्बी तथा पर्यटक आते हैं। बद्रीनाथ का मंदिर तृप्तकुंड, नारदकुण्ड, पंचशिला, ब्रह्मकपाल, पंचतारा उर्वशी मंदिर, गणेश गुफा आदि यहां के प्रमुख दर्शनीय स्थल है।

31. **बराबर गुफा** : बिहार के गया जिले में बेला स्टेशन से आठ मील पूर्व की ओर बराबर की पहाड़ी है। यहां मौर्यकालीन निर्मित सात गुफायें प्राप्त हुई हैं जिन पर अशोक के लेख खुदे हैं। इन गुफाओं में 'सुदामा गुफा', गर्ण चौपर गुफा, लोमस ऋषि गुफा, गोपिका गुफा आदि महत्त्वपूर्ण हैं।

32. **मनेर** : बिहार प्रदेश स्थित पटना के समीप मनेर मुस्लिम धर्मस्थल है। यहां मुस्लिम सूफी संत पीर हजरत मरवादुन याहिया मनेरी तथा शाह दौलत का मकबरा स्थित है।

33. **मथुरा** : प्राचीनकाल में शूरसेन जनपद की राजधानी रहा मथुरा भगवान कृष्ण की जन्मस्थली के रूप में विख्यात है। कुषाणकाल में यह स्थापत्य एवं मूर्तिकला के केंद्र के रूप में विख्यात रहा। इस नगर में कला की नई शैली मथुरा कला का विकास हुआ।

34. **महाबलीपुरम** : तमिलनाडु प्रदेश में मद्रास से 40 किमी. दूर समुद्र तट पर स्थित महाबलीपुरम 'सप्तपगोडा' के लिए जाना जाता है। पल्लवकाल में यहां चट्टानों को काटकर अनेक गुफाओं का निर्माण किया गया। 'शोर मंदिर' यहां का अत्यंत ही सुंदर एवं प्रसिद्ध मंदिर है।

35. **मदुरई** : तमिलनाडु प्रांत का वर्तमान मदुरई ही पाण्डय राज्य की राजधानी थी। मीनाक्षी का मंदिर स्थापत्य कला का अदभुत नमूना है।

36. **राजगीर अथवा राजगृह** : बिहार की राजधानी पटना से दक्षिण की ओर लगभग 74 किमी. दक्षिण में स्थित राजगीर प्राचीन मगध साम्राज्य की राजधानी था। बौद्ध एवं जैन धर्म की पवित्र तीर्थस्थली राजगीर में वेणुवन, सप्तधारा, ब्रह्मकुण्ड, मनियार मठ, जरासंध का अखाड़ा, रत्नागिरि एवं गृहकूट आदि दर्शनीय स्थल हैं।

37. **लखनऊ** : वर्तमान उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ नवाबों तथा बागों का नगर माना जाता था। बड़ा तथा छोटा इमामबाड़ा, बारादरी, छत्तर मंजिल, दिलखुश रेजीडेंसी, विधानसभा आदि यहां के दर्शनीय स्थल हैं।

38. **लुम्बिनी** : गोरखपुर जिले के नौतनवां स्टेशन से दस मील की दूरी पर नेपाल की सीमा में 'रूमिनीदेई' नामक ग्राम ही प्राचीनकाल का लुम्बिनी है। बौद्ध धर्म के प्रवर्तक गौतम बुद्ध की यह जन्मस्थली रही है।

39. **विदिशा** : मध्य प्रदेश स्थित विदिशा को शुंगवंशीय शासकों ने अपनी राजधानी बनाया था। सांची स्तूप के निर्मित तोरणों में यहां के कलाकारों ने अपना अतुलनीय योगदान दिया था। इस नगर में यत्र-तत्र स्तूपों के अवशेष प्राप्त हुए हैं।

40. **विक्रमशिला** : प्राचीनकाल में शिक्षा का प्रसिद्ध केंद्र विक्रमशिला बिहार प्रदेश में भागलपुर से लगभग 24 मील दूर पथर घाटा नामक स्थान पर स्थित था। यह विश्वविद्यालय अपने समय का तंत्र विद्या का महान केंद्र था।

41. **वेलूर मठ** : बंगाल प्रान्त में कलकत्ता नगर में गंगा नदी के तट पर स्थित वेलूर मठ की स्थापना स्वामी विवेकानन्द ने की थी। यहीं पर रामकृष्ण मिशन का मुख्यालय है।

42. **विवेकानन्द रॉक मेमोरियल** : कान्याकुमारी में चट्टानों पर स्थित विवेकानन्द रॉक मेमोरियल की आधारशिला 1892 ई. में स्वामी विवेकानन्द द्वारा रखी गई थी। हाल-फिलहाल यहां स्वामी विवेकानन्द की प्रतिमा स्थापित की गयी है।

43. **वैशाली** : बिहार स्थित मुजफ्फरपुर से 37 किलोमीटर दक्षिण-पश्चिम की ओर स्थित इस नगर को इक्ष्वाकुवंशीय राजा विशाल ने बसाया था। जैन धर्म के चौबीसवें तीर्थंकर महावीर स्वामी की वैशाली जन्मस्थली रही है। यहां द्वितीय बौद्ध संगीति का आयोजन किया गया था।

44. **श्रवणबेलगोला** : कर्नाटक प्रदेश के हासन जिले में स्थित श्रवणबेलगोला जैन अनुयायियों का तीर्थस्थान है। यह स्थान चन्द्रगिरि तथा विन्ध्यगिरि नामक पहाड़ी पर स्थित है। यहां गंग नरेश राजमल्ल चतुर्थ को मंत्री चामुण्ड ने गोमतेश्वर की प्रसिद्ध प्रतिमा का निर्माण करायाथा।

45. **स्वर्ण मंदिर** : पंजाब प्रान्त के अमृतसर जिले में स्थित स्वर्ण मंदिर की गणना सिख धर्मावलंबियों के पवित्र स्थल के रूप में की जाती है। इस मंदिर का निर्माण सिखों के पांचवें गुरु अर्जुनदेव के काल में पूर्ण हुआ था।

46. **सारनाथ** : सारनाथ वाराणसी से लगभग दस किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। वर्तमान में इस नगर के ध्वंसावशेष प्राप्त होते हैं। यहां महात्मा बुद्ध ने प्रथम उपदेश देकर धर्मचक्रप्रवर्तन किया था। यहां पर अशोक द्वारा निर्मित स्तूप आज भी आकर्षण का केंद्र है।

47. **सोमनाथ** : गुजरात प्रदेश में समुद्र तट पर स्थित यह नगर श्रीकृष्ण और अर्जुन का विहार स्थल था। भारत के अत्यंत पवित्र बारह शिव लिंगों में से एक को यहां स्थापित किया गया था। महमूद गजनवी ने इस नगर पर आक्रमण कर इसे लूटा तथा अपार सम्पत्ति अपने साथ ले गया।

48. **हरिद्वार** : गंगा के तट पर स्थित इस नगर की गणना भारत के प्रमुख तीर्थस्थलों में की जाती है। 'हर की पौड़ी' यहां का प्रसिद्ध दर्शनीय स्थल है। यहां पर प्रत्येक छह वर्ष पर अर्द्ध कुम्भ तथा प्रत्येक बारह वर्ष पर कुम्भ का आयोजन होता है।

49. **हलेविड** : होयसल वंश की राजधानी द्वार समुद्र का आधुनिक नाम हवलेविड है। होयसलवंशी शासक विष्णु वर्धन द्वारा निर्मित होयलेश्वर मंदिर स्थापत्य एवं तक्ष कला का अदभुत नमूना है। यहां से जैन मंदिरों के भी प्रमाण मिलते हैं, जिनमें पार्श्वनाथ मंदिर सर्वाधिक प्रसिद्ध है।

आधुनिक भारत : धार्मिक एवं सामाजिक सुधार आंदोलन

ब्रह्म समाज—भारत में ब्रह्म समाज 19वीं शताब्दी की प्रथम धार्मिक व सामाजिक सुधार संस्था थी। इस संस्था के माध्यम से चलाया गया राममोहन राय का धर्म तथा समाज सुधार आंदोलन इस शताब्दी का पहला पुनर्जागरण आंदोलन था। वैसे राजा राममोहन राय को 'आधुनिक भारत के पिता' के रूप में भी अभिहित किया जाता है लेकिन वास्तव में वे 'अतीत और भविष्य के मध्य सेतु' थे। वे हिन्दू समाज को सभी रूढ़ियों और कुरीतियों से मुक्त कराना चाहते थे। वे भारतीय स्त्रियों की मुक्ति के प्रबल समर्थक थे। राजा राममोहन राय के सतत् प्रयासों का ही परिणाम था कि गवर्नर नजनरल लार्ड विलियम बैंटिक ने 4 दिसम्बर 1829 को अधिनियम XVII पारित करके सती-कर्म को गैर-कानूनी तथा फौजदारी अपराध की कोटि में रखते हुए दण्डनीय घोषित कर दिया। इस अधिनियम के द्वारा सामाजिक विधान के माध्यम से समाज सुधार की प्रक्रिया शुरू हुईं।

राजा राममोहन राय धर्म को तार्किकता के आधार पर अपनाने की सलाह देते थे। इस्लाम के एकेश्वरवाद तथा मूर्ति पूजा विरोध, सूफी मत, ईसाई धर्म की नैतिक शिक्षाओं, पिश्चम के उत्तराधिकारवाद तथा बौद्धिक सिद्धान्तों से वे बहुत अधिक प्रभावित थे। हिन्दू धर्म के एकेश्वरवादी मत का प्रचार करने के लिए उन्होंने 1815 से 1819 के बीच आत्मीय सभा की स्थापना की जो बाद में ब्रह्म समाज के रूप में प्रचलित हुआ। ब्रह्म समाज का मानना था कि संसार में जो कुछ दिखायी दे रहा है, उस सबका कारण तथा प्रेरणा स्रोत ईश्वर है। इसी प्रकार प्रकृति, पृथ्वी और स्वर्ग सभी उस ईश्वर की सृष्टि हैं। ब्रह्म समाज ईश्वर तथा जीव (मनुष्य) के बीच किसी मध्यस्थ (पुजारी वर्ग) की सत्ता स्वीकार नहीं करते थे। ये लोग न तो बलि चढ़ाने की अनुमति देते थे, न तो मूर्तिपूजा का समर्थन करते थे। ब्रह्म समाजी बिना किसी भेदभाव के मानव के प्रति प्रेम तथा जीवन के उच्चतम विधि के रूप में मानवता की सेवा पर बल देते थे।

ध्यातव्य है कि राममोहन राय को **राजा** की उपाधि मुगल बादशाह अकबर शाह (द्वितीय) ने 1830 में प्रदान किया था और उसी वर्ष उन्हें अपने राजदूत के रूप में ब्रिटिश सम्राट विलियम चतुर्थ के दरबार इंग्लैण्ड भेजा जहां वह तीन वर्ष रहे और वहीं 27 सितम्बर 1833 को उनका देहावसान हो गया।

तत्वबोधिनी सभा—राममोहन राय की मृत्यु के बाद ब्रह्म समाज बिल्कुल शिथिल पड़ गया। इसको पुनः क्रियाशील बनाने में देवेन्द्र नाथ टैगोर का बहुत बड़ा योगदान है। ब्रह्म समाज में आने से पूर्व देवेन्द्र नाथ टैगोर धार्मिक सत्य की खोज करने के उद्देश्य से जोरासांकी (कलकत्ता) में **तत्वरंजिनी सभा** गठित की थी। यही आगे चलकर तत्वबोधिनी सभा कहलाई। तत्वबोधिनी सभा का मुख्य उद्देश्य धर्म के वास्तविक तत्व के खोज को बढ़ावा देना तथा उपनिषदों के ज्ञान का प्रचार-प्रसार करना था, जिसके लिए साप्ताहिक सभाएं आयोजित की जाती थीं। शीघ्र ही अभिजात्य वर्ग का एक बड़ा समूह उसका सदस्य बन गया क्योंकि ब्रह्म समाज से इसके कार्यक्रम का घनिष्ठ संबंध था।

संगत सभा—देवेन्द्र नाथ की अनुपस्थिति में केशव चन्द्र सेन ने 1857 में 'ब्रह्म समाज' की सदस्यता ग्रहण की तथा इसके पूर्णकालिक धर्म प्रचारक बन गए। देवेन्द्र नाथ एवं केशव चन्द्र ने मिलकर ब्रह्म समाज का काफी प्रचार-प्रसार किया। युवा केशव ने अपने प्रभाव से नवयुवकों को एकत्रित करके सुविख्यात 'संगत सभा' (मैत्री संघ) का गठन किया। इसका मुख्य उद्देश्य उस समय की आध्यात्मिक तथा सामाजिक समस्याओं पर विचार करना था बाद में केशव चन्द्र सेन के प्रयासों के फलस्वरूप ही मद्रास में 'वेद समाज' तथा महाराष्ट्र में **'प्रार्थना समाज'** की स्थापना हुई। उन्होंने आमूल परिवर्तनवादी सामाजिक सुधारों, महिलाओं के उद्धार तथा अन्तर्जातीय विवाहों आदि के लिए जी-तोड़ प्रयास किया। वह ब्रह्म समाज को अखिल भारतीय आंदोलन का रूप देना चाहते थे।

लेकिन 1866 में देवेन्द्र नाथ टैगोर के समूह ने ब्रह्म समाज से अलग होकर आदि ब्रह्म समाज की स्थापना की। आदि ब्रह्म समाज का नारा था 'ब्रह्मवाद ही हिन्दूवाद है।' इस विघटन के पश्चात केशव चन्द्र सेन और अधिक उत्साह के साथ ब्रह्म समाज के प्रचार-प्रसार में जुट गए और 1872 में उनके इन प्रयासों से सरकार ने **'ब्रह्म विवाह अधिनियम'** पारित कर दिया। लेकिन 1828 में उन्होंने अपनी अल्पवयस्क बेटी का विवाह कूच बिहार के महाराजा के अल्पवयस्क बेटे के साथ कर स्वयं 'ब्रह्म विवाह अधिनियम' का उल्लंघन किया। इस घटना से उत्तेजित होकर केशव चन्द्र सेन के नव विधान के बहुत से सदस्य सामूहिक रूप से अलग हो गए और इस प्रकार ब्रह्म समाज में दूसरा विघटन हो गया। इससे अलग हुए सदस्यों ने 'साधारण ब्रह्म समाज' की स्थापना की।

साधारण ब्रह्म समाज—साधारण ब्रह्म समाज की कार्यप्रणाली की रूपरेखा आनन्द मोहन बोस ने तैयार की और इसमें प्रजातांत्रिक सिद्धांतों का समावेश किया गया। साधारण ब्रह्म समाज की प्रमुख गतिविधियों में नारी शिक्षा, अकाल राहत कोष का संयोजन, अनाथालयों की स्थापना, मूक-बधिरों के लिए विद्यालयों एवं इसी प्रकार के अन्य कल्याणकारी संस्थाओं की स्थापना शामिल था।

युवा बंगाल आंदोलन—युवा बंगाल आंदोलन का बीजारोपण हेनरी लुई विवियन डेरोजियो ने किया था। डेरोजियो 1826 में कलकत्ता आए तथा अंग्रेजी साहित्य और इतिहास के शिक्षक के रूप में हिन्दू कालेज में उनकी नियुक्ति हुई। ये उन गिने-चुने अध्यापकों में से थे जिनके ज्ञान, सत्यनिष्ठा और बुराई से घृणा की प्रवृत्ति का उनके सम्पर्क में आने वाले युवकों पर बहुत अधिक प्रभाव पड़ा। हालांकि कुछ प्रभावशाली लोगों ने इन पर युवकों को गुमराह करने का आरोप लगा कर नौकरी से निकलवा दिया। लेकिन डेरोजियो का प्रभाव बना रहा और यह युवा बंगाल आंदोलन के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

प्रार्थना समाज—वैसे तो प्रार्थना समाज की स्थापना केशव चन्द्र सेन की महाराष्ट्र यात्रा के बाद ही हुई। लेकिन इसके प्रमुख संस्थापक डॉ0 आत्माराम पाण्डुरंग और महादेव गोविन्द रानाडे थे। इसके एक और प्रभावशाली नेता आर. जी. भण्डारकर भी थे। फिर भी रानाडे का उल्लेख 'पश्चिमी भारत में सांस्कृतिक पुनर्जागरण के अग्रदूत' के रूप में किया जाता है। प्रार्थना समाज ने स्त्रियों की परतंत्र स्थिति, बाल विवाह, विधवा पुनर्विवाह का निषेध, जातिगत संकीर्णता के आधार पर सजातीय विवाह, स्त्रियों की अशिक्षा और उपेक्षा, विदेश यात्रा का निषेध, स्त्रियों पर लगाई गयी विभिन्न प्रकार की वर्जनाओं, अन्तर्जातियों के बीच खान-पान पर प्रतिबंध तथा छुआछूत आदि का विरोध किया।

सत्यशोधक समाज—सत्यशोधक समाज की स्थापना ज्योतिबा फूले ने 1873 में दलित वर्गों को शिक्षित करके उन्हें स्वतंत्र कराने तथा उन्हें अपने अधिकारों के प्रति जागरूक बनाने के लिए की थी। ज्योतिबा फूले का ब्राह्मणों की पुरोहिताई से गहरी घृणा थी। ये गैर-ब्राह्मणों तथा अछूतों में कोई भेद नहीं करते थे। वे बिना किसी भेदभाव के गरीबों के पक्षधर थे।

वेद समाज—केशव चन्द्र सेन की मद्रास यात्रा के दौरान तरुण युवक के0 श्रीधारालु नायडू ने इनसे प्रेरित होकर 'वेद समाज' की स्थापना की थी। इसको दक्षिण भारत का ब्रह्म समाज भी कहा जाता है।

आर्य समाज—आर्य समाज की स्थापना 1875 में स्वामी दयानन्द सरस्वती ने मुम्बई में की थी। इसके कुछ समय बाद इसका मुख्यालय लाहौर में स्थापित कर दिया गया। दयानन्द सरस्वती वेदों को भारत का आधार स्तम्भ मानते थे। उनका विश्वास था कि हिन्दू धर्म और वेद, जिन पर भारत का पुरातन समाज टिका था, शाश्वत, अपरिवर्तनीय, धर्मातीत और दैवीय है। इसलिए उन्होंने 'वेदों की ओर वापस चलो' तथा 'वेद ही समग्र ज्ञान के स्रोत हैं' का नारा दिया। उन्होंने पुराणों जैसे परवर्ती हिन्दू धर्म-ग्रन्थों की प्रामाणिकता को अस्वीकार कर दिया। उनके अनुसार ये पुराण हिन्दू धर्म में मूर्तिपूजा जैसी कुरीतियों और अन्य अन्धविश्वासों के लिए उत्तरदीय हैं। दयानन्द सरस्वती ही ऐसे प्रथम हिन्दू सुधारक थे जिन्होंने बचाव के बजाय प्रहार की नीति अपनाई। हिन्दू विश्वासों की रक्षा के लिए उन्होंने ईसाइयों तथा मुसलमान आलोचकों के विरुद्ध उन्हें उनके ही दोषों के आधार पर चुनौती दी।

पुनर्जागरण साहित्य

- तुहफात-उल-मुवाहिदीन, मंजार्तुल उदयान, ईसा के नीति वचन-शांति और, खुशहाली का मार्ग, हिन्दू उत्तराधिकार नियम के अनुसार महिलाओं के प्राचीन, अधिकारों पर आधुनिक अतिक्रमण, शब्द कौमुदी, प्रज्ञा का चाँद, मीरात-उल-अखबार —**राजा राममोहन राय**
- ब्रह्म धर्म —**देवेन्द्र नाथ टैगोर**
- गुलाम गीरी, सार्वजनिक सत्यधर्म पुस्तक —**ज्योतिबा फुले**
- सत्यार्थ प्रकाश, वेदभाष्य भूमिका, वेदभाष्य —**दयानंद सरस्वती**
- मैं समाजवादी हूँ —**विवेकानंद**
- तहजीब-अल-अखलाक —**सर सैय्यद अहमद खाँ**

रामकृष्ण मिशन—रामकृष्ण मिशन की स्थापना स्वामी विवेकानन्द ने 1887 में की थी। विवेकानन्द दक्षिणेश्वर के स्वामी रामकृष्ण परमहंस के शिष्य थे। 1893 में विवेकानन्द अमेरिका गए तथा शिकागो में आयोजित विश्व धर्म सम्मेलन में भाग लिया। अपने अमेरिका प्रवास के दौरान स्वामी विवेकानन्द ने वेदान्त सभाएं स्थापित कीं, अनेक स्थानों पर व्याख्यान देते हुए उन्होंने शिष्य बनाए। उनके अभिभाषणों का सार यह था कि पृथ्वी पर हिन्दू धर्म के समान कोई भी धर्म इतने उदात्त रूप में मानव की गरिमा का प्रतिपादन नहीं करता। चार वर्ष के विदेश प्रवास के बाद विवेकानन्द भारत लौट आए तथा कलकत्ता के पास वेलूर में और अल्मोड़ा के पास मायावती में दो प्रमुख केन्द्रों की स्थापना की। विवेकानन्द ने कहा—"मैं ऐसे धर्म या ईश्वर को नहीं मानता जो विधवाओं के आँसू न पोछ सकें या किसी अनाथ को एक टुकड़ा रोटी भी न दे सके। वेद, कुरान तथा सभी धर्म गन्थों को अब कुछ समय के लिए विश्राम करने दें। दरिद्रनारायण की धारणा, जिसे बाद में महात्मागांधी द्वारा लोकप्रियता प्राप्त हुई के जन्मदाता विवेकानन्द ही थे। विवेकानन्द ने मुसलमान को एक अच्छा मुसलमान और हिन्दू को एक अच्छा हिन्दू बनने की सलाह दी। जहां तक उनकी राष्ट्रवादी विचारधारा का प्रश्न है तो इसके चार स्तम्भ थे—जनमानस की जागृति, भौतिक एवं नैतिक शक्ति का विकास, समान आध्यात्मिक विचारों पर अवलम्बित एकता तथा भारत की प्राचीन गरिमा एवं गौरव के प्रति जागरूकता तथा स्वाभिमान।

थियोसोफिकल सोसायटी—थियोसोफिकल सोसायटी की स्थापना 1875 में न्यूयार्क में मैडम ब्लावत्स्की तथा कर्नल ऑलकॉट ने की थी। ये दोनों लोग 1879 में भारत आए तथा मद्रास के पास अडयार में सोसायटी के मुख्यालय की स्थापना की। 1888 में श्रीमती एनी बेसेन्ट इस सोसायटी की सदस्या बनीं और सोसायटी के क्रिया-कलापों को बहुत आगे बढ़ाया।

थेयोसोफी का अर्थ होता है - 'ब्रह्म विद्या'। अतः थियोसोफिस्ट्स हिन्दू धर्म के आध्यात्मिक दर्शन और उसके कर्म सिद्धांत तथा आत्मा के पुनर्जनम सिद्धांत का समर्थन करते थे। वैसे इस सोसायटी का गठन सभी प्राच्य धर्मों का तुलनात्मक अध्यापन करने के उद्देश्य से किया गया था। लेकिन इसने प्राचीन हिन्दू धर्म को विश्व का अत्यधिक गूढ़ तथा आध्यात्मिक धर्म माना। थियोसोफिकल सोसायटी की धारणाएं धर्म-दर्शन तथा तंत्र-मंत्र का अपूर्व मिश्रण थी। यह जाति, प्रजाति, सम्प्रदाय या लिंग भेद का विचार किए बिना मनुष्य के सार्वभौमिक बन्धुत्व का प्रचार करती थी। इसने भारतीयों में राष्ट्रीय गौरव की भावना का विकास किया। शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य करते हुए सोसायटी ने 1898 में वाराणसी में सेन्ट्रल हिन्दू कॉलेज की स्थाना की।

कुछ गौण सामाजिक-धार्मिक सुधारवादी आंदोलन

भारत धर्म महामण्डल—1890 के दशक में पौराणिक हिन्दू धर्म की रक्षा के लिए देश के विभिन्न भागों में अनेक संगठनों की स्थापना हुई, जिनमें दक्षिण भारत में 'धर्म महापरिषद', बंगाल में 'धर्म महामण्डली' आदि विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। इसी सिलसिले में 1887 में पं0 दीनदयालु शर्मा ने पौराणिक हिन्दू धर्म के समर्थन तथा आर्य समाज, रामकृष्ण मिशन आदि की शिक्षाओं तथा प्रचार का खण्डन करने के लिए भारत धर्म महामण्डल की स्थापना की। ध्यातव्य है कि पं. दीनदयाल शर्मा ने 15 मई 1899 को दिल्ली में हिन्दू कॉलेज की स्थापना की थी। **सनातन धर्म सभाएं** इसी धर्म महामण्डल की उपशाखाएं थीं या अंग थीं।

धर्म सभा—इस रूढ़िवादी हिन्दू संगठन की स्थापना 1830 में राधाकान्त देव ने की थी। इस सभा के सदस्यों ने समाज सुधारकों और प्रगतिशील सामाजिक नेताओं, दोनों के विचारों के विपरीत अपने समाचार पत्रों और पत्रिकाओं के माध्यम से सामाजिक-धार्मिक मामलों में यथा स्थिति बनाए रखने का समर्थन किया। इन लोगों ने सती प्रथा समाप्त किए जाने का भी विरोध किया। फिर भी ये लोग पश्चिमी शिक्षा के विस्तार के विरोधी नहीं थे।

स्वामी नारायण सम्प्रदाय—इस सम्प्रदाय की स्थापना 19वीं शताब्दी में गुजरात में स्वामी सहजानन्द ने की थी। इस सम्प्रदाय का उदय वैष्णव धर्म के कर्मकाण्डों और अंधविश्वासों के विरोध स्वरूप हुआ था। स्वामी सहजानन्द ने विश्वास और व्यवहार दोनों में पवित्रावादी जीवन पद्धति अपनाने पर बल दिया। इस सम्प्रदाय के लोग एकेश्वरवाद में विश्वास करते थे। प्रत्येक जाति और धर्म, यहां तक कि पारसियों एवं मुसलमानों के लिए भी इस सम्प्रदाय के द्वार खुले हुए थे। सम्प्रदाय ने विधवा पुनर्विवाह पर प्रतिबन्धों, सतीप्रथा और जन्म लेते ही बालिकाओं की हत्या कर देने का कड़ा विरोध किया।

हिन्दू सामाजिक-धार्मिक आंदोलन				
संगठन का नाम	**स्थान**	**संस्थापक**	**वर्ष**	**उपलब्धि**
आत्मीय सभा	कलकत्ता	राजा राममोहन राय	1815	हिन्दू धर्म की बुराइयों पर प्रहार करना और एकेश्वरवाद का प्रचार
ब्रह्म समाज	कलकत्ता	राजा राममोहन राय	1828	इसने भी हिन्दू धर्म की बुराइयों पर प्रहार किया और एकेश्वरवाद का प्रचार
धर्म सभा	कलकत्ता	राधाकान्त देव	1829	इसने ब्रह्म समाज के विरुद्ध हिन्दू कट्टरवाद का समर्थन किया
तत्वबोधिनी	कलकत्ता	देवेन्द्रनाथ टैगोर	1839	इसने राममोहन राय के विचारों को फैलाया
परमहंस मण्डली	बम्बई		1849	जाति बंधनों को दूर करने का प्रयास किया
राधास्वामी सत्संग	आगरा	तुलसी राम	1861	एकेश्वरवाद फैलाना
भारत का ब्रह्म समाज	कलकत्ता	केशवचन्द्र सेन	1866	इसने समाज सुधार की दिशा में क्रांतिकारी कार्य किये
प्रार्थना समाज	बम्बई	डॉ. आत्माराम पांडुरंग	1867	इसका उद्देश्य हिन्दू धार्मिक विचारधारा और प्रथाओं में सुधार करना था
आर्य समाज	बम्बई	स्वामी दयानंद सरस्वती	1875	इसने हिंदू धर्म में सुधार किया और हिन्दुओं के धर्म परिवर्तन को रोका
थियोसोफिकल सोसाइटी	न्यूयार्क	मदाम ब्लावत्सकी और कर्नल ओल्काट	1875	इसने प्राचीन धर्म, दर्शन एवं मानवता का प्रचार किया
साधारण ब्रह्म समाज	कलकत्ता	आनंदमोहन बोस और शिवनाथ शास्त्री	1878	समाज सुधार
दक्खन एजुकेशन सोसाइटी	पूना	जी. जी. आगरकर	1884	इसका उद्देश्य शिक्षा व्यवस्था में सुधार और छात्रों में देशप्रेम का भाव पैदा करना
इंडियन नेशनल सोशल कान्फ्रेंस	बम्बई	एम. जी. रानाडे	1887	स्त्री दशा सुधारने की दिशा में प्रयास
देव समाज	लाहौर	शिवनारायण अग्निहोत्री	1887	इसके अनुयायी गुरु की पूजा करते थे
रामकृष्ण मिशन	बेलूर	स्वामी विवेकानन्द	1897	अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मानवता भाव पैदा करना
सर्वेंट ऑफ इंडिया	बम्बई	गोपलकृष्ण गोखले	1905	मातृभूमि की सेवा के लिए भारतवासियों को तैयार करना
पूना सेवा-सदन	पूना	रामाबाई रानाडे और जी. के. देवधर	1909	महिलाओं का कल्याण करने का प्रयास किया
सोशल सर्विस लीग	बम्बई	एन. एम. जोशी	1911	मानव के लिये सुविधाजनक एवं उपयोगी वातावरण तैयार करना
सेवा समिति	इलाहाबाद	एच. एन. कुंजरु	1914	इसका उद्देश्य प्राकृतिक आपदाओं के समय समाज सेवा करना और शिक्षा को प्रोत्साहित करना था
सेवा समिति बोय स्काउट एसोसिएशन	बम्बई	श्रीराम बाजपेयी	1914	इसका उद्देश्य भारत में बॉय स्काउट आंदोलन में पूरी भारतीयता उत्पन्न करना था।
वूमेंस इंडियन एसोसिएशन	मद्रास		1923	इसके प्रयासों से 1926 में 'All India Women's Conference' शुरू हुई
रहनुमाई माज्दयासन सभा	बम्बई	दादाभाई नौरोजी एस.एस. बंगाली और अन्य		पारसी महिलाओं की दशा सुधारने की दिशा में महत्वपूर्ण कार्य किया

डी. ए. वी. शिक्षा आंदोलन—लगभग सभी सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलन उनके संस्थापकों की मृत्यु के उपरांत क्रियाशील नहीं रह गए, लेकिन आर्य समाज इस सम्बन्ध में एक अपवाद था और है। आर्य समाज के संस्थापक दयानन्द सरस्वती की 30 अक्टूबर 1833 को अजमेर में मृत्यु हो जाने के बाद उनके अनुयायियों ने अपने दिवंगत संस्थापक को सम्मानित और उनके आदर्शों को चिर स्मृत बनाए रखने के लिए एक नया संकल्प लिया। आर्य समाज की लाहौर शाखा ने ईसाई प्रभाव से मुक्त आर्य समाज के आदर्शों के अनुरूप शिक्षा संस्था की स्थापना करने की सर्वप्रथम योजना बनाई। इसी के अनुरूप प्रथम दयानन्द आंग्ल-वैदिक (डी. ए. वी. कॉलेज की स्थापना 1 जून 1886 को लाहौर में की गयी। डी. ए. वी. शिक्षा आंदोलन की प्रेरक शक्ति लाला हंसराज थे और उन्होंने ही इस विद्यालय के अवैतनिक प्रधानाध्यापक के रूप में कार्य करने के लिए स्वयं को समर्पित किया। आधुनिक शिक्षा के प्रसार की दिशा में डी. ए. वी. शिक्षा आंदोलन का एक अन्य विकासोन्मुख चरण 1890 में आर्य कन्या पाठशाला की जालन्धर में स्थापना के साथ शुरू हुआ। कन्या पाठशाला की सफलता से महिलाओं के लिए भी उच्च शिक्षा विस्तार करने की प्रेरणा मिली, जिसके परिणामस्वरूप 14 जून 1894 को कन्या महाविद्यालय की स्थापना हुई। यह महाविद्यालय स्त्री शिक्षा के प्रचार-प्रसार के लिए कन्या महाविद्यालय ने 1898 में **'पांचाल पण्डिता'** नामक मासिक पत्रिका का प्रकाशन भी प्रारंभ किया। डी. ए. वी. ट्रस्ट से सम्बद्ध विद्यालयों की व्यवस्था के लिए 1910 तक नियम-कानून बनाए गए और यह ट्रस्ट उदीयमान शिक्षा आंदोलन का शीर्षस्थ संस्था बन गया।

लेकिन कालांतर में आन्तरिक तनाव और वैचारिक मतभेद उत्पन्न हो गया और आर्य समाज की शिक्षा नीति के प्रश्न पर दो गुट हो गए। एक गुट के नेता लाला हंसराज थे। इसे उदारवादी गुट कहा जाता था। लेकिन बाद में इसे **'कॉलेज पार्टी'** नाम दे दिया गया। दूसरे गुट का नेतृत्व पण्डित लेखराम और लाला मुंशीराम (जो बाद में स्वामी श्रद्धानन्द के रूप में प्रसिद्ध हुए) कर रहे थे। इस गुट को 'उग्रवादी' गुट कहा जाता था। लेकिन बाद में यह **'गुरुकुल गुट'** के नाम से प्रसिद्ध हुआ। मार्च 1892 में लाला मुंशीराम (स्वामी श्रद्धानन्द) ने हरिद्वार में गुरुगुल कांगड़ी की स्थापना की, जहां छात्र कठोर शैक्षिक अनुशासन में कांगड़ी के परिसर में निवास करते थे और कुछ पश्चिमी विषयों के साथ-साथ संस्कृत एवं वैदिक ग्रन्थों का आर्य आदर्शों के अनुरूप अध्ययन करते थे।

शुद्धि आंदोलन—ईसाई धर्म-प्रचारकों द्वारा निम्न और अछूत हिन्दू जातियों के लोगों को ईसाई धर्म में दीक्षित या धर्म परिवर्तन कर लेने के कारण, उग्रवादी आर्य समाजियों ने **'शुद्धि'** नामक धर्म दीक्षा या धर्म परिवर्तन के अपने कर्मकाण्ड का सृजन किया क्योंकि पारंपरिक रूप से हिन्दू धर्म में धर्म-दीक्षा और पुनर्दीक्षा का कोई प्रावधान नहीं है। शुद्धि, आंदोलन का उद्देश्य उन हिन्दुओं की 'शुद्धि' करके हिन्दू धर्म में वापस लाना था जिन्होंने किन्हीं कारणों से ईसाई या इस्लाम धर्म अंगीकार कर लिया था।

जाति-पांति तोड़क मण्डल—जाति व्यवस्था के भेदभावों के विरुद्ध जाति-पांति तोड़क मण्डल की स्थापना हुई जिससे कि सर्वप्रथम शुद्धि के माध्यम से हिन्दू धर्म में पुनर्दीक्षित लोगों को आर्य समाजियों के रूप में शामिल किया जा सके।

सार्वदेशिक हिन्दू सभा—मुस्लिम लीग की गतिविधियों को चुनौती देने के लिए राजनीतिक रूप से जागरूक हिन्दुओं ने 1909 में पंजाब हिन्दू सम्मेलन की स्थापना की। 1915 में अपने वार्षिक अधिवेशन में इस सम्मेलन ने अपना नाम दिलकर सार्वदेशिक हिन्दू अधिवेशन में इस सम्मेलन में अपना नाम बदलकर सार्वदेशिक हिन्दू सभा रख लिया और 1921 में इसका नाम 'भारतीय हिन्दू महासभा' हो गया।

राधा स्वामी आंदोलन—यह आंदोलन 1861 में आगरा के एक महाजन या बैंकर तुलसी राम द्वारा शुरू किया गया। राधास्वामी सम्प्रदाय के अनुयायी सर्वोच्च ईश्वर, पवित्र लोगों की संगति और पवित्र सामाजिक जीवन-यापन में विश्वास करते हैं। इन लोगों का मानना है कि आध्यात्मिक उपलब्धियों के लिए भौतिक जीवन का परित्याग करने की आवश्यकता नहीं है।

मुस्लिम सामाजिक-धार्मिक आंदोलन

आंदोलन संस्था	स्थान	संस्थापक	वर्ष	उद्देश्य
दार-उल-उल्म	देवबन्द	मौलाना हुसैन अहमद	1866	मुसलमानों की नैतिक और आर्थिक दशा में सुधार करना और उनमें राजनीतिक चेतना का विकास करना
नदवाह-उल-उल्म	लखनऊ	मौलाना शिब्लीनुमानी	1894	मुस्लिम शिक्षा का विकास करना, मानसिकता विकसित करना और इस्लाम की 'Theotological Controversies' को दूर करना
अहल-ए-हदीस	पंजाब	मौलाना सैयद नजीर हुसैन	19वीं शताब्दी	न्याय के चारों स्कूलों को अस्वीकार किया और केवल बदीस को स्वीकार किया। इसके अतिरिक्त कुरान को उन्होंने अन्तिम प्रामाणिक पुस्तक माना
अहल-ए-कुरान	पंजाब	मौलवी अब्दुल्लाह चक्रलवी	19वीं शताब्दी	कुरान का शब्दशः अनुकरण
बरेलवी	पंजाब	मौलाना अहमद रिजा खां	19वीं शताब्दी के अंत में	देवबन्द आंदोलन तथा उसकी शिक्षाओं का जोरदार विरोध
अहमदिया आंदोलन	कादियानी	मिर्जा गुलाम अहमद	19वीं सदी के अंत में	इस्लाम में सुधार और इसकी ईसाई मिशनरियों एवं आर्य समाज से रक्षा और आधुनिकता का समर्थन
मोहम्मडन एजुकेशन कान्फ्रेंस	अलीगढ़	सर सैयद अहमद खां	1886	पश्चिमी तर्ज पर मुसलमानों को शिक्षित करना

छोटे सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलन और संगठन

आंदोलन/संगठन	वर्ष	स्थान	संस्थापक	उद्देश्य
रहनुमाई मज़द्यासन् सभा	1851	बम्बई	एस. एस. बंगाली, नौरोजी फुरदोनजी, जे. बी. वाचा आदि	जुरुस्थ्र धर्म के प्राचीन महत्व को पुनः स्थापित करने तथा आधुनिक शिक्षा और नारी स्वातंत्र्य के जरिए पारसी समुदाय के सामाजिक पुनरुद्धार के लिए स्थापित किया गया, पारसियों का एक सामाजिक धार्मिक संगठन।
राधा स्वामी सत्संग	1861	आगरा	तुलसीराम, शिव दयाल साहेब के नाम से भी जाने जाते हैं।	एक ईश्वर में विश्वास, धार्मिक एकता, सामाजिक जीवन में सरलता और समाज सेवा पर जोर।
भारतीय सुधार संघ (Indian Reform Association)	1870	कलकत्ता	केशव चंद्र सेन	बाल विवाह के विरुद्ध जनमत तैयार करना और ब्रह्म विवाह को कानूनी रूप देना। भारतीय महिलाओं की बौद्धिक और सामाजिक स्तर को बढ़ाना।
दक्कन शिक्षा समाज (Deccan Education Society)	1884	पुणे	एम.जी. रानाडे बी.जी. चिपलूनकर, जी.जी. आगरकर आदि।	पश्चिमी भारत में शिक्षा और संस्कृति के प्रयोजनार्थ अंशदान करना। सोसायटी ने पुणे में 1885 में फर्ग्युसन कॉलेज की स्थान की।
सेवा सदन	1885	बंबई	बहरामजी एम. मालाबारी	बाल विवाह और वैधव्य जीवन जीने के लिए विवश किए जाने के विरुद्ध अभियान तथा सामाजिक रूप से शोषित महिलाओं की देखभाल।
भारतीय राष्ट्रीय सामाजिक सम्मेलन (Indian National Social Conference)	1887	बंबई	महादेव गोविंद रानाडे एवं रघुनाथ राव	समाज सुधार से संबंधित मामलों पर विशेष ध्यान देना। यह संगठन भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस सुधार सुधार मंच था।
देव समाज	1887	लाहौर	शिव नारायण अग्निहोत्री	ब्रह्म समाज की तरह धार्मिक दृष्टिकोण। अपने अनुयायियों को सामाजिक आचार संहिता और नीति शास्त्र अपनाने पर जोर दिया, जैसे- घूस न लेना, जुआ न खेलना, मादक पदार्थों का सेवन न करना, मांसाहार न करना आदि पर जोर दिया।
मद्रास हिन्दू एसोसिएशन	1892	मद्रास	वीरेशालिंगम् पान्तलु	विधवाओं की दुर्दशा समाप्त करने तथा देवदासी प्रथा रोकने के लिए एक सामाजिक शुद्धि आंदोलन।
भारत धर्म महामंडल	1902	वाराणसी	पंडित मदनमोहन मालवीय पंडित दीनदयाल शर्मा	आर्य समाज की शिक्षाओं का विरोध करने के लिए परंपरानिष्ठ हिंदुओं का एक शीर्ष संगठन, जिन्हें सामान्यतया **सनातनधर्मी** के नाम से जाना जाता है।
भारत सेवक समाज	1905	बंबई	गोपाल कृष्ण गोखले	समाज सुधार के लिए कार्य करना और भारत की सेवा के लिए राष्ट्रीय मिशनरियों को प्रशिक्षित करना
पूना सेवा सदन	1909	पुणे	जी. के. देवधर और रमाबाई रानाडे (एम.जी. रानाडे की पत्नी)	महिलाओं की आर्थिक उन्नति और उपयोगी रोजगार के लिए संस्थाएँ स्थापित करना।
निष्काम, कर्ममठ	1910	पुणे	धोंडो केशव कर्वे	समाज सुधार के लिए कार्य करना, मानव जाति तथा महिलाओं की शैक्षिक प्रगति के लिए निःस्वार्थ सेवा करना। हिंदू विधवा आश्रय-गृहों तथा बालिका विद्यालय खोले। 1916 में पुणे में भारत के प्रथम महिला

जारी...

जारी...				विश्वविद्यालय की स्थापना की जिसे आगे चलकर बंबई ले जाया गया, जो अब श्रीमती नथीबाई दामोदर ठाकरसी (SNDT) भारतीय महिला विश्व विद्यालय, बंबई के नाम से जाना जाता है।
भारत स्त्री मंडल	1910	कलकत्ता	सरलाबाला देवी चौधरानी	स्त्री शिक्षा तथा स्त्री स्वातंत्र्य के कार्य को आगे बढ़ाने के लिए अखिल भारतीय स्तर पर प्रथम महिला संगठन।
समजा सेवा संघ (Social Service League)	1911	बंबई	नारायण मल्हार जोशी	समाज सेवा का कार्य करना और विद्यालय, पुस्तकालय औषधालय आदि खोलकर सामान्य लोगों की स्थितियों में सुधार।
सेवा समिति	1914	इलाहाबाद	पंडित हृदयनाथ कुंजरू	समाज सेवा का कार्य आयोजित करना, शिक्षा को बढ़ावा देना तथा समाज के असामाजिक तत्वों तथा अन्य पिछड़े तबकों के लिए सुधार कार्य।
भारत महिला संघ (The Indian Women's Association)	1917	मद्रास	श्रीमती एनी बेसेंट	भारतीय महिलाओं की उन्नति तथा 'उनके लिए पर्याप्त स्वतंत्र और पूर्ण जीवन' के लिए कार्य करना, 1926 से आगे इसने वार्षिक सम्मेलन आयोजित करना शुरू कर दिया जिसे 'अखिल भारतीय महिला सम्मेलन' के नाम से जाना जाता है।

मुस्लिम धार्मिक सुधार आंदोलन और संगठन

आंदोलन/संगठन	वर्ष	स्थान	संस्थापक	उद्देश्य
फरैज़ी या फरैदी आंदोलन	1804	फरीदपुर बंगाल	हाजी शरीयतुल्ला और दादू मियाँ	दृढ़तापूर्वक एकेश्वरवाद पर जोर देना और गैर इस्लामी सामाजिक परंपराओं, धार्मिक कर्मकाण्डों और प्रथाओं से मुस्लिम समाज को छुटकारा दिलाना। जमींदारी विरोधी व ब्रिटिश विरोधी आंदोलन।
तायूनी आंदोलन	1839	ढाका	करामत अली जौनपुरी	फरैज़ी आंदोलन का विरोध किया और ब्रिटिश राज का समर्थन किया।
दार-उल-उलूम (देवबंद, सहारनपुर, उ. प्र. में इस्लामी धर्मदर्शन का एक स्कूल)	1867	देवबंद	मुहम्मद कासिम ननौतवी और रशीद अहमद गंगोही	भारतीय मुसलमानों की आध्यात्मिक और नैतिक स्थितियों स्थितियों में सुधार लाना। इस आंदोलन ने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का समर्थन किया और ब्रिटिश अलीगढ़ आंदोलन के समर्थकों का विरोध किया।
अलीगढ़ आंदोलन	1875	अलीगढ़	सर सैयद अहमद खां	भारतीय इस्लाम का उदारीकरण और धार्मिक पुनर्व्याख्या समाज सुधार तथा आधुनिक शिक्षा के जरिए भारतीय मुसलमानों को आधुनिकीकरण।
अहमदिया आंदोलन	1889-90	फरीदकोट	कादियान के मिर्जा गुलाम अहमद	सार्वभौमिक मानवतावादी धर्म में विश्वास किया। इस्लामी कट्टरता और भारतीय मुसलमानों में पश्चिमी उदारवादी शिक्षा का विरोध किया।
नदवातल उलेमा	1894-95	लखनऊ	मौलाना शिबली नूमानी	परंपरागत इस्लामी शिक्षा प्रणाली में सुधार लाना, हिन्दू मुस्लिम एकता पर जोर देना और भारतीय मुसलमानों में राष्ट्रवाद की भावना जगाना

जारी...

जारी...

निम्न जाति/जाति आंदोलन और संगठन

आंदोलन/संगठन	वर्ष	स्थान	संस्थापक	उद्देश्य
सत्य शोधक समाज	1873	महाराष्ट्र	ज्योतिबा फूले	छुआछूत, पुरोहिती या ब्राह्मण वर्चस्वता का विरोध, सामाजिक एकता में विश्वास और निम्न जातियों को शिक्षित करके उनका उत्थान।
अरव्विपुरम आंदोलन	1888	अरव्विपुरम, केरल	श्री नारायण गुरु (1856-1928)	निम्न जातियों के प्रति धार्मिक अयोग्यता की धारणा का विरोध, सामाजिक एकता में विश्वास, ब्राह्मण वर्चस्वता पर प्रहार और निम्न जातियों को शिक्षित करके उनके उत्थान के लिए कार्य। मंदिरों में निम्न जातियों के लोगों के मुफ्त प्रवेश की मांग।
श्री नारायण धर्म परिपालन योगम् या आंदोलन 'S.N.D.P.'	1902-03	केरल	श्री नारायण गुरु डॉ. पाल्पू और कुमारन आसन	उपर्युक्त के अनुसार। 1920 में टी. के. माधवन ने मंदिर प्रवेश आंदोलन चलाया।
दलित वर्ग मिशन समाज (The Depressed Class Mission Society)	1906	बंबई	वी. आर. शिंदे	निम्न जातियों को शैक्षिक सुविधाएँ प्रदान करने के लिए प्रार्थना समाज द्वारा एक स्वतंत्र संस्था के रूप में आंदोलन चलाना।
बहुजन समाज	1910	सतारा, महाराष्ट्र	मुकुन्दराव पाटिल	उच्च जाति के ब्राह्मणों, जमींदारों, व्यापारियों और साहूकारों द्वारा निम्न जातियों के शोषण का विरोध।
जस्टिस (पार्टी) आंदोलन	1915-16	मद्रास, तमिलनाडु	सी.एन. मुदालियर टी.एम.नायर और पी. त्यागराज चेट्टी	मध्यवर्गीय (Intermediate) जातियों का आंदोलन शिक्षा नौकरी और राजनीति में ब्राह्मणों के वर्चस्व का विरोध।
दलित वर्ग कल्याण संस्थान (बहिष्कृत हितकारी सभा)	1924	बंबई	डॉ. बी.आर. अम्बेदकर	जातिवादी हिंदुओं और अस्पृश्यों में सामाजिक समानता के धार्मिक सिद्धांत का प्रचार करना। दलित वर्गों के लिए संवैधानिक सुरक्षा की माँग।
आत्म-सम्मान आंदोलन (Self Respect Movement)	1925	मद्रास,	ई.वी. रामास्वामी	ब्रह्मणवाद और हिन्दू धार्मिक कट्टरता विरोधी सुधार आंदोलन। इसने पुरोहितों के बिना विवाह करने, मंदिरों में बलात प्रवेश, हिन्दू समाज के पारम्परिक नियमों की पूर्ण अवहेलना या विरोध तथा बाद में अनीश्वरवाद जैसे अतिवादी विचारों का प्रचार किया।
हरिजन सेवक संघ	1932	पुणे	महात्मा गांधी	अछूतों (अस्पृश्यों) और दूसरी निम्न जातियों के प्रति छुआछूत (अस्पृश्यता) तथा सभी प्रकार के सामाजिक भेदभाव को मिटाने के लिए स्थापित अखिल भारतीय संगठन। अछूतों (अस्पृश्यों) के लिए चिकित्सा शैक्षिक और तकनीकी सुविधाएँ प्रदान करने जैसे सामाजिक कार्य करना।

मद्रास हिन्दू संगठन—तत्कालीन मद्रास प्रान्त में 1892 में वीरेसालिंगम् पॉतलु ने **मदांस हिन्दू सामाजिक सुधार समिति** और 1904 में श्रीमती एनीबेसंट ने **मद्रास हिन्दू समिति** की स्थापना की। पॉतलु की हिन्दु समिति एक सामाजिक शु'तावादी आंदोलन था। जिसने सामाजिक अन्धविश्वासों और देवदासी प्रथा का विरोध किया। श्रीमती एनी बेसेंट के संगठन का उद्देश्य राष्ट्रीय आधार पर हिन्दू सभ्यता के आदर्शों के अनुरूप हिन्दुओं का धार्मिक और सामाजिक विकास करना था।

सतनामी सम्प्रदाय—सतनामी सम्प्रदाय की स्थापना म0 प्र0 के बिलासपुर जिले के निवासी घासीदास ने की थी। ये जाति से चर्मकार थे। इन्होंने जाति व्यवस्था का

विरोध किया और यह शिक्षा दी कि समस्त व्यक्ति एक समान है। उन्होंने **सतनाम** या एक सच्चे ईश्वर की विचारधारा प्रतिपादित की और अपने अनुयायियों को मूर्तिपूजा का परित्याग करने के लिए कहा।

सत्य महिमा धर्म—1860 के दशक में महिमा गोसाईं ने जिनका मूल नाम मुकुन्द दास था, **'सत्य महिमा धर्म'** की स्थापना की। इसमें गोसाईं जी का सहयोग गोविन्द बाबा और भीम भोई ने दिया। इसका मुख्यालय उड़ीसा में जोराण्डा नामक स्थान पर था। इस सम्प्रदाय द्वारा वैष्णव धर्म और भगवान जगन्नाथ की आलोचना के कारण सनातनी हिन्दुओं के साथ इनका कड़ा मतभेद उत्पन्न हो गया था।

परमहंस मण्डली—इस सम्प्रदाय की स्थापना महाराष्ट्र में 1849 में ददोबा पाण्डुरंग और जाम्हेकर शास्त्री ने मिलकर की थी। इस सम्प्रदाय के अनुयायियों को शपथ लेनी पड़ती थी वे जाति-पाति के भेदभावों का परित्याग करेंगे और निम्न जाति के सदस्य द्वारा तैयार भोजन-पानी ग्रहण करेंगे। परमहंस मंडली के सदस्य हिन्दू धर्म में प्रचलित बहुदेववाद, जाति व्यवस्था और शास्त्रीय ज्ञान पर ब्राह्मणों के एकाधिकार का खण्डन करते थे।

सेवा सदन—सेवा सदन की स्थापना 1885 में पारसी समाज सुधारक बहराम जी एम0 मालाबारी ने आजीवन बाल विवाह और बलात् आरोपित वैधव्य के विरुद्ध जनमत तैयार करने के लिए की थी।

सेवा समिति—हृदय नाथ कुंजरू ने शिक्षा, सहयोग, स्वच्छता के प्रसार, दलित वर्गों के उत्थान, अपराधियों के सुधार, तथा पतितोद्धार के प्रोत्साहन के लिए 1914 में इलाहाबाद में सेवा समिति नामक संगठन की स्थापना की थी।

रहनुमाई मज्द्यॉसन सभा—दादा भाई नौरोजी, जे. बी. वाचा, एच. एस. बंगाली तथा नौरोजी फुरदोनजी जैसे पाश्चात्य शिक्षा प्राप्त और प्रगतिशील पारसियों ने रहनुमाई मज्द्यॉसन या धार्मिक शिक्षा सुधार संघ की स्थापना की, जिसका उद्देश्य पारसियों की सामाजिक स्थिति का पुनरुद्धार और पारसी धर्म की प्राचीन पवित्रता को पुनर्थापित करना था। इन लोगों ने अपने संदेशों का प्रचार-प्रसार करने के लिए **'रफ्ता गुफ्तार'** नामक साप्ताहिक पत्र भी निकाला था।

नायर सेवा समाज—नायर सेवा समाज की स्थापना केरल में नम्बूदरी तथा गैर मलयाली ब्राह्मणों के प्रभुत्व को चुनौती देने के लिए 1914 में मन्मथ पद्नाभ पिल्लई द्वारा की गयी थी बाद में इसके सामाजिक सुधार कार्यक्रमों में जाति शोषण को भी शामिल कर लिया गया था।

नामधारी आंदोलन—नामधारी आंदोलन की स्थापना 1857 में रामसिंह द्वारा की गयी थी। रामसिंह ने अपने अनुयायियों को श्वेत पगड़ी के साथ श्वेत वस्त्र धारण करने, मूर्तियों, वृक्षों, दरगाहों आदि की पूजा का परित्याग करने मद्यपान, चोरी, पर निन्दा, धोखेबाजी आदि से दूर रहने का निर्देश दिया। इस आंदोलन में गोमांस भक्षण का कठोर निषेध था। नामधारियों ने महिलाओं को समानता का दर्जा दिया, विधवाओं को पुनर्विवाह की अनुमति दी, दहेज के पूर्ण परित्याग और बाल-विवाह का निषेध किया।

निरंकारी आंदोलन—निरंकारी आंदोलन की स्थापना बाबा दयाल दास ने की थी। इनका उद्देश्य निराकार ईश्वर की पूजा करना था। निरंकारी सम्प्रदाय में सभी जाति एवं धर्म के लोग शामिल हो सकते थे।

सिंह सभा—सिंह सभा की स्थापना 1 अक्टूबर 1873 को ठाकुर सिंह सन्धावालिया और ज्ञानी ज्ञान सिंह ने की थी। इस सभा के मुख्य उद्देश्य थे—सिख धर्म को उसके मौलिक विशुद्ध रूप में पुनर्स्थापित करना, ऐतिहासिक, धार्मिक पुस्तकों और पत्रिकाओं को प्रकाशित करना, पंजाबी भाषा के माध्यम से ज्ञान का विस्तार, धर्म भ्रष्ट सिखों को धर्म के रास्ते पर वापस लाना तथा सिखों के शैक्षिक कार्यक्रम से अंग्रेजों को सम्बद्ध करना।

अलीगढ़ आंदोलन—अलीगढ़ आंदोलन की स्थापना सर सैय्यद अहमद खाँ ने की थी। इन्होंने स्पष्ट दृष्टि तथा असाधारण दृढ़ संकल्प के साथ रूढ़िवादी उलेमाओं के खुला विरोध और अपने कुछ घनिष्ठ मित्रों तथा साथियों के उपाहास की अवहेलना करते हुए इस आंदोलन को आगे बढ़ाया। 1857 के विद्रोह के समय सर सैय्यद अहमद खाँ कम्पनी की न्यायिक सेवा में थे और सरकार के प्रति निष्ठावान भी रहें। सेवा निवृत्ति के बाद वह सामाजिक-धार्मिक सुधार के कार्यों में लग गए। 1870 में प्रारंभ किए गए **'तहजीब-अल-अखलाक'** में प्रकाशित उनके लेखों से उनके विचारों के स्पष्ट बौद्धिक एवं प्रगतिशील स्वरूप का परिचय मिलता है। उन्होंने भारतीय इस्लाम को उदार बनाया तथा संकीर्णमना मुल्लाओं के इस मत को स्वीकार नहीं किया कि हिन्दू काफिर होते हैं, बल्कि उन्होंने हिन्दू मुसलमानों की एकता पर बल दिया। उन्होंने अलीगढ़ को अपनी गतिविधियों का केंद्र बनाया जिसके कारण सर सैय्यद की गतिविधियाँ अलीगढ़ आंदोलन के रूप में विख्यात हुईं इन्होंने 24 मई 1875 को अलीगढ़ स्कूल की स्थापना की जो 1877 में मुहम्मडन-एंग्लों ओरियन्टल कॉलेज हो गया तथा आगे चलकर अलीगढ़ विश्वविद्यालय बन गया।

देवबंद आंदोलन—मुहम्मद बिन कासिम ननौतवी तथा रशीद अहमद गंगोही ने 1867 में देवबन्द में इस्लामी स्कूल की स्थापना की। यह मुस्लिम धर्म ज्ञान का स्कूल होते हुए भी गरीबों का स्कूल था तथा इसके अध्यापक और छात्र सादा जीवन व्यतीत करते थे। इस स्कूल से सम्बद्ध लोगों का सीधा सम्बंध केवल शिक्षा और चरित्र निर्माण से सम्बन्धित था। देवबंद स्कूल के समर्थकों में शिबली नूमानी भी थे जो फारसी और अरबी के पारंगत विद्वान तथा उर्दू के प्रख्यात लेखक थे। शिक्षा सम्बंधी अपने विचारों को यथार्थ रूप देने के लिए इन्होंने 1894 में लखनऊ में **'नदवतल-उलमा'** तथा **'दारुल उलूम'** की स्थापना की।

◆◆◆

विश्व का इतिहास

मानव का विकास

- सर्वप्रथम मानव का प्रादुर्भाव अफ्रीका की रिफ्ट घाटी (ओल्डुवई गोर्ज) में हुआ।
- आस्ट्रेलोपिथिकस के प्राप्त जीवाश्म 56 लाख वर्ष पूर्व के हैं।
- होमो इरेक्टस (Homo Erectus) मानव का प्रारंभ 18 लाख वर्ष पूर्व माना जाता है।
- स्वरतंत्र का विकास 2 लाख वर्ष पूर्व हुआ।
- दफनाने की प्रथा का प्रथम साक्ष्य 3 लाख वर्ष पूर्व का है।
- शिकार का प्रारंभ 5 लाख वर्ष पूर्व हुआ।
- अग्नि के प्रयोग के साक्ष्य 4 लाख वर्ष पूर्व।
- प्रज्ञा मानव (Homo Sapians) के प्राचीनतम् जीवाश्म इथियोपिया में मिले हैं जो 1 लाख 95 हजार वर्ष पूर्व के हैं।

मेसोपोटामिया की सभ्यता
(Mesopotamian Civilization)

- मेसोपोटामिया का शाब्दिक अर्थ यूनानी भाषा में "जल के मध्य का क्षेत्र" होता है। मेसोपोटामिया शब्द मेसोस-मध्य और पोटैमोस नदी से बना है। यह वर्तमान इराक के दजला व फरात नदी के बीच का क्षेत्र है।
- वस्तुतः इस क्षेत्र में तीन सभ्यताओं (सुमेरियन की सभ्यता, बेबीलोनिया की सभ्यता तथा असीरियन की सभ्यता) का विकास हुआ था।
- यह एक कांस्य युगीन सभ्यता है।
- सुमेरिया में नगरीय जीवन का विकास सर्वप्रथम 5000 ई. पू. में हुआ।
- प्रदेश की प्रथम ज्ञात भाषा सुमेरियन है। बाद में अककदी व अरमाइक भाषा का विकास हुआ।
- अरमाइक भाषा का प्रयोग अशोक के शिलालेखों में किया गया है।
- बाइबल के ओल्ड टेस्टामेंट में शिमार (सुमार) का उल्लेख है।
- सुमेरिया में सर्वप्रथम लेखन कला का विकास 3200 ई. पू. हुआ। इसकी लिपि कीलाकार अक्षरों के रूप में है।
- मेसोपोटामिया से मंदिर के अवशेष मिले हैं जो सभ्यता के केंद्र होते थे। इन्हें जिगुरत कहते थे।
- काल गणना व गणित की परंपरा का प्रारंभ यहां हुआ।
- गिल्गेमिश यहां का पौराणिक राजा था, जिसका वर्णन गिलोमिश महाकाव्य में मिलता है।
- बेबीलोनिया का प्रसिद्ध शासक हम्मूरावी था जिसने सर्वप्रथम विधि संहिता बनवायी।
- हम्मूराबी कानून संहिता का आधार था- आँख के बदले आँख।
- मेसोपोटामिया में शीशे का प्रथम प्रयोग हुआ।
- मेसोपोटामिया में बेलनाकार मुहरें पायी गयी हैं।

यूनान की सभ्यता
(Greek Civilization)

- यूनान की सभ्यता यूरोपीय सभ्यता के विकास में अत्यंत उपयोगी सिद्ध हुई। इसे यूरोपीय सभ्यता का उद्गम स्थल माना गया।
- अमेरिका में जन्मे हेनरिच श्लीमेन (जर्मनी मूल का) तथा इंग्लैण्ड निवासी सर आर्थर इवान्स ने यूनानी सभ्यता के प्राचीनतम खोज हेतु यहां उत्खनन कार्य आरंभ किया।
- 1875 में श्लीमेन ने ट्राय, माइसेन तथा तिरन्स नामक नगरों के प्राचीन स्थलों पर खुदाई कराई तथा उनके अवशेष प्राप्त किए।
- उत्खनन कार्यों के परिणामस्वरूप यूनानी सभ्यता का काल 3600 ई. पू. का माना जाता है।
- यूनानियों को हेलेनीज कहा जाता है।
- यूनान के प्राचीन नगर एथेंस व स्पार्टा थे। सिकन्दरिया एक प्रमुख व्यापारिक केन्द्र था।
- एथेंस में जनतंत्र (400-500 ई. पू.) व स्पार्टा में अधिनायक तंत्र था।
- यूनान के मेसीडोन का राजा सिकन्दर था। इसने इरान की राजकुमारी रेक्सोना से विवाह किया।
- पेरिक्लीज का शासन यूनान का स्वर्ण युग कहलाता है।
- यूनानी सभ्यता के प्रसिद्ध व्यक्ति—हेरोडोटस - इतिहासकार; हिप्पोक्रेट्स - चिकित्सक, प्लेटो - सुकरात का शिष्य; सुकरात - दार्शनिक, अरस्तू - प्लेटो का शिष्य; पाइथागोरस - गणितज्ञ, युक्लिड - ज्यामिति का जनक, होमर - इलियड व ओडिसी के लेखक।

- ड्रेको ने कठोर कानून बनाये। इसी कारण कठोर कानून को ड्रेकोनियम कानून कहा जाता है।
- यूनानी बहुदेववादी व प्रकृति पूजक थे। एथिना—युद्ध व विद्या की देवी, अपोलो- भविष्यवाणी व रोशनी तथा संगीत के देवता, डेमोटर-पृथ्वी की देवी।
- अरस्तू को अर्थशास्त्र व विज्ञान का जनक माना जाता है।
- एथेंस के "ओलम्पिया" में प्रत्येक चार वर्ष पर खेलों का उत्सव होता था जो आधुनिक ओलम्पिक खेल का आधार बना। प्रथम खेल-776 ई.पू. प्रथम ओलम्पिक - 1896 ई.।
- सुकरात को युवकों को पथभ्रष्ट करने के आरोप में विष द्वारा मारा गया।
- सिक्कों का प्रथम प्रयोग यूनान (510 BC)।

रोमन सभ्यता
(Roman Civilization)

- ट्रेवर ने रोमन सभ्यता के बारे में लिखा है कि—"रोम ही पाश्चात्य सभ्यताओं की जननी है।" रोमन सभ्यता का जन्म व विकास इटली में हुआ था।
- इसे वाइजेन्टाइन साम्राज्य भी कहा गया।
- रोम की मुख्य भाषा - लातिनी थी।
- रोम वर्तमान इटली का एक मुख्य शहर था।
- प्राचीन रोमन यहूदी धर्मावलंबी थे।
- रोमन साम्राज्य तीन महाद्वीपों उत्तरी अमेरिका, यूरोप व पश्चिमी एशिया में फैला था। इसकी उत्तरी सीमा राइन व डेन्यूब नदी थी जबकि फरात नदी इसे इरान से अलग करती थी।
- रोम का इतिहास वर्ष वृत्तान्त (Annals) में लिखा गया है।
- नीरो रोम का एक क्रूर सम्राट था।
- चौथी सदी में रोम सम्राट कान्स्टैन्टाइन ने ईसाई धर्म को राज धर्म बनाया। उसने कुस्तुनतुनिया नगर की स्थापना की जो पूर्वी रोम साम्राज्य की राजधानी बनी।
- कांस्टैन्टाइन ने सोने पर आधारित मौद्रिक प्रणाली का प्रचलन किया। सालिड्स 4.5gm सोने का सिक्का व दिनारियस 4.5 ग्राम चांदी का सिक्का था।
- जूलियस सीजर के अधीन रोम साम्राज्य ब्रिटेन व जर्मनी तक फैला था।
- प्लिनी के प्राकृतिक इतिहास में भारत व रोम व्यापार का वर्णन है।
- रोम एक गणतंत्र था जिसमें वास्तविक सत्ता सैनेट (धनी परिवारों के एक समूह) के हाथ में थी। रोमन साम्राज्य के तीन स्तंभ सम्राट, सैनेट व सेना थे।
- जुलियस सीजर के दत्तक पुत्र आगस्टस ने सैनेट से सत्ता हथिया ली। इसने प्रिंसिपेट की स्थापना की और प्रथम रोमन सम्राट बना। आगस्टस सीजर का काल रोम का स्वर्ण युग कहलाता है।
- रोम में सैनिकों को वेतन दिया जाता था और सैनिक सेवा अनिवार्य थी।
- सार्वजनिक स्नानगृह व रंगशाला रोम के शहरी जीवन की विशेषता थी।
- 73 ई. पू. में कोलस्सम (रंगशाला) का निर्माण हुआ जिसमें एक साथ 60 हजार लोग बैठ सकते थे। यह दुनिया के सात आश्चर्यों में एक है।
- रोमन सम्राट जस्टिनियन कानून का संग्रहकर्ता था। इसने कुस्तुनतुनिया के गिरजाघर संत सोफिया का निर्माण करवाया।
- पानडुगार्ड (फ्रांस) में रोम के इंजिनियरों ने पानी लाने के लिए विशाल जल सेतुओं का निर्माण करवाया।
- थियोडोसियस ने थियोडोसियस कोड का संकलन किया।

मिस्र की सभ्यता
(Egyptian Civilization)

- इस सभ्यता को नील नदी की देन माना जाता है।
- मिस्र में सिकन्दरिया (Alexandria) की स्थापना (322 ई. पू.) हुई जो ज्ञान का प्रमुख केंद्र बना।
- मकदूनिया के सिकन्दर ने मिस्र व पश्चिम एशिया के मार्गों को जीता (336-323 ई. पू.)।
- क्लियोपेट्रा मिस्र की रानी थी।
- टालेमी ने भूगोल पर पुस्तक लिखी (150-200 ई.)।
- मिस्रवासी पैपाइरस के पत्ते पर लिखते थे जिससे पेपर शब्द बना।
- मिस्र की विशेषता पिरामिड है जो राजाओं की कब्रे हैं। गीजा पिरामिड विश्व का सबसे बड़ा पिरामिड है जिसका निर्माण खुफू ने कराया।
- मिश्र के साम्राज्य को 40 नोम (प्रांतों) में बांटा गया था। जिसके शासक नोमार्क कहलाते थे।
- स्फिंक्स - मानव सिर व सिंह के शरीर वाली एक विशाल मूर्ति है।

- मिस्र वासियों ने सौर कैलेण्डर का प्रयोग किया।
- शवादान की विशेष पद्धति में मिस्रवासी मृतक को मसालों में लपेटकर सुरक्षित रख दिया करते थे जिसे ममी कहा जाता है।
- अखनातून ने मिस्र में एकेश्वर वाद का प्रचार किया।

चीन की सभ्यता
(Chinese Civilization)

- चीनी सभ्यता का विकास ह्वांगहो (पीली नदी) व सिकियांग नदी के किनारे हुआ।
- हान चीन का प्रमुख जनजातीय समूह है।
- चीन में अभिजात वर्ग में प्रवेश हेतु परीक्षा होती थी। अतः चीन को प्रतियोगी परीक्षा का जन्मदाता माना जाता है।
- कन्फ्यूसियस (551-479 ई. पू.) चीन का महान दार्शनिक था।
- लाओत्से चीन का रहस्यवादी दार्शनिक था जिसने '''प्रकृति की ओर लौटो'' का संदेश दिया।
- चीन की भाषा - पुतोंगहुआ व लिपि चित्रात्मक है। यहां के शिक्षित वर्ग को मंडेरिन कहा जाता है।
- चीन के हान साम्राज्य का रेशम मार्ग पर आधिपत्य था (100-50 ई. पू.) इसी समय चीन में बौद्ध धर्म का प्रवेश हुआ।
- चीन के कुछ आविष्कार - चाय, रेशम, कुतुबनुमा (दिशासूचक यंत्र), कागज, गोला बारूद, छापाखाना, सौर चांद पंचाग, ताश, पतंग, वर्णमाला, फलक, घुड़सवारी में रकाब का प्रयोग, कागजी मुद्रा (10वीं सदी)।
- 6ठी सदी में अनाज के आवागमन के लिए ग्रैंड कैनाल का निर्माण।
- मार्कोपोलो (इटली) चीन की यात्रा करने वाला प्रथम यूरोपीय था (1274-90 ई.)।
- मंगोलो के आक्रमण से बचने के लिए हुआंग टी ने चीन की विशाल दीवार का निर्माण आरंभ करवाया (400 ई. पू.)। यह दुनिया के सात आश्चर्यों में से एक है।
- डॉ. सनयात सेन को आधुनिक चीन का पिता माना जाता है। उन्होंने मांचू साम्राज्य को समाप्त कर गणतंत्र की स्थापना की। 1912 ई. में कुओमीनतांग (नेशनल पीपुल्स पार्टी) की स्थापना।
- 1949 ई. में चीन में जनवादी गणतंत्र की स्थापना हुई तथा पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चायना की सरकार बनी।

इस्लामिक सभ्यता
(Islamic Civilization)

- पैगम्बर मोहम्मद का जन्म 570 ई. में कुरैश कबीले में हुई।
- 622 ई. में पैगम्बर मुहम्मद के मक्का से मदीना पलायन करने से हिजरी सन् का आरंभ हुआ। यह चंद्र वर्ष पर आधारित है तथा सौर्य वर्ष से 11 दिन कम है। अतः कोई पर्व मौसम के अनुरूप नहीं होता है।
- 612 ई. में मुहम्मद ने स्वयं को खुदा का संदेश वाहक (रसूल) घोषित किया।
- तवारीख - कालक्रम के आधार पर घटनाओं का विवरण,
- सिरा - पैगम्बर का जीवनचरित।
- हदीथ - पैगम्बर के कथनों व कृत्यों का अभिलेख।
- तफसीर - कुरान की टीकाएं।
- पैगम्बर मुहम्मद के देहांत के बाद (632 ई.) अबूबकर प्रथम खलीफा बने।
- पैगम्बर मुहम्मद के चाचा अब्बास के वंशजों ने बगदाद को राजधानी बनाया व अब्बासी खलीफा कहलाये।
- 638 ई. में अरबों ने जेरूसलम को जीता।
- बसरा के महिला संत राबिया ने नौवीं सदी में ईश्क के जरिये खुदा में लीन (फना) होने का उपदेश दिया। इस तरह सूफीवाद का जन्म हुआ।

मध्यकालीन यूरोप
(Medieval Europe)

- मध्यकालीन यूरोपीय सभ्यता एक सामंतवादी व्यवस्था थी। इसमें राजा, ईसाई पादरी, मेनर के लार्ड (भूमि के मालिक) व कृषि दास शामिल थे।
- सामंतवाद (Fuedelism) जर्मन शब्द फ्यूड से बना है जिसका अर्थ है भूमि का टुकड़ा।
- नाइट अश्वारोही सैनिक को कहते थे।
- इंग्लैण्ड - एंजिल लैड का रूपान्तरण है।
- हीथ - चर्च द्वारा कृषकों से लिया गया कर था जो उपज का 1/10 था।
- इटली में सेंट वेनेडिक्ट का मठ 529 ई. में स्थापित हुआ।
- इंग्लैंड - स्कॉटलैंड को फ्रांस के नारमंडी के राजकुमार विलियम ने जीता।
- 1381 ई. में इंग्लैंड में किसानों का विद्रोह हुआ।

- पुर्तगालियों द्वारा सर्वप्रथम दास व्यापार का आरंभ किया गया। 1315-17 ई. के बीच यूरोप में भयंकर अकाल पड़ा।
- जनतंत्र का प्रथम विकास इंग्लैंड में हुआ। 1215 ई. का मैग्नाकार्टा सर्वसाधारण के अधिकार का घोषणा पत्र था।
- 14वीं सदी में इंग्लैंड में हाउस ऑफ लार्ड्स (लार्ड व पादरी) तथा हाउस ऑफ कामन्स (नगर व गांवों का प्रतिनिधित्व) का विकास हुआ।
- इंग्लैंड के गृहयुद्ध में चार्ल्स प्रथम को प्राणदंड देकर गणतंत्र की स्थापना की गई। इसका नेतृत्व क्रामवेल ने किया।
- यूरोप व मिश्र में न्यूबोनिक प्लेग का प्रकोप (1347-50 ई.) हुआ जिसे ब्लैक डेथ (Black death) कहा गया।
- जेम्स द्वितीय के समय रक्तहीन क्रांति हुई जिसे गौरवपूर्ण क्रांति (1688 ई.) कहा गया।
- इंग्लैंड में गुलाबों का युद्ध (War of Roses) 1455 ई. में हुआ।
- 1337-1453 ई. - इंग्लैंड व फ्रांस के बीच सौ वर्षीय युद्ध।
- 1972-1815 ई. - इंग्लैंड व फ्रांस के बीच सात वर्षीय युद्ध।

पुनर्जागरण
(Renaissance)

- फ्लोरेंस व वेनिस कला व विद्या के केंद्र थे जो पुनर्जागरण के केन्द्र बने।
- फ्लोरेंस के कवि दांते को पुनर्जागरण का अग्रदूत माना जाता है। इन्होंने 'डिवाइन कामेडी' पुस्तक लिखी।
- फ्लोरेंस के फ्रायेस्को पेट्रार्क को रोम के राजकवि की उपाधि दी गई। ये मानववाद के संस्थापक कहे जाते हैं।
- निकोले मैकियावेली को आधुनिक कूटनीति का पिता माना जाता है। इन्होंने 'द प्रिंस' नामक पुस्तक की रचना की।
- माइकल एन्जिलो ने 'दी पाइटा' नामक प्रतिमा बनायी और सेंटपीटर गिरजाघर का डिजाइन बनाया।
- लियोनार्डो द विन्सी इटली का विद्वान, चित्रकार, वास्तुविद व अन्वेषक था। इनके प्रमुख चित्र 'मोनालिसा' व 'द लॉस्ट सपर' है।
- टामस मोर (इंग्लैंड) व इरेस्मस (हालैंड) ने चर्च, पादरी व क्षमापत्रो की बिक्री का विरोध किया।
- टॉमस मोर की रचना ''यूटोपिया'' में आदर्श समाज का चित्र प्रस्तुत किया गया। इरेस्मस ने 'द प्रेज ऑफ फॉली' में पादरियों के नैतिक जीवन की आलोचना की।
- मार्टिन लूथर (जर्मनी) प्रोटेस्टैंट सुधारवाद आंदोलन का जनक था। इसने बाइबिल का जर्मन भाषा में अनुवाद किया।
- विलियम टिंडेल ने बाइबिल का अंग्रेजी में अनुवाद किया।
- जॉन विकलिफ को धर्मसुधार आंदोलन का प्रातः कालीन तारा कहा जाता है।
- पोलैण्ड निवासी कॉपरनिकस ने सौर्यमंडल का सिद्धांत (1543 ई.) प्रस्तुत किया।
- धर्म सुधार आंदोलन के फलस्वरूप इंग्लैंड ने पोप से संबंध तोड़ लिये और राजा-रानी इंग्लैंड चर्च के प्रमुख बने।
- इग्नेशियस लोयोला ने 1540 ई. में सोसाइटी ऑफ जीसस की स्थापना की। इसके अनुयायी जेसुइट कहलाये।
- 1662 ई. में वास्तविक ज्ञान के प्रसार हेतु लंदन में 'रॉयल सोसायटी' का गठन हुआ।

खोजें (Discoveries)

- पुर्तगाल, स्पेन से अलग होकर स्वतंत्र राज्य बना। अनखोजी दुनिया का स्पेन व पुर्तगाल के बीच बंटवारा हो गया।
- पुर्तगाल का राजकुमार हेनरी नाविक के नाम से मशहूर था।
- इटली का नाविक कोलंबस स्पेन के राजा की सहायता से यात्रा पर निकला। उसने अमेरिका की खोज की (1492 ई.)।
- 1498 ई. में वास्को डि गामा (पुर्तगाल) कालीकट (भारत) आया।
- डच लोगों ने न्यू एमेस्टरडम (वर्तमान न्यूयार्क) की खोज की।
- स्पेनवासी मैगलन ने जहाज पर पृथ्वी का चक्कर लगाया (1522 ई.)।
- जर्मन मूल के जोहान्स गुटनवर्ग ने छापेखाने का निर्माण किया। (1455 ई.)।
- पोप ग्रेगरी XIII ने ग्रेगरियन कैलेण्डर का प्रचलन किया (1582 ई.)।
- आइजक न्यूटन के 'प्रिसिंपिया मैथेमेटिका' का प्रकाशन (1687 ई.) किया।
- जोहानस कैपलर ने खगोलीय रहस्य की रचना की और सूर्य केन्द्रित सिद्धांत को लोकप्रिय बनाया।

- गैलिलियो ने 'द मोशन' पुस्तक में गतिशील विश्व सिद्धांत दिया।
- अमेरिकी प्रायद्वीप का नामकरण फ्लोरेंस के भूगोलवेत्ता अमेरिगो वेस्पुस्सी के नाम पर किया गया।
- दक्षिण अमेरिका को लैटिन अमेरिका भी कहते हैं क्योंकि स्पेनी व पुर्तगाली दोनों लैटिन परिवार की भाषाएं हैं।

औद्योगिक क्रांति
(Industrial Revolution)

- ब्रिटेन पहला देश था जहां औद्योगिक क्रांति हुई।
- औद्योगिक क्रांति का पहला चरण कोयला, सूती कपड़े व लौह उद्योग का था, जबकि दूसरा चरण रेलवे व परिवहन उद्योग का था।
- औद्योगिक क्रांति शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम अर्थशास्त्री आरनाल्ड टायनवी ने किया।
- 1694 ई. में बैंक ऑफ इंग्लैंड की स्थापना हुई।
- 1709 ई. में अब्राहम उर्बी प्रथम द्वारा ब्लास्ट फरनेस के आविष्कार से औद्योगिक क्रांति का आरंभ हुआ।
- औद्योगिक क्रांति से भूमिहीन किसानों व बेरोजगारों की संख्या बढ़ी तथा साम्राज्यवादी भावना का विकास हुआ। इससे पूंजीपति वर्ग का उदय हुआ।
- औद्योगिक क्रांति के दौरान हुए आविष्कार—

  1733 - फ्लाइंग शटल लूम - जॉन के

  1765 - कताई मशीन - जेम्स हरग्रीव्ज

  1787 - पावर लूम - एडमंड कार्टराइट

  1815 - सेफ्टी लैंप - हम्फी डेवी
- 1698 ई. में थॉमस सेवरी ने माइनर्स फ्रेंक नामक भाप का इंजन बनाया जो खानों से पानी निकालता था।
- 1769 ई. में जेम्सवॉट ने भाप इंजन का प्रयोग मशीनों को चलाने (प्रारंभ मूवर) में किया।
- एशिया में औद्योगिक क्रांति सर्वप्रथम जापान में और यूरोप में सबसे अंत में रूस में हुई।

अमेरिकी क्रांति
(American Revolution)

- 1607 ई. में इंग्लैंड ने उत्तर अमेरिका में प्रारंभिक कालोनी बसाई।
- अमेरिका के मूल निवासियों को रेड इंडियंस कहा जाता है।
- 4 जुलाई, 1776 ई. में ब्रिटेन के 13 उपनिवेशों ने फिलाडेल्फिया में स्वतंत्रता की घोषणा कर दी। घोषणा-पत्र का दस्तावेज जैफरसन ने तैयार किया था।
- 4 जुलाई - अमेरिका के स्वतंत्रता दिवस के रूप में मनाया जाता है।
- क्रांति में नागरिक सेना का नेतृत्व जार्ज वाशिंगटन ने किया था जो अमेरिका का प्रथम राष्ट्रपति बना।
- अंग्रेजी सेना का नेतृत्व लार्ड कार्नवालिस ने किया था।
- अमेरिका की क्रांति टॉमस पेन व जॉन लॉक के विचारों से प्रेरित थी।
- अमेरिका स्वतंत्रता संग्राम का नारा था - प्रतिनिधित्व नहीं तो कर नहीं।
- 16 दिसंबर, 1773 ई. की बोस्टन चाय पार्टी स्वतंत्रता संग्राम का तात्कालिक कारण था।
- अमेरिकी स्वतंत्रता युद्ध का अंत 1783 ई. में पेरिस की संधि से हुआ।
- 1789 ई. में विश्व का पहला लिखित संविधान बना जिसमें मनुष्य की समानता और मौलिक अधिकारों की घोषणा की गई।
- अमेरिका प्रथम धर्म निरपेक्ष प्रजातंत्रीय गणतंत्र बना।
- 1861 ई. में दासता के समर्थक व विरोधी राज्यों में गृहयुद्ध प्रारंभ हुआ।
- 1 जनवरी 1863 ई. में अब्राहम लिंकन ने दास प्रथा का अंत किया।
- 4 मार्च 1865 में अब्राहम लिंकन की हत्या कर दी गई।
- बेंजामिन फ्रैंकलिन ने अमेरिकी फिलोसिफिकल सोसाइटी की स्थापना की।

फ्रांस की क्रांति
(French Revolution)

- फ्रांस का राजा लूई-सोलह 1774 ई. में गद्दी पर बैठा।
- 14 जुलाई 1789 ई. को फ्रांस में खूनी क्रांति हुई। लूई-सोलह को फांसी दे दी गई। राजतंत्र का अंत व लोकतंत्र की स्थापना हुई।
- 14 जुलाई फ्रांस का राष्ट्रीय दिवस बन गया।
- क्रांति का आदर्श वाक्य था- स्वतंत्रता, समानता व बंधुत्व।
- 27 अगस्त 1789 ई. को नागरिकों के जन्मजात मौलिक अधिकारों की घोषणा हुई।

- 21 सितंबर 1792 ई. फ्रांस में गणतंत्र की स्थापना हुई।
- फ्रांस की क्रांति पर माण्टेस्क्यू, वॉल्टेयर व रूसो का प्रभाव था।
- माण्टेस्क्यू राजा के दैवी सिद्धांत का आलोचक और गणतंत्रीय लोकतंत्र का समर्थक था। इसकी पुस्तक है—द स्पिरिट ऑफ द लॉज।
- माण्टेस्क्यू ने शक्ति के पृथक्करण का सिद्धांत दिया।
- रूसो की प्रसिद्ध पुस्तक 'सोशल कान्ट्रेक्ट' है।
- लुई-14 ने कहा था - "मैं ही राज्य हूं और मेरे शब्द ही कानून हैं।"
- 1799 ई. में डायरेक्टरी के शासन का अंत कर नेपोलियन प्रथम काउन्सल बना।
- नेपोलियन आधुनिक फ्रांस का निर्माता व लिटिल कारपोरल के नाम से जाना जाता है।
- 1804 ई. में नेपोलियन फ्रांस का सम्राट बना।
- 1815 ई. में वाटर लू के युद्ध में नेपोलियन की पराजय हुई।
- 1821 ई. में सेंट हेलेना द्वीप में निर्वासन में उसकी मृत्यु।
- नेपोलियन ने कानून का संहिताकरण किया जिसे 'नेपोलियन कोड' कहते हैं।
- दांते व रोब्सपियरे ने फ्रांस की क्रांति को रक्तरंजित बना दिया।

इटली व जर्मनी का एकीकरण

(Unification of Italy and Germany)

- इटली के एकीकरण का श्रेय मेजिनी, काउण्ट काबूर और गैरीबाल्डी को है।
- जोसेफ मेजिनी इटली के एकीकरण का जनक है। इसने 1831 ई. में 'यंग इटली' नामक संस्था की स्थापना की।
- गैरी बाल्डी ने लाल कुर्ती नामक संगठन बनाया।
- इटली का एकीकरण काउण्ट काबूर ने 1871 ई. में किया। उसने रोम को संयुक्त इटली की राजधानी बनाया।
- काउण्ट काबूर को इटली का विस्मार्क कहा जाता है।
- जर्मनी का एकीकरण बिस्मार्क ने किया जो प्रशा का चांसलर था।
- 1871 ई. में विलियम को जर्मन संघ का सम्राट बनाया गया। राज्याभिषेक वर्साय के राजमहल में हुआ।
- इटली व जर्मनी के एकीकरण का जन्मदाता नेपोलियन को माना जाता है।

नव साम्राज्यवाद/जापानी साम्राज्य

(Neo Imperialism/Japanese Imperialism)

- नवसाम्राज्यवाद का कारण औद्योगिक क्रांति व पूंजीवाद था।
- नव साम्राज्यवाद को आर्थिक साम्राज्यवाद की संज्ञा दी जा सकती है।
- एशिया व अफ्रीका नव साम्राज्यवाद के शिकार हुए।
- जापानी साम्राज्यवाद का पहला शिकार चीन हुआ (1894 ई.)।
- चीन-जापान युद्ध कोरिया को लेकर हुआ।
- 1872 ई. में जापान में सैनिक सेवा अनिवार्य कर दिया गया।
- जापानी साम्राज्यवाद को पीला आतंक कहा गया।
- 1905 ई. में रूस जापान युद्ध चीनी इलाके में चीन पर प्रभुत्व के लिए लड़ा गया। इसमें जापान की विजय हुई।

प्रथम विश्वयुद्ध

(First World War)

- प्रथम विश्व युद्ध का कारण उग्र राष्ट्रवाद का उदय व साम्राज्यवादी प्रतिस्पर्धा है।
- इसका तात्कालिक कारण 28 जून 1914 ई. को आस्ट्रिया के राजकुमार आर्कड्यूक फर्डीनेण्ड की सेरायेवो में हत्या है।
- 28 जुलाई 1914 ई. को आस्ट्रिया व सर्बिया के बीच युद्ध का आरंभ हुआ।
- मित्र राष्ट्रों में फ्रांस, ब्रिटेन, रूस व जापान थे।
- धुरी राष्ट्रों में जर्मनी, आस्ट्रिया, हंगरी व इटली शामिल थे।
- प्रथम विश्व युद्ध के समय अमेरिका के राष्ट्रपति वुडरो विल्सन थे।
- 6 अप्रैल 1917 को मित्र राष्ट्रों के पक्ष में अमेरिका युद्ध में शामिल हुआ।
- प्रथम विश्व युद्ध का अंत 11 नवंबर 1918 ई. को जर्मनी के आत्मसमर्पण द्वारा मित्र राष्ट्रों के पक्ष में हुआ।
- 28 जून, 1919 ई. को जर्मनी के साथ वर्साय की संधि हुई।

- 10 जून, 1920 ई. को जेनेवा में राष्ट्र संघ (लीग ऑफ नेशन्स) की स्थापना हुई।
- अमेरिका राष्ट्र संघ का सदस्य नहीं बना।

रूसी क्रांति
(Russian Revolution)

- रूसी क्रांति के तात्कालिक कारण प्रथम विश्वयुद्ध में रूस की पराजय थी।
- 7 नवंबर 1917 ई. के बोल्शेविक क्रांति का नेतृत्व लेनिन ने किया था।
- क्रांति के समय रूस का जार निकोलस द्वितीय था (रोमानोव वंश)।
- क्रांति का प्रारंभ 7 मार्च 1917 ई. से हो गया था।
- 6 नवंबर 1917 ई. को लेनिन ने सत्ता ग्रहण की।
- चूंकि रूसी कैलेण्डर विश्व कैलेण्डर से 8 दिन पीछे था, अतः इस क्रांति को 'अक्टूबर क्रांति' कहा जाता है।
- ट्राटस्कि ने लाल सेना का संगठन किया था।
- रूसी क्रांति पर जर्मनी निवासी कार्ल मार्क्स के विचारों का प्रभाव था।
- कार्ल मार्क्स ने 'दास कैपिटल' व 'कम्यूनिस्ट मैनीफेस्टो' की रचना की है।
- रूसी साम्यवाद का जनक प्लेखानोव को माना जाता है।
- 16 अप्रैल 1917 ई. को लेनिन ने अप्रैल थीसिस नामक क्रांतिकारी योजना प्रकाशित की।
- चेका का संगठन लेनिन ने किया था।
- साम्यवादी शासन का पहला प्रयोग रूस में हुआ।
- काम के अधिकार को संवैधानिक अधिकार के रूप में मान्यता मिली।
- लेनिन का वास्तविक नाम ब्लादीमीर इलिय यूलियनाव था।
- आधुनिक रूस का निर्माता स्टालिन को माना जाता है।

फासिस्टवाद/नाजीवाद का उदय
(Rise of Fascism/Nazism)

- फासिस्टवाद का उदय इटली में हुआ। इसका जन्मदाता मुसोलिनी था।
- फासीवाद शब्द लैटिन भाषा के फैसेज से निकला है जिसका अर्थ है 'छड़ियों का गट्ठर'। यह एकता, अनुशासन व शक्ति का प्रतीक है। यह वाद लोकतंत्र का विरोधी है।
- मुसोलिनी ने 1919 ई. में फासिस्ट पार्टी की स्थापना की।
- उसने 'काली कुर्ती दल' का स्वयं सेवक दस्ता तैयार किया।
- जर्मनी व जापान के साथ मुसोलिनी ने 1936 ई. में रोम-बर्लिन-टोक्यो धुरी का निर्माण किया।
- मुसोलिनी को ड्यूस के नाम से पुकारा जाता था।
- नाजीवाद का उत्थान जर्मनी में हिटलर के नेतृत्व में हुआ।
- नाजीवाद तानाशाही व कट्टर राष्ट्रवाद का समर्थक है।
- हिटलर की प्रसिद्ध पुस्तक 'मेरा संघर्ष' (Mein Kamph) नाजियों की बाइबिल बन गई।
- 1933 ई. में हिटलर को जर्मनी का चांसलर नियुक्त किया गया।
- 1934 ई. में राष्ट्रपति हिण्डन बर्ग की मृत्यु के बाद हिटलर जर्मनी का एक मात्र नेता (Fuhrer - फ्यूहरर) बन गया।
- 1920 ई. में हिटलर ने नेशनल सोशलिस्ट पार्टी (नाजी दल) की स्थापना की।

द्वितीय विश्वयुद्ध
(Second World War)

- द्वितीय विश्व युद्ध का प्रारंभ 1 सितम्बर 1939 ई. को व अंत 2 सितम्बर 1945 ई. को हुआ।
- द्वितीय विश्वयुद्ध का तात्कालिक कारण जर्मनी का पोलैंड पर आक्रमण था।
- द्वितीय विश्व युद्ध के समय इंग्लैंड के प्रधानमंत्री विंस्टन चर्चिल व अमेरिका के राष्ट्रपति फ्रैंकलिन रूजवेल्ट थे।
- विनाशकारी हथियारों के उपयोग के कारण इसका नाम यंत्रों का युद्ध पड़ा।
- इस युद्ध ने विश्व की तीन चौथाई जनता को प्रभावित किया।
- 7 दिसंबर 1941 ई. को पर्ल हार्बर पर जापान के आक्रमण के कारण अमेरिका ने युद्ध में कूदने की घोषणा की।
- रूस ने जर्मनी को पराजित किया।
- 6 और 9 अगस्त 1945 ई. को अमेरिका द्वारा हिरोशिमा व नागासाकी पर परमाणु बम गिराये गये। हिरोशिमा पर फैटमैन व नागासाकी पर लिटल बॉय नामक बम गिराये गये।
- द्वितीय विश्व युद्ध में पराजित होने वाला अंतिम राष्ट्र जापान था (14 अगस्त 1945 ई.)।
- द्वितीय विश्व युद्ध के परिणामस्वरूप 24 अक्टूबर 1945 ई. को संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना हुई।

महत्वपूर्ण तिथियाँ

(Important Dates)

7000 ई. पू. —मेसोपोटामिया में कृषि का प्रारंभ

3200 ई. पू. —मेसोपोटामिया में लेखन कार्य का आरंभ

2600 ई. पू. —मिस्र में पिरामिड का निर्माण

776 ई. पू. —यूनान में प्रथम ओलंपिक खेल

600 ई. पू. —यूनान में सिक्कों का प्रयोग

510 ई. पू. —रोम गणराज्य की स्थापना

450 ई. पू. —एथेंस में प्रजातंत्र की स्थापना

332 ई. पू. —मिस्र में सिकन्दरिया की स्थापना (ज्ञान का केंद्र)

336-323 ई. पू.—मकदूनिया के सिकन्दर ने मिस्र व पश्चिम एशिया पर विजय प्राप्त की (बेबीलोन पर विजय)

200 ई. पू. —चीन के दीवार का निर्माण प्रारंभ

73 ई. पू. —रोम में कोलस्सम का निर्माण

27 ई. पू. —आगस्टस प्रथम रोमन सम्राट बना, प्रिंसिपेट की स्थापना

66-70 ई. —यहूदी विद्रोह, यरुसलम पर रोमन सेना का कब्जा

150-200 ई.—सिकंदरिया के टॉलेमी ने भूगोल पर पुस्तक लिखी

118 ई. —चीन में कागज का आविष्कार

221 ई. —चीन के हान साम्राज्य का अंत

312 ई. —कान्स्टैन्टाइन ने ईसाई धर्म स्वीकार किया

408-450 ई. —थियोडोसियस कोड का संकलन

410 ई. —विसिगोथो द्वारा रोम का विध्वंस

526 ई. —इटली में सेंट वेनाडिक्ट द्वारा मठ की स्थापना

541-70 ई. —यूरोप में ब्यूबोनिक प्लेग का प्रकोप

570 ई. —पैगम्बर मुहम्मद का जन्म

595 ई. —पैगम्बर मुहम्मद का खादिजा से शादी

612 ई. —पैगम्बर मुहम्मद ने स्वयं को खुदा का संदेशवाहक (रसूल) घोषित किया

622 ई. —मुहम्मद का मक्का से मदीना हिजरत, हिजरी सन् का आरंभ

632 ई. —पैगम्बर मुहम्मद का देहांत, खिलाफत का प्रारंभ

712 ई. —अरबों की सिंध पर विजय

868 ई. —चीन में प्रथम मुद्रित पुस्तक

950-1000 ई.—चीन में कागजी मुद्रा का आरंभ

1095-1291ई.—ईसाइयों और मुस्लिमों के बीच धर्म युद्ध

1163 ई. —कथीड्रल का निर्माण प्रारंभ

1215 ई. —इंग्लैंड में मैग्नाकार्टा पर जान द्वितीय का हस्ताक्षर

1315-17 ई. —यूरोप का महान अकाल

1337-1453 ई. —इंग्लैंड व फ्रांस के बीच सौ वर्षीय युद्ध

1347-50 ई. —यूरोप व मिस्र में ब्यूबोनिक प्लेग का प्रकोप

1349 ई. —फ्लोरेंस में विश्व विद्यालय की स्थापना

1442 ई. —पुर्तगालियों द्वारा दास व्यापार का आरंभ

1455 ई. —इंग्लैंड में गुलाबों का युद्ध

1456 ई. —जॉन गुटनवर्ग द्वारा छापेखाने का आविष्कार

1484 ई. —पुर्तगाली गणितज्ञों ने अक्षांश की गणना की

1492 ई. —कोलम्बस द्वारा अमेरिका की खोज

1494 ई. —अनखोजी दुनिया का पुर्तगाल व स्पेन के बीच बंटवारा

1495 ई. —लियोनार्डो दा विंसी ने 'द लॉस्ट सपर' चित्र बनाया

1498 ई. —वास्को डि गामा कालीकट पहुंचा

1516 ई. —टामस मूरे की यूटोपिया का प्रकाशन

1521 ई. —मार्टिन लूथर द्वारा कैथोलिक चर्च में सुधार

1534 ई. —फ्रांसीसी अन्वेषक कनाडा पहुंचे

1543 ई. —कॉपरनिकस ने सौर परिवार सिद्धांत प्रस्तुत किया।

1582 ई. —पोप ग्रेगरी तेरहवें द्वारा ग्रेगेरियन कैलेण्डर प्रारंभ

1588 ई. —स्पेनिश अर्माडा की पराजय

1600 ई. —अंग्रेजी ईस्ट इंडिया कम्पनी की स्थापना

1602 ई. —डच ईस्ट इंडिया कम्पनी की स्थापना
1629 ई. —इंग्लैंड में अधिकार याचना-पत्र स्वीकृत
1642-49 ई. —इंग्लैंड का गृहयुद्ध (प्यूरिटिन क्रांति)
1649 ई. —चार्ल्स प्रथम को फांसी, क्रामवेल इंग्लैंड का प्रोटेक्टर बना
1673 ई. —पेरिस में एकादमी ऑफ साइंसेज की स्थापना
1682-1725 ई. —पीटर महान द्वारा रूस का आधुनिकीकरण
1687 ई. —न्यूटन द्वारा प्रिंसिपिया मैथेमेटिका का प्रकाशन
1688 ई. —इंग्लैंड की रक्तहीन क्रांति
1776 ई. —अमेरिकी स्वतंत्रता की घोषणा
1780 ई. —अंग्रेजों द्वारा भारत से चीन को अफीम का निर्यात
1785 ई. —ब्रिटेन का बर्मा पर अधिकार
1787 ई. —अमेरिका का संविधान, डॉलर का प्रयोग प्रारंभ
1789 ई. —फ्रांस की क्रांति
1792 ई. —फ्रांस में गणतंत्र की स्थापना
1822 ई. —अफ्रीका में स्वतंत्र दासों के देश लाइबेरिया की स्थापना
1825 ई. —इंग्लैंड में प्रथम यात्री रेलगाड़ी
1838 ई. —अमेरिका में ट्रेल ऑफ टियर्स (आंसुओं की पगडंडी)
1839-40 ई. —प्रथम अफीम युद्ध (चीन व इंग्लैंड)
1854-56 ई. —क्रीमिया का युद्ध
1856 ई. —द्वितीय अफीम युद्ध
1861-65 ई. —अमेरिका का गृह युद्ध
1869 ई. —स्वेज नहर यातायात के लिए खोजा गया
1894 ई. —चीन-जापान युद्ध
1896 ई. —एथेंस में प्रथम ओलंपिक खेल
1899 ई. —चीन में बाक्सर विद्रोह, बोअर युद्ध
1900 ई. —इंग्लैंड में लेबर पार्टी की स्थापना
1905 ई. —जापान द्वारा रूस की पराजय, रूस की खूनी क्रांति
1912 ई. —बाल्कान युद्ध
1914-18 ई. —प्रथम विश्व युद्ध, फासिस्ट पार्टी की स्थापना
1917 ई. —रूस की क्रांति
1919 ई. —वर्साय की संधि, पेरिस की संधि
1920 ई. —सेवरीज की संधि, जेनेवा में लीग ऑफ नेशन्स (राष्ट्र संघ) की स्थापना
1923 ई. —मुस्तफा कमाल पासा द्वारा तुर्की गणराज्य का नेतृत्व, इटली पर मुसोलिनी की सत्ता
1933 ई. —हिटलर जर्मनी का चांसलर बना
1939-45 ई. —द्वितीय विश्वयुद्ध
1941 ई. —हिटलर का रूस पर आक्रमण, अमेरिका और जापान युद्ध में शामिल
1945 ई. —जर्मनी की पराजय, जापान पर अणु बम गिराया गया, संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना।

□□□